justeen | 13 से 19 साल बेमिसाल

Young Prodigy

That's The Spirit

चेन्नई की मिराया दादाभॉय घुड़सवारी (ईक्वेस्ट्रियन) खेल में नाम रोशन कर रही हैं। उनकी निगाहें ओलंपिक पदक पर हैं।

यंगिस्तान

घुड़सवारी के खेल में भारत का उभरता सितारा

महज चार साल की उम्र में घोड़े पर बैठने से शुरू हुई उनकी यात्रा आज ओलंपिक सपने तक पहुंच गई है। एक गैर-ईक्वेस्ट्रियन परिवार से आने वाली मिराया ने बचपन में घुड़सवारी को महज एक शौक के रूप में अपनाया था, लेकिन अब यह उनका जुनून और कॅरियर बन चुका है। मिराया मुख्य रूप से ड्रेसेज अनुशासन में प्रतिस्पर्धा करती हैं, जहां घोड़े और सवार के बीच पूर्ण सामंजस्य, सटीकता और शांति जरूरी होती है।

कौन हैं ये

- नाम : **मिराया दादाभॉय**
- उम्र : **16 वर्ष**
- उपलब्धि: जूनियर नेशनल ईक्वेस्ट्रियन चैंपियनशिप में टीम गोल्ड मेडल।
- एफइआइ वर्ल्ड ड्रेसेज चैलेंज में यूथ कैटेगरी में 5वां स्थान (विश्व स्तर पर)।

TRICKS of MEMORY IMPROVEMENT by डॉ.कृष्ण चहल गिनीज बुक वर्ल्ड रेकॉर्ड

सीख तभी पूरी होती है, जब ज्ञान कागज से निकल व्यवहार में आ जाए।

इंटेंशन गैप- जानने और करने का फासला

***इंटेंशन** गैप इसलिए बनता है, क्योंकि पढ़ना दिमाग को बहुत सुरक्षित और संतुष्ट महसूस कराता है। लेकिन अमल करना अनिश्चितता, मेहनत और जोखिम से भरा होता है। दिमाग को लगता है कि अभी पढ़ लिया, काफी है... एक्शन बाद में कर लेंगे।*

- **इसका** सबसे बड़ा कारण है, बड़ा लक्ष्य। जब काम बहुत बड़ा दिखता है, तो दिमाग शुरुआत से ही पीछे हट जाता है।
- **गैप** को तोड़ने का सबसे आसान और कारगर तरीका है, छोटा एक्शन। पढ़ते ही तुरंत खुद से सवाल पूछें, 'मैं अभी क्या बहुत छोटा कदम उठा सकता हूं?' सिर्फ एक सवाल हल करना, एक पैराग्राफ लिखना।
- **जब** एक्शन बहुत छोटा होता है, तो दिमाग विरोध नहीं करता। धीरे-धीरे यही छोटे-छोटे एक्शन आदत बन जाते हैं।

DO IT YOURSELF

बनाइए मजेदार पेपर कॉर्न

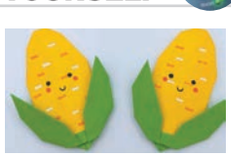

यदि आप बच्चों को ओरिगेमी के बेसिक सिद्धांत सिखाना चाहते हैं तो आप कागज से मजेदार पेपर कॉर्न तैयार कर सकते हैं। इसके लिए आपको पीले और हरे रंग के कागज तथा मार्कर की जरूरत होगी। पेपर को खास स्टाइल में मोड़कर आप यह पेपर कॉर्न तैयार कर सकते हैं। तरीका जानने के लिए इस वीडियो की मदद ले सकते हैं– bit.ly/fursat638

बनाएं हमें अपना BFF

अमरीकी रेडियो होस्ट बर्नार्ड मेल्टजर ने कहा था, 'सच्चा दोस्त वही है, जो यह सोचता है कि आप अच्छे अंडे हैं, भले ही वह जानता हो कि आप थोड़े तड़के हुए हैं।' आप भी हमारे ऐसे ही अच्छे दोस्त बन सकते हैं। अपने मन की बात हमसे साझा करने के लिए आप हमें ई-मेल लिख सकते हैं–

मेल आईडी sunday@in.patrika.com

22 फरवरी : डॉली की क्लोनिंग के खुलासे के 29 साल

रहस्य और रोमांच से भरपूर है क्लोनिंग की कहानी

***22 फरवरी,** 1997 को दुनिया ने एक ऐसी खबर सुनी, जिसमें विज्ञान की किताबों को हमेशा के लिए बदलने की ताकत थी। इस दिन स्कॉटलैंड के रोसलिन इंस्टीट्यूट में जन्मी डॉली नाम की भेड़ की जानकारी सार्वजनिक की गई थी, जो किसी वयस्क कोशिका से क्लोन की गई पहली स्तनधारी थी। आज, 29 साल बाद भी यह सवाल रहस्य से भरा है कि क्या क्लोनिंग सिर्फ वैज्ञानिक सफलता है या यह मानवता के लिए खतरा? जो भी हो, क्लोनिंग से जुड़े प्रयोग जारी हैं। भविष्य में विलुप्त जानवर जैसे मैमथ को क्लोन करने की कोशिशें चल रही हैं। दुनिया में क्लोनिंग के कुछ सफल मामलों पर डालते हैं एक नजर-*

सफल प्रयोगों से खुला उम्मीदों का पिटारा

डॉली का जन्म 5 जुलाई, 1996 को हुआ था, लेकिन इसका खुलासा सात महीने बाद किया गया, ताकि वैज्ञानिक सफलता को लेकर पूरी तरह से सुनिश्चित हो सकें। डॉली का नाम अमरीकी गायिका डॉली पार्टन के नाम पर रखा गया था। यह क्लोनिंग की शुरुआत नहीं थी। क्लोनिंग का इतिहास 1950 के दशक से चला आ रहा है। लेकिन डॉली ने इसे मुख्यधारा में ला दिया। 1952 में रॉबर्ट ब्रिग्स और थॉमस किंग ने नॉर्थ लेपर्ड फ्रॉग की क्लोनिंग की थी, जो पहला क्लोनिंग प्रयोग था। डॉली की क्लोनिंग स्तनधारियों में पहली बार थी और वह भी वयस्क कोशिका से।

डॉली की सफलता ने क्लोनिंग को लेकर उम्मीदों का पिटारा खोल दिया। वैज्ञानिकों ने सोचा कि इससे लुप्तप्राय प्रजातियों को बचाया जा सकता है, अंगों की कमी दूर की जा सकती है और यहां तक कि मानव क्लोनिंग संभव हो सकती है। लेकिन जल्द ही चुनौतियां सामने आईं। डॉली की उम्र सिर्फ साढ़े छह साल रही– वह 14 फरवरी 2003 को फेफड़ों की बीमारी से मर गई। वैज्ञानिकों ने पाया कि क्लोन किए गए जानवरों में स्वास्थ्य समस्याएं आम हैं, जैसे समय से पहले बुढ़ापा, आनुवंशिक दोष और कमजोर प्रतिरक्षा प्रणाली।

डॉली द शीप: क्लोनिंग की पहली स्टार

डॉली फिन डॉर्सेट नस्ल की भेड़ थी, जिसकी क्लोनिंग एससीएनटी तकनीक से की गई। दाता कोशिका एक छह साल पुरानी भेड़ की स्तन ग्रंथि से ली गई थी। 277 प्रयासों के बाद सफलता मिली। डॉली ने तीन बच्चे पैदे किए, लेकिन स्वास्थ्य समस्याओं से जूझती रही। वह आर्थराइटिस से पीड़ित थी और समय से पहले बूढ़ी हो गई। 2003 में उसकी मौत हो गई। डॉली का शव एडिनबर्ग के रॉयल म्यूजियम में रखा है। इस सफलता ने क्लोनिंग को वैश्विक बहस का विषय बना दिया। नैतिक सवाल उठे, क्या क्लोनिंग जीवन की नकल है या नया जीवन?

स्नपी द डॉग: डॉग क्लोनिंग में क्रांति

2005 में साउथ कोरिया के सियोल नेशनल यूनिवर्सिटी में ह्वांग वू-सुक की टीम ने स्नपी नाम का अफगान हाउंड क्लोन किया। 123 प्रयासों के बाद यह प्रयोग सफल हुआ। स्नपी का जन्म 24 अप्रैल, 2005 को हुआ। स्नपी ने कई बच्चे पैदा किए और 2015 में उसकी मौत हुई। स्नपी की सफलता ने क्लोनिंग की दक्षता बढ़ाई, लेकिन ह्वांग पर धोखाधड़ी के आरोप लगे। उन्होंने मानव क्लोनिंग के झूठे दावे किए।

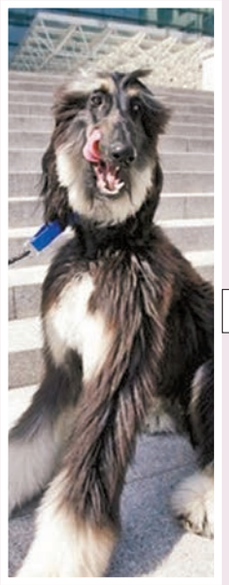

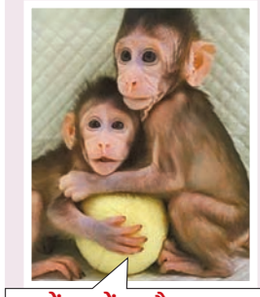

झोंग झोंग और हुआ हुआ- बंदरों की क्लोनिंग

2018 में चीन के शंघाई इंस्टीट्यूट ऑफ न्यूरोसाइंस में कियांग सन की टीम ने झोंग झोंग और हुआ हुआ नाम के दो मकाक बंदर क्लोन किए। यह प्राइमेट्स में पहली एससीएनटी सफलता थी। दाता कोशिका भ्रूण से ली गई थी। 79 प्रयासों में दो सफल रहे थे। जन्म जनवरी 2018 में हुआ। ये बंदर स्वस्थ हैं और रिसर्च में इस्तेमाल हो रहे हैं। इस सफलता ने मानव क्लोनिंग की बहस तेज की, क्योंकि बंदर मानवों से निकट हैं। बीमारियों जैसे अल्जाइमर के अध्ययन में यह फायदेमंद है। 2024 में रेट्रो नाम का बंदर क्लोन हुआ, जो और उन्नत था।

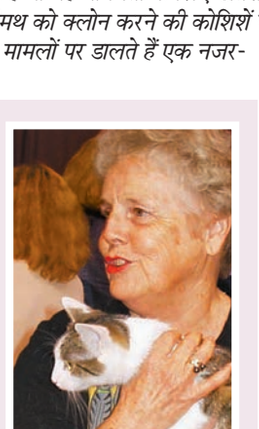

सीसी द कैट: पहली क्लोन पालतू

2001 में टेक्सास एएंडएम यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने सीसी (कॉपी कैट) नाम की बिल्ली क्लोन की। यह पहली क्लोन की गई पालतू थी। दाता कोशिका रेनबो नाम की बिल्ली से ली गई थी। एससीएनटी तकनीक से 87 प्रयासों के बाद सफलता मिली। सीसी का जन्म 22 दिसंबर, 2001 को हुआ। दिलचस्प बात यह थी कि सीसी का रंग दाता से अलग था, क्योंकि क्लोनिंग सिर्फ डीएनए कॉपी करती है, न कि पर्यावरणीय प्रभाव। सीसी ने तीन स्वस्थ बच्चे पैदा किए और 18 साल तक जीवित रही। उसकी मौत 2020 में हुई। सीसी ने पालतू क्लोनिंग का बाजार खोला। आज वियागेन जैसी कंपनियां पालतू क्लोनिंग ऑफर करती हैं, लेकिन कीमत 50 हजार डॉलर से ज्यादा है। नैतिक सवाल यह है कि क्या पालतू की मौत का गम मना रहे मालिकों के लिए क्लोनिंग सही है या यह जानवरों का शोषण?

चर्चा में

क्रोशे से तैयार आइकॉनिक मोबाइल फोन

अमरीकी कलाकार निकोल निकोलिच ने क्रोशे तकनीक से 2000 के दशक के आइकॉनिक मोबाइल फोन, गेमबॉय कंसोल और कंप्यूटर आइकॉन्स को तैयार किया है।

फिलाडेल्फिया में एक अनोखी कला प्रदर्शनी ने पुरानी तकनीक को नई जिंदगी दी है। निकोल निकोलिच को 'लेस इन द मून' के नाम से जाना जाता है। उन्होंने इस प्रदर्शनी में 30 से अधिक क्रोशे से बनाए उत्पाद प्रदर्शित किए हैं। इनमें फ्लिप फोन (जैसे नोकिया के क्लासिक ब्रिक फोन, ब्लैकबेरी, टी9 कीबोर्ड वाले फोन), गेमबॉय कंसोल और शुरुआती इंटरनेट युग के कंप्यूटर आइकॉन्स शामिल हैं। ये सभी उत्पाद एक्रिलिक यार्न से बने हैं और लकड़ी के बोर्ड पर माउंट किए गए हैं। निकोलिच का कहना है कि 2000 के दशक के ये 'डंब फोन' और पुरानी डिजिटल चीजें उनके लिए स्मृति, खेल और प्रेरणा का स्रोत हैं।

इनोवेशन

फिल्म रोल जैसा मिनिएचर डिजिटल कैमरा

जापानी कंपनी ऑप्ट ने अनोखा गैजेट पेश किया है, जो मिनिएचर डिजिटल कैमरा है। यह 35एमएम फिल्म रोल की तरह दिखता है, लेकिन इसमें कैमरा मौजूद है।

इस कैमरे के लिए वही क्लासिक पीला-काला या अन्य रेट्रो रंग, फिल्म कैनिस्टर जैसा प्लास्टिक का बाहरी आवरण इस्तेमाल किया गया है, जो पहले 35एमएम फिल्म रोल में दिखता था। इसमें मौजूद डिजिटल कैमरा न सिर्फ फोटो खींचता है, बल्कि फुल एचडी वीडियो भी रिकॉर्ड कर सकता है। यह छोटा-सा कैमरा मात्र 47 गुणा 25 गुणा 25 मिलीमीटर के आकार का है और वजन सिर्फ 25 ग्राम के आसपास है। इसे जेब में, छोटे बैग में या की-चेन पर लटकाकर आसानी से ले जाया जा सकता है। कैमरे के पीछे एक छोटा डिस्प्ले है, जिससे फ्रेमिंग की जा सकती है और रेट्रो फिल्टर्स का मजा लिया जा सकता है। ऊपर की तरफ शटर बटन है।

{ हास्यम् } humour

ठहाका

आम ने बाकी फलों को रिश्वत जो दे दी...

पिछले अंक में पूछा था,
बोया पेड़ बबूल का आम
कहां से होए, आम ही क्यों,
सेब, नारियल...क्यों नहीं?

■फलों का राजा होने के नाते मिसाल तो आम की ही दी जाती है। वैसे भी आम की मिठास के आगे बाकी सब फीके जो ठहरे।
- सर्वजीत अरोड़ा, जयपुर

■ आम ने बाकी फलों को रिश्वत दे रखी है कि 'मुहावरों में सिर्फ मेरा नाम आएगा, तुम लोग साइड रोल में रहो।'
- शक्ति सिंह जावली, मेड़ता सिटी, राजस्थान

अगले सप्ताह का सवाल

कहा जाता है कि, गाजर-मूली समझना...गाजर-मूली ही क्यों, भिंडी, तुरई, लौकी क्यों नहीं?
पाठक अपने फनी जवाब वॉट्सऐप नंबर 8955003879 पर गुरुवार तक भेज दें।

बतकही | मंच पर रचनावली की जगह एक भारी हार्ड कवर किताब खाली पन्नों सहित मखमल में लपटी रखी थी

मेरा जन्म शताब्दी समारोह

यशवन्त कोठारी
@patrika.com

आलोचक ने मुझे सदी का महत्त्वपूर्ण लेखक बताया, उसने मेरी पुस्तकों से ऐसे उदाहरण पेश किये जो मेरे द्वारा लिखे ही नहीं गए थे। मगर श्रोता सुनने का नाटक कर रहे थे। कुछ तो सो भी गए थे।

सन 2050 माह मई का कोई दिन एक समारोह में मेरा सौवां जन्म शताब्दी समारोह मनाया गया उसका आंखों देखा हाल जो मैंने नरक से देखा, उसका विवरण एआइ की कृपा से पेश-ए- खिदमत है।

माइक है, माला है, मंच है, मंच पर खूब लोग है, अध्यक्ष है, मुख्य अतिथि है, विशिष्ट अतिथि है, संचालक है महिला एंकर भी है, इवेंट मैनेजर भी है, लेकिन सामने की कुर्सियां खाली है न श्रोता है न दर्शक। एक तरफ मेरा फोटो लगा दिया गया है एक माला एक दीपक अगरबत्ती भी है। आयोजक एक यूनिवर्सिटी का अध्यापक है जिसने मेरी रचनाओं पर थीसिस लिख कर नौकरी पाई थी, उसका गाइड अब कुलगुरु बन गया था। पैसा वो मेरे घर वालों से ले आया था।

मेरी पुस्तकों का कोई अता पता नहीं था, जिस प्रकाशक को इस अवसर पर मेरी रचनावली छापने का ठेका दिया गया था वो घर वालों से माल ले कर चम्पत हो गया था, मंच पर रचनावली की जगह एक भारी हार्ड कवर किताब खाली पन्नों सहित बाइंड कर के मखमल में लपेट कर रख दी गयी थी। सब कुछ शानदार था हॉल, रोशनी, परदे सुन्दर एंकर लेकिन बस मैं वहां नहीं था, लेकिन मेरी आत्मा वहीं भटक रही थी। यह कार्यक्रम मेरी भटकती आत्मा को मोक्ष दिलाने के लिए ही किया जा रहा था।

कार्यक्रम की शुरुआत गणेश वंदना से हुई, फिर मां शारदे की स्तुति की गई। अब एक अपने समय के वरिष्ठ आलोचक ने मेरी रचनाओं पर गुरु गंभीर वाणी में ओजस्वी वक्तव्य देना शुरू किया, एक श्रोता चिल्लाया रिटायर्ड प्रोफेसर है एक घंटे से कम नहीं बोलेगा, दूसरा बोला घंटा बजाओ शायद बैठ जाए।

आलोचक ने मुझे सदी का महत्त्वपूर्ण लेखक बताया, उसने मेरी पुस्तकों से ऐसे उदाहरण पेश किए जो मेरे द्वारा लिखे ही नहीं गए थे। मगर श्रोता सुनने का नाटक कर रहे थे। कुछ तो सो भी गए थे। राम राम कर के समीक्षक का पेपर पूरा हुआ, वे आचमन करने नेपथ्य में चले गए, अब खूबसूरत एंकर ने मेरे समकालीन लेखकों के बारे में बताते हुए कहा कि इनका लेखन सब से गरिष्ठ व विशिष्ट था। इस पर एक श्रोता फिर बोल पड़ा..स्वादिष्ट भी था। आज की सांझ का डिनर भी उनकी रचनाओं की तरह ही स्वादिष्ट होने की पूरी संभावना है।

मुझे अपने जीवन के दिन याद आए, किसी संस्था ने कभी जन्म दिवस नहीं मनाया। वैसे भी तब जन्मदिन केवल बच्चों का मनाया जाता था। उनको चॉकलेट या केक का इंतजार रहता था, सुन्दर महिलाएं अपना जन्मदिन साल में कई बार मना लेती थीं। कई समर्थ साहित्यकार अपना 50वां, 60वां, 75वां, 80वां जन्मदिन अपने खर्चे पर मना लेते थे, ऐसे समारोहों में मैं भी गया था, सब कुछ लेखक खुद ही करता था, सेवानिवृत्ति के परिलाभों का यही सुन्दर उपयोग था। वैसे भी सब यहीं रह जाना है।

अब मुख्य अतिथि की बारी थी, उन्होंने साहित्य के आकाश में व्यंग्य की चर्चा की लेकिन श्रोताओं के ऊपर से गुजर गई। उनके जल्दी बैठ जाने की खुशी में खूब तालियां बजी, वे फूल कर कुप्पा हो गए।

अध्यक्ष की बारी आई वे खानदानी अध्यक्ष थे, किसी भी समरोह में तभी जाते थे जब उनको मंच पर जगह मिलती थी, इस के लिए वे कई बार कार्यक्रमों को स्पोंसर भी कर देते थे। उन्होंने बोलना शुरू किया मैं लेखक को बचपन से जानता हूं ,उसने हिंदी की क्लास कभी अटेंड नहीं की इसी कारण वो लेखक बन सका, उसकी व्याकरण कमजोर थी, इसी कारण शुद्धतावादियों को वो कभी पसंद नहीं आया, उसे हिंदी वाले केमिस्ट्री का समझते केमिस्ट्री वाले उसे आयुर्वेद का समझते, उसे हर जगह घुसपेठिया समझा गया, लेकिन आज उसकी जन्म शताब्दी के अवसर पर बहुत अच्छा प्रोग्राम हो रहा है, मुझे खुशी है कि आज उसके लेखन को न्याय मिल रहा है बाकि समकालीनों ने तो उसे भुला ही दिया था, मैं और बोलता मगर जो लिफाफा दिया गया वो हल्का है, अतः बस करता हूं प्रभु उसके लेखन को अमर करे। एंकर ने द्रव डिनर की घोषणा की, पूर्व रिकार्डेड तालियों से हॉल गूंजा क्योंकि श्रोता तो थे ही नहीं!!!

गुदगुदाते रहें

***पति** - मुझे अलादीन का चिराग मिला है।*
***पत्नी** - वाह आपने उससे क्या मांगा?*
***पति** - मैंने कहा कि वह तुम्हारे दिमाग को 10 गुना और बढ़ा दें।*
***पत्नी** - तो क्या उसने ऐसा कर दिया?*
***पति** - वह हंसने लगा और बोला शून्य को किसी से भी गुणा करो वह शून्य ही रहता है।*

पप्पू को एक बार मुगलों के सैनिकों ने बेअदबी के जुर्म में पकड़ लिया और उसे अपने बादशाह के पास ले गए।
बादशाह - इसने अपराध किया है तो इसे बंदी बना दिया जाए।
पप्पू - नहीं, नहीं जहांपनाह...रहम फरमाइए, मुझे बंदा ही रहने दिया जाए!!!

एक आदमी- तुम्हारा इस लड़के से क्या रिश्ता है...?
लड़का - जी, बहुत दूर का रिश्ता है...!
आदमी- फिर भी क्या रिश्ता है...?
लड़का- जी, वह मेरा सगा भाई है...
आदमी- तो तुम इसे दूर का रिश्ता क्यों बताते हो...? **लड़का-** क्योंकि इसके और मेरे बीच 7 भाई और हैं...!

एक्सक्यूज मी

फनी पहेली

■**पहेली-** सुबह चाय के वक्त पड़ती है जरूरत तेरी, थोड़ी-सी चिंता बढ़ती है मेरी, जब तेरे आने में होती है थोड़ी सी देरी।
जवाब- अखबार

■**पहेली-** हम भाई-बहन अनेक हैं, मैं उनमें से एक, अगर हम मां के संग में ना रहे, तो मां को देते फेंक।
जवाब- मटर फली

■**पहेली-** धोली धरती काला बीज, बोवन वाला गाये गीत।
जवाब- कागज-स्याही

■ **पहेली-** तू चलता फिरता रहता है, मैं तेरे साथ घिसटती हूं, तू सुख दुख सहता रहता है, मैं कोई परवाह ना करती हूं।
जवाब- छाया

■ **पहेली-** छज्जे जैसे कान हैं मेरे, सबसे लंबी नाक है, खंभे जैसे पैर हैं मेरे, बच्चों जैसी आंख है।
जवाब- हाथी

■ **पहेली-** धोला घोड़ा हरी-हरी पूंछ, बताओ कौन हूं मैं। **जवाब-** मूली

प्रस्तुति- **महादेव 'प्रेमी'**

एसएमएस- पाठकों की तरफ से सोशल मीडिया शेयरिंग

*इस फोटो को देखकर आपके मन में ताजा घटनाओं से संबंधी कोई मजेदार कंटेंट आता है तो लिखकर हमें वॉट्सऐप नंबर **8955003879** पर भेजें। बेहतर और चयनित कमेंट को 'हास्यम्' के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे।*

रीडर्स रिएक्शन

■ तुम 5 लाख रुपए के स्कैम का शिकार हुई मैं चुप रहा। अगर मुझे किसी ने 5 हजार का भी चूना लगाया होता तो तुम मेरी ऐसी तैसी कर देती। **- विभाष पाठक,** मुंगेली

■ हां, तुझे आज जी भर के शॉपिंग कराऊंगा। दोहरी खुशी है। चांदी के भाव भी कम हो गए और टी20 में भारत ने पाकिस्तान को हरा दिया।**- विक्की बोस**

■ चांदी के भाव पहले ही आसमान छू रहे हैं और ऊपर से तुमने कानों में बड़े बड़े चांदी के झुमके पहन रखे हैं, यदि इनकम टैक्स वालों की नजर पड़ गई तो लेने के देने पड़ जाएंगे।
-मनोज सिंघल, जयपुर

■ होली कब है, कब है होली....? बसंती, इस बार हम दोनों साथ-साथ ही होली खेलेंगे, लेकिन तुम्हारी मौसी मना तो नहीं करेगी न ....?
- भाव्यांश कौशिक, जयपुर

पाठक-पाती

■ हास्यम् पेज पर दी जाने वाली पाठ्य सामग्री बहुत रोचक होती है। इस पेज को पढ़ने से तनाव दूर हो जाता है और घर-परिवार का माहौल भी मनोरंजक हो जाता है। मेरे घर में इस पेज का रविवार को सभी इंतजार करते हैं।
- वीना छंगाणी, बीकानेर

■ रविवार का हास्यम् पेज मुझे बहुत पसंद है, खासकर बतकही कॉलम। इस पेज पर दी जाने वाली सारी सामग्री रोचक है। गुदगुदाते रहें और ठहाका कॉलम को पढ़ना भी मजेदार होता है।
- तुषार गुप्ता, इंदौर

आत्मभाव ही मानव की संस्कृति

स्पंदन

गुलाब कोठारी

लेखक पत्रिका समूह के प्रधान संपादक हैं

मनुष्य के आध्यात्मिक और आधिभौतिक स्वरूप से सम्बंध रखने वाले अन्तः और बाह्य आचार को ही संस्कृति और सभ्यता माना जाता है। इस संस्कृति और सभ्यता को समझने के लिए मानव का स्वरूप जानना आवश्यक है। शरीर-बुद्धि-मन-आत्मा इन चारों की समष्टि ही मानव है।

संस्कृति को परिभाषित नहीं किया जा सकता है। उसके लक्षणों के आधार पर उसको जाना जा सकता है। सभ्यता वस्तुपरक है किन्तु संस्कृति वह गुण है जो हममें व्याप्त है। स्थूल वस्तुएं सभ्यता है जबकि सूक्ष्म अनुभूति संस्कृति है। जैसे पोशाक और भोजन सभ्यता का अंग हैं जबकि पोशाक पहनने व भोजन करने की कला संस्कृति है। आत्मभाव ही मानव की संस्कृति है तथा शरीर भाव ही मानव की सभ्यता है।

मनुष्य के आध्यात्मिक और आधिभौतिक स्वरूप से सम्बन्ध रखने वाले अन्तः और बाह्य आचार को ही संस्कृति और सभ्यता माना जाता है। इस संस्कृति और सभ्यता को समझने के लिए मानव का स्वरूप जानना आवश्यक है। शरीर-बुद्धि-मन-आत्मा इन चारों की समष्टि ही मानव है। ये चारों नाम-रूप-गुण-कर्म-शक्ति आदि की दृष्टि से परस्पर सर्वथा भिन्न हैं। इन चारों को एक केन्द्र बिन्दु पर समन्वित रखने वाला जो कोई पांचवां सूक्ष्मतम तत्त्व है, वही समब्रह्म कहलाता है। नृत्य-गीत-वाद्य संगीत के आचार्य इसे ही सम कहते हैं। मृदंगवादक का मृदंगनाद, नर्तक का घुंघुरूनाद, और गायक का स्वरनाद तीनों जब संतुलित बन कर किसी एक बिन्दु पर समन्वित हो जाते हैं, वही संगीतज्ञों की भाषा में सम पर आना कहलाता है।

आधिभौतिक विश्व में प्रकृति के विकृति रूप असंख्य विस्तार नानाभाव में हैं। जैसे एक बीज को आधार मानें तो वृक्ष के मूल, शाखा, प्रशाखा, पत्ते, मंजरी, पुष्प, फल आदि स्वरूप हैं। इन नानाभावों के रहते हुए भी कोई एक मूल-धरातल के आश्रय से वह वृक्ष ही कहलाता है। इस 'एकत्त्व' की प्रतीति का वह आधारभूत तत्त्व ही समब्रह्म है।

प्रकृति के दो मूल विभाग हैं-अमृत और मृत्यु। सूर्य केन्द्र बिन्दु है। इसका ऊपर का अर्द्ध भाग अमृत सृष्टि से जुड़ा है। नीचे का गोलार्द्ध मृत्यु से जुड़ा है। जो कुछ क्रिया-प्रतिक्रियाएं अमृतभाग में होती हैं, उसकी ही प्रति-कृति मृत्यु लोक में होती रहती है। अतः हम यह भी कह सकते हैं कि अमृत भाग संस्कृति है और मर्त्य भाग उसकी सभ्यता है। अमृत और मर्त्य दोनों ही सृष्टि तीन-तीन स्वरूपों में कार्यरत रहती हैं-अधिदैव, अधिभूत और अध्यात्म। अतः इन तीन स्वरूपों की भी अपनी-अपनी संस्कृति-सभ्यता हैं। उसी का स्थूल रूप हमारी मानव संस्कृति-सभ्यता है।

हमारी सृष्टि में सात लोक हैं-भूः, भुवः, स्वः, महः, जनः, तपः और सत्यम्। सत्यम् लोक की संस्कृति वेद है। ब्रह्मा की कृति वेद ही है। आगे की सृष्टि उसकी सभ्यता कही जाएगी। आगे परमेष्ठी लोक के अधिष्ठाता विष्णु हैं। अव्यय पुरुष कृति है, अक्षर-क्षर पुरुष सभ्यता कहलाएंगे। सूर्य लोक में जहां इन्द्र स्वामी है, वहां देवता संस्कृति है। अधिदैव सृष्टि सभ्यता है। जहां सूर्य स्वामी है, वहां सौर मण्डल संस्कृति है। प्रजा सभ्यता है। सम्वत्सर संस्कृति है, ऋतुएं सभ्यता हैं। इसका अर्थ हुआ-अग्नि संस्कृति है (सत्य है), सोम (ऋत) सभ्यता है। सूर्य की संस्कृति का एक स्वरूप अमृत लोक में व्याप्त रहता है, दूसरा स्वरूप मृत्यु लोक में। हम कह सकते हैं कि सूर्य ही अमृत लोक की संस्कृति का रूपान्तरण मृत्यु लोक की संस्कृति में करता है। चन्द्रमा परमेष्ठी की कृति है। हमारे अन्तरिक्ष का स्वामी है। पितृलोक उसकी संस्कृति है। असुर, गन्धर्व, पिशाच आदि प्राण उसकी सभ्यता हैं। पंच महाभूत ही पृथ्वी की संस्कृति है। जड़-चेतन जीव, वनस्पति-औषध इसकी सभ्यता है। इन सबका आगे चलकर अग्नि भाव संस्कृति तथा सौम्य भाव सभ्यता कहलाता है। ज्ञान संस्कृति कहलाता है, ब्रह्म का पर्याय है। उस एक से ही विश्व प्रकट हुआ, इसे विज्ञान भाव कहते हैं। यह ब्रह्म की कृति है। ब्रह्म और कर्म मिलकर संस्कृति हैं।

मानव को इस सांस्कृतिक अभिधा का एकमात्र अधिकारी माना गया है। 'पुरुषो वै प्रजापतेर्नेदिष्टः' और 'न हि मानुषात् श्रेष्ठतरं हि किञ्चित्' शास्त्र वाक्य प्रमाण है। मानव के अतिरिक्त सभी चौरासी लाख योनियां प्राकृत हैं, प्रकृति से संचालित होते हुए परतन्त्र हैं। मानव अव्यय पुरुष के आधार के कारण अप्राकृत है। स्वतन्त्र पुरुषार्थ साधन में समर्थ है। ईश्वर अव्यय की पूर्ण कृति होने से मानव ही संस्कृति है।

ब्रह्म की सम् रूप आंशिक कृति कृति है तथा पूर्णकृति संस्कृति है। विश्व के अव्यक्त, सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी चार अवयव माने गए हैं। मानव में ही इन चारों अवयवों का समन्वय हो रहा है। यही मानव की सांस्कृतिकता का मूल बीज है।

विश्व का अव्यक्त भाग मानव में भूतात्मा है, सूर्य भाग बुद्धि, चन्द्र भाग मन तथा पृथ्वी भाग शरीर है। इनका आधार पांचवां-ईश्वर (अव्ययात्मा) ही इन चारों को सम् भाव में रखकर मानव को संस्कृति का रूप प्रदान करता है।

भारतीय जीवन पद्धति आत्मा-बुद्धि-मनः शरीर-नामक चार पर्वों से समन्वित है। आत्मभाव ही मानव की मानवता का एकमात्र वह मापदण्ड है, जिसने इसे भूतसर्गों में सर्वश्रेष्ठ प्रमाणित कर रखा है। जहां बुद्धि, मन, शरीर तीनों प्रकृति के सहजभाव बनते हुए प्राकृतिक पशु-पक्षी-कृमि-कीटादि सर्गों में समान हैं, वहां मानव में आत्मभाव ही विशेषता है। बुद्धिमत्ता, मनस्विता तथा सुदृढ़ शरीर तीनों में से एक भी प्राकृतिक भाव मानव का स्वरूप नहीं है। अन्य सब कृतियां प्रकृतिप्रधान बनती हुई केवल 'कृति' शब्द की अधिकारिणी हैं। एकमात्र मानव ही समब्रह्मरूप अव्यय पुरुष की अभिव्यक्तिरूप कृति बनता हुआ संस्कृति रूप है।

gulabkothari@epatrika.com

क्यूआर कोड को स्कैन कर आप आलेख सुन भी सकते हैं।

काव्यांजलि

POEM

...पर यार नहीं था

गोपाल गर्ग

लफ्जों में इजहार नहीं था।
लेकिन क्या वो प्यार नहीं था।

फूल खिले जिसकी शाखों पर
खुशबू का हकदार नहीं था।

गांव गया तो मैंने देखा
लोग वही पर यार नहीं था।

दोनों की गलती,पर कोई
झुकने को तैयार नहीं था।

गुरबत का मारा था लेकिन
बेबस या लाचार नहीं था।

तुम तो शर्तों पर मिलते थे
मैं उतना होशियार नहीं था।

दोनों की फितरत थी पानी
पर मैं पानीदार नहीं था।

कोई भी अपना सगा नहीं

डॉ. रौनक रशीद खान

कभी वो मुझ से मिला नहीं है।
वो कैसा है, कुछ पता नहीं है।।

चराग अपना तो जल रहा है।
बुझा दे ऐसी हवा नहीं है।।

उसी को चाहा, उसी को पूजा।
लेकिन वो मेरा खुदा नहीं है।।

सच है हमने तो सच ही बोला।
कोई हमारी खता नहीं है।।

यही है उलझन, नहीं लगे मन।
क्या इसकी कोई दवा नहीं है।।

पलट के उसने हमें न देखा।
किया मगर कुछ दगा नहीं है।।

बगैर उसके भी जी रहे हैं।
इससे बड़ी कोई सजा नहीं है।।

पड़ी जो मुश्किल,तो हमने देखा।
कोई भी अपना सगा नहीं है।।

जहां में 'रौनक' है चार दिन की।
उजाला हर दम रहा नहीं है।।

प्रकाश सब सुनता, पर चुप रहता। उसके मन में परीक्षा को लेकर एक और परीक्षात्मक प्रश्न घूम रहा था- 'अगर हम सिर्फ वही पढ़ें जो परीक्षा में आएगा, तो वह क्यों न पढ़ें जो जिंदगी में काम आएगा?'

सही परीक्षा

आनंदप्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'
कथाकार
@patrika.com

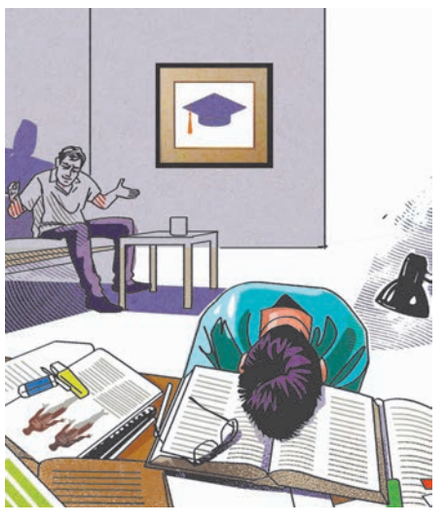

कहानी का संकेत स्पष्ट था– परीक्षा सिर्फ अंकों की हो सकती है, पर सीख अंकों से बड़ी होती है। अंक कभी-कभी भविष्य का दरवाजा खोलते हैं, पर प्रश्न और समझ भविष्य को दिशा देते हैं। और सबसे महत्त्वपूर्ण, सही परीक्षा वह नहीं जो आपको परख ले, सही परीक्षा वह है जो आपको बदल दे।

विद्यालय में वार्षिक परीक्षाओं का माहौल था। हर तरफ वही पुराना तनाव- प्रश्नपत्र, मॉडल टेस्ट, कोचिंग नोट्स, रंग-बिरंगी हाइलाइटर्स, और माता-पिता के चेहरों पर चिंता की लकीरें। पर इसी भीड़ में दसवीं का छात्र प्रकाश एक अलग किस्म की उलझन में था। उसकी उलझन गणित के सूत्रों या तिथियों की नहीं थी, बल्कि उस सवाल की थी- जो परीक्षा की कॉपियों के लिए नहीं था- 'क्या परीक्षा सिर्फ अंकों के लिए है या समझ के लिए?' वह पढ़ाई में ठीक था, पर उससे ज्यादा जिज्ञासु था। चीजों को जानने की, समझने की, और पूछने की चाह उसमें बाकी छात्रों की अपेक्षाकृत अधिक थी।

उसको लगता, समय एक ही है- सीखने का। परीक्षा शुरू होने में केवल दस दिन बचे थे। स्कूल में शिक्षक रोज यही याद दिला रहे थे कि प्रश्नपत्र में कौन-कौन से अध्याय अधिक महत्त्वपूर्ण हैं और किन पर 'फोकस' करना चाहिए। दोस्त अनुमान लगा रहे थे, 'भाई इस साल त्रिभुजों वाला प्रश्न तो पक्का आएगा।' 'इतिहास में मुगल प्रशासन वाला चैप्टर नहीं आएगा, क्योंकि पिछले साल आया था।'

प्रकाश सब सुनता, पर चुप रहता। उसके मन में परीक्षा को लेकर एक और परीक्षात्मक प्रश्न घूम रहा था- 'अगर हम सिर्फ वही पढ़ें जो परीक्षा में आएगा, तो वह क्यों न पढ़ें जो जिंदगी में काम आएगा?' उसकी कक्षा में एक सहपाठी था- विक्रांत। वह टॉपर बनने की दौड़ में लगा रहता था। उसने प्रकाश से कहा, 'तू इतना समय क्यों खराब करता है इन प्रोजेक्टों में? टॉप तो वैसे ही नहीं करेगा। परीक्षा में वही गिना जाएगा जो लिखेगा, न कि जो सोचता है।' वह मुस्कुराया, 'सोचना भी एक दिन नंबर ला देगा, बस बोर्ड की कॉपी में नहीं, जिंदगी की कॉपी में।'

विक्रांत हंस कर रह गया- 'भाई, जिंदगी की कॉपी की जांच कोई बोर्ड नहीं करता।'

परीक्षाएं शुरू हुईं। पहला पेपर विज्ञान का था। पेपर शुरू हुआ। प्रश्न ठीक-ठाक थे। पर अंतिम पृष्ठ पर एक अनोखा प्रश्न था, जो विकल्पों में नहीं था- 'जीवन में विज्ञान का क्या महत्त्व है? अपनी समझ के आधार पर लिखिए।' यह प्रश्न प्रकाश को जैसे उसके ही नाम से पुकार रहा था। उसने बिना रुके लिखा- उपकरणों की बात नहीं, दृष्टिकोण की बात, खोज की, प्रश्न पूछने की और गलतियों से सीखने की। उसने लिखा- 'विज्ञान उत्तरों की सूची नहीं, प्रश्नों की संस्कृति है।'

उधर विक्रांत का पेन रुक गया। वह ऐसे प्रश्नों का आदी नहीं था।

जैसे ही स्कूल खत्म हुआ, छात्र मैदान में जमा होकर अनुमान लगाने लगे- 'इतने नंबर तो पक्के, इस वैल्यू में माइनस लगा या नहीं, वो प्रश्न गलत हो गया।' प्रकाश इन बहसों का हिस्सा नहीं था। वह परीक्षा से बाहर आकर शांति में था- जैसे उसने अपना काम कर दिया हो। अब उसे उस विज्ञान प्रयोग-किट की चिंता थी जो उसने परीक्षा से पहले आधा छोड़ दिया था।

परिणाम दिवस आया। स्कूल के नोटिस बोर्ड पर बच्चों का जमावड़ा। विक्रांत फिर से टॉपर था, कुल मिलाकर 96 प्रतिशत। परिवार खुश, टीचर्स गर्वित। प्रकाश के नंबर 90 प्रतिशत थे। विज्ञान में उत्तरों पर परीक्षा बोर्ड ने विशेष टिप्पणी भेजी थी- 'उत्तर विचारणीय एवं मौलिक। विद्यार्थी में अवधारणा-आधारित समझ स्पष्ट है।'

यह टिप्पणी नंबरों से ज्यादा बड़ी थी, पर यह बात केवल वही समझ सकता था जो नंबरों के बाहर देख सके। पर कहानी का मोड़ यही नहीं था। स्कूल में उस वर्ष एक नया कार्यक्रम शुरू हुआ- यंग इनोवेटर्स लर्निंग फेलोशिप। इसमें उन बच्चों को चुना जाना था, जो सीखने को सिर्फ पाठ्यक्रम की सीमा में नहीं रखते थे। फेलोशिप के लिए इंटरव्यू हुआ। विक्रांत भी पहुंचा अपनी उपलब्धियों, सर्टिफिकेट्स और प्रतिशत के साथ। प्रकाश पहुंचा- अपनी आधी बनी हुई चीजों, सवालों और छोटे प्रोजेक्ट्स के साथ। पैनल ने पूछा- 'तुम्हारे लिए सीखने का मतलब क्या है?'

उसने जवाब दिया- 'सीखना वो है जो परीक्षा खत्म होने के बाद भी जारी रहे।'

उन्होंने पूछा- 'और परीक्षा?'

वह मुस्कुराया,'परीक्षा एक हिस्सा है, मंजिल नहीं। यह नहीं बताती हम क्या जानते हैं, बताती है हम क्या लिख पाते हैं?' पैनल चुप हो गया- इस उत्तर में नारा नहीं, अनुभव था।

कुछ दिनों बाद परिणाम आया। फेलोशिप प्रकाश को मिली विक्रांत को नहीं। वह हैरान था- 'पर मेरे नंबर अधिक हैं।' फेलोशिप वालों ने केवल एक पंक्ति में कारण लिखा- 'हम उत्तर देने वाले नहीं, प्रश्न ढूंढने वाले चुनते हैं।'

सालों बाद यही अंतर और बड़ा दिखा। विक्रांत एक साधारण कम्पनी में विश्लेषक बन गया। प्रकाश एक उच्चकोटि के शोध संस्थान में पहुंचा– जहां हर दिन परीक्षा थी, पर प्रश्नपत्र जिंदगी देती थी।

एक बार विक्रांत ने मजाक में पूछा– 'अब किस बोर्ड की कॉपी जांचते हो?' प्रकाश ने हंसकर कहा- 'जीवन की। अभी भी कई सवाल अनुत्तरित हैं।' कहानी का संकेत स्पष्ट था- परीक्षा सिर्फ अंकों की हो सकती है, पर सीख अंकों से बड़ी होती है। अंक कभी-कभी भविष्य का दरवाजा खोलते हैं, पर प्रश्न और समझ भविष्य को दिशा देते हैं। और सबसे महत्त्वपूर्ण, सही परीक्षा वह नहीं जो आपको परख ले, सही परीक्षा वह है,जो आपको बदल दे।

सामाजिक संस्कारों से जुड़ा यह स्तंभ नई पीढ़ी को भी पढ़ाएं।

घरेलू उपाय

अस्थमा और एलर्जी की समस्या रहती है तो दूध के साथ अरण्ड तेल का सेवन लाभकारी है। साथ ही भोजन के बाद सौंठ और हरीतकी लेना फायदेमंद है।

मेरी सेहत Health

एग्जाम डाइट

एग्जाम के समय में प्रोटीन और कॉम्प्लेक्स कार्बोहाइड्रेट का संयोजन बच्चों को लंबे समय तक सक्रिय और ऊर्जावान बनाए रखता है। साथ ही हाइड्रेशन का पूरा ध्यान रखें।

अधोमुख श्वानासन: स्लिप्ड डिस्क और साइटिका में मिलेगी राहत

फिटनेस मंत्र...

योगाचार्य ढाकाराम
जयपुर
patrika.com

यदि आप अपनी सुबह की शुरुआत एनर्जी और पॉजिटिविटी से करना चाहते हैं तो अधोमुख श्वानासन यानी डाउनवर्ड फेसिंग डॉग पोज बहुत लाभकारी होगा। इससे रीढ़ की हड्डी को स्ट्रेच करने में मदद मिलेगी। नियमित अभ्यास से जकड़े हुए मसल्स खुलने लगते हैं और शरीर का रक्तसंचार भी बेहतर होता है। जानते हैं इसके बारे में...

क्या है आसन करने का सही तरीका?

प्रशिक्षक बिना किसी सहारे से इन स्टेप्स में करें -

1. **सबसे** पहले वज्रासन में बैठ जाएं।
2. **अपने** हाथों को सामने की ओर फैलाएं और हथेलियों को जमीन पर जमाएं।
3. **अपने** शरीर का पूरा भार हथेलियों पर डालें।
4. **अब** अपने नितंबों को ऊपर की ओर उठाएं।
5. **पैरों** को जमीन पर दबाएं, हथेलियां और कंधों को भी जमीन पर दबाएं और नितंबों को ऊपर की ओर खींचें।

यदि आपको स्लिप्ड डिस्क, साइटिका या पीठ दर्द की समस्या है तो अधोमुख श्वानासन करते समय बेल्ट या रस्सी का प्रयोग करना चाहिए ताकि सुरक्षित तरीके से आसन को किया जा सके एवं लाभ अधिक मिले।

मरीज रखें ध्यान

- **बेल्ट** को कमर के ठीक नीचे सेट करें।
- **शरीर** को थोड़ा आगे की ओर ले जाएं।
- **धीरे-धीरे** सामने की ओर झुकें और अपनी हथेलियों को फर्श पर रखें। यदि हाथ फर्श तक नहीं पहुंच रहे हों तो सहारे के लिए तकिए या बोल्स्टर का प्रयोग किया जा सकता है।
- **इस** स्थिति में रहते हुए पीछे की ओर खिसकें। ध्यान रखें कि एड़ियां जमीन को पूरी तरह से छू रही हों।

इन रोगों में लाभदायक

- **स्लिप्ड डिस्क:** इसमें राहत प्रदान करता है।
- **पीठ दर्द:** कमर दर्द को ठीक करने में सहायक है।
- **साइटिका:** गंभीर दर्द की स्थिति में योग विशेषज्ञ की देखरेख में आसन करने से लाभ होगा।
- **बवासीर:** प्रशिक्षक की देखरेख में विशेष उपकरणों के साथ करने पर बवासीर में लाभ मिलता है।

इन बातों का रखें ध्यान

- **एड़ियां:** एड़ियां जमीन पर टिकी होनी चाहिए।
- **घुटने:** घुटने को बिल्कुल सीधा रखें।
- **सिर:** माथा जमीन को छूना चाहिए।
- **कोहनी:** कोहनी मुड़ी हुई नहीं, बल्कि एकदम सीधी होनी चाहिए।
- **हथेलियां:** हथेलियों को नीचे की ओर जोर से दबाएं ताकि वे फिसलें नहीं।

रेयर डिजीज डे- 28 फरवरी

थैरेपी से जगी नई उम्मीद

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुर्लभ बीमारियां 1,000 लोगों में से एक से भी कम को प्रभावित करती हैं। भारत में अनुमानित 7 से 9.6 करोड़ लोग किसी न किसी दुर्लभ बीमारी से जूझ रहे हैं, जिनमें लगभग 80 प्रतिशत बीमारियां आनुवांशिक हैं। जानते हैं इसके बारे में...

सही समय पर पहचान ही चुनौती

इनके लक्षण अक्सर सामान्य बीमारियों जैसे लगते हैं, जिससे सही निदान में देरी होती है और उपचार भी देर से शुरू होता है। भारत में प्रचलित कुछ प्रमुख दुर्लभ बीमारियां हीमोफीलिया, थैलेसीमिया, सिकल सेल एनीमिया, सिस्टिक फाइब्रोसिस और लाइसोसोमल स्टोरेज डिसऑर्डर, स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी, मस्कुलर डिस्ट्रॉफी, ल्यूकोडिस्ट्रॉफी, माइटोकॉन्ड्रियल विकार आदि हैं।

इन संकेतों को समझें

कुछ संकेत जिन पर ध्यान देना बेहद जरूरी है–

- **लंबे** समय तक बने रहने वाले लक्षण जो सामान्य इलाज से ठीक न हों।
- **अलग-अलग** लक्षणों का असामान्य संयोजन।
- **परिवार** में समान बीमारी का इतिहास आदि है तो समय रहते संदेह होने पर विशेषज्ञ से परामर्श मरीज की जिंदगी बदल सकता है।

क्या है इलाज और उपचार?

- जीन थैरेपी अब स्पाइनल मस्कुलर एट्रोफी जैसे न्यूरोमस्कुलर विकारों में प्रभावी साबित हो रही है।
- एक्सॉन-स्किपिंग एंटीसेंस ओलिगो-न्यूक्लियोटाइड थैरेपी डुशेन मस्कुलर डिस्ट्रॉफी के प्रबंधन में मदद कर रही है।
- एंजाइम रिप्लेसमेंट थैरेपी पोम्पे, गौचर और एमपीएस जैसी बीमारियों के इलाज में उपयोगी है।
- स्टेम सेल थैरेपी कुछ एमपीएस और ल्यूकोडिस्ट्रॉफी में आशा की किरण दिखा रही है।
- डाइट मैनेजमेंट और साधारण सप्लीमेंट भी लाभकरी हैं।

भावनात्मक सपोर्ट भी जरूरी

दुर्लभ बीमारी का सफर किसी रोलर-कोस्टर से कम नहीं होता। कई बार इलाज में देरी, गलत उपचार या समर्थन की कमी से हताशा और गुस्सा भी बढ़ता है। ऐसे में सपोर्ट ग्रुप से जुड़ना बेहद मददगार होता है। समान अनुभव वाले लोगों से संवाद मन का बोझ हल्का करता है। साथ ही सही जानकारी और शिक्षा, काउंसलिंग, मानसिक मजबूती देती है।

डॉ.सायली बिडकर
न्यूरोलॉजिस्ट
कोकिलाबेन अस्पताल, मुंबई

ब्रेस्ट पेन से घबराएं नहीं, जानें कब सामान्य और कब होती है जांच की जरूरत

मास्टाल्जिया : हार्मोनल बदलाव से जुड़ी समस्या

जीवन के किसी न किसी समय लगभग 60-70 प्रतिशत महिलाओं को स्तन दर्द की शिकायत होती है। महिलाओं में ब्रेस्ट क्लिनिक तक पहुंचने का सबसे प्रमुख कारण मास्टाल्जिया होता है। दरअसल, मास्टाल्जिया यानी स्तनों में दर्द या असहजता, महिलाओं में पाई जाने वाली सबसे सामान्य स्तन संबंधी समस्याओं में से एक है। अधिकांश मामलों में यह एक हानिरहित स्थिति होती है और इसका स्तन कैंसर से कोई संबंध नहीं होता है।

समझें कितने प्रकार के होते हैं मास्टाल्जिया?

मास्टाल्जिया को मुख्य रूप से दो प्रकारों में बांटा जाता है।

1. **साइक्लिकल मास्टाल्जिया:** यह सबसे अधिक पाया जाने वाला प्रकार है और यह मासिक धर्म चक्र के दौरान होने वाले हार्मोनल उतार-चढ़ाव से संबंधित होता है। यह दर्द आमतौर पर पीरियड्स से लगभग एक सप्ताह पहले शुरू होता है और मासिक धर्म शुरू होते ही अपने आप कम हो जाता है या समाप्त हो जाता है। यह समस्या प्राय: 20 से 45 वर्ष की महिलाओं में देखी जाती है और दोनों स्तनों में भारीपन महसूस होता है।
2. **नॉन साइक्लिकल मास्टाल्जिया:** इसका मासिक धर्म से कोई संबंध नहीं होता और यह लगातार या रुक-रुक कर होने वाला दर्द हो सकता है, जो अक्सर एक ही स्तन के किसी विशेष हिस्से तक सीमित रहता है। यह प्रकार सामान्यत: 40 से 55 वर्ष की महिलाओं में पाया जाता है।

लक्षणों को समझें: एक जगह सीमित दर्द, स्तन में गांठ, निप्पल का स्त्राव, त्वचा में बदलाव, निप्पल का अंदर धंसना, बढ़ती हुई गांठ के साथ दर्द या मेनोपॉज के बाद दर्द है तो डॉक्टर से परामर्श लें।

ब्रेस्ट कैंसर और मास्टाल्जिया में अंतर

केवल स्तन में दर्द होना आमतौर पर कैंसर का संकेत नहीं होता। कैंसर से जुड़ा दर्द बहुत कम मामलों में होता है और प्राय: अन्य चेतावनी लक्षणों के साथ दिखाई देता है। कैंसर की गांठ में घाव का होना या कैंसर की गांठ का स्तन के नीचे से मांस तक पहुंचना, स्तन में दर्द का कारण हो सकते हैं।

क्या हो सकते हैं नॉन-साइक्लिकल मास्टाल्जिया के कारण?

स्तन में गांठ का होना, डक्ट एक्टेसिया या छाती की मांसपेशियों और हड्डियों से जुड़ा दर्द शामिल हो सकता है। कुछ मामलों में दर्द पसलियों, मांसपेशियों, गर्दन की रीढ़ या पाचनतंत्र से उत्पन्न होता है, जिसे एक्स्ट्रा-मैमरी दर्द कहा जाता है। हार्मोनल बदलाव, प्रेग्नेंसी, मेनोपॉज, गर्भनिरोधक गोलियां, हार्मोन थैरेपी, तनाव, अधिक कैफीन और सही अंतरंग कपड़ों का चुनाव न करना आदि कारण भी हैं।

60-70 *प्रतिशत महिलाओं को जीवन में किसी न किसी समय होती है स्तन में दर्द की शिकायत।*

20-45 *साल की उम्र में महिलाओं में पीरियड्स के दौरान हार्मोनल उतार-चढ़ाव के कारण होता है मास्टाल्जिया।*

40-55 *साल की महिलाओं में है यदि नॉन साइक्लिकल मास्टाल्जिया, तो स्तन में गांठ का हो सकता है संकेत।*

इन घरेलू उपायों से मिलेगी राहत

मास्टाल्जिया से राहत पाने के लिए कुछ घरेलू उपायों को भी आसानी से आजमाया जा सकता है-

1. **अपने** अंतरंग वस्त्र आरामदायक और सहायक हो, जिससे स्तन में दर्द कम हो सकता है।
2. **गर्म** या ठंडा सेक करने से दर्द में राहत मिलेगी।
3. **वजन** कम करें, मोटापा भी कारण हो सकता है।
4. **कैफीन** और शराब का सेवन कम करें।
5. **नियमित** व्यायाम करने से हार्मोनल बैलेंस बना रहता है और ब्रेस्ट कैंसर का जोखिम भी कम होता है।
6. **तनाव** कम करने के लिए योग, मेडिटेशन या गहरी सांस लेने का अभ्यास करें।
7. **हैल्दी** डाइट लें। तंबाकू से दूर रहें। यह सामान्य समस्या है, जो अधिकतर हार्मोनल कारणों से होती है और अधिकांश मामलों में सुरक्षित होती है।

क्या इसका इलाज संभव है?

गांठ या निप्पल डिस्चार्ज का इलाज सर्जरी के माध्यम से किया जा सकता है, ज्यादातर मामलों में हार्मोनल बदलाव ही मुख्य कारण होता है। ऐसे में ब्रेस्ट स्पेशलिस्ट से राय लेकर उचित इलाज लें।

डॉ. सपना बोथरा जैन
कंसल्टेंट एंडोक्राइन एंड ब्रेस्ट सर्जन, जयपुर
patrika.com

बी अवेयर

समझें डायबिटीज का जोखिम

'मीठा कम खाओ, वरना डायबिटीज हो जाएगी' यह चेतावनी हम बचपन से सुनते आए हैं। लेकिन डायबिटीज का असली रिश्ता मीठा ही नहीं, बल्कि लाइफस्टाइल, वजन, तनाव और जेनेटिक्स से भी है।

1. **पेट की चर्बी:** पेट की चर्बी इंसुलिन को कम असरदार बनाती है। कई मामलों में बढ़ती तोंद, डायबिटीज से पहले का संकेत होती है।
2. **दिनभर बैठना:** ऑफिस की कुर्सी, मोबाइल और टीवी–ये मिलकर 'साइलेंट डायबिटीज ट्रिगर' बन चुके हैं।
3. **खराब नींद और तनाव:** जब नींद पूरी नहीं होती या दिमाग तनाव में रहता है, तो शरीर ज्यादा कोर्टिसोल बनाता है। यह हार्मोन सीधे ब्लड शुगर बढ़ाता है। 5-6 घंटे सोने वाले लोगों में डायबिटीज का खतरा ज्यादा पाया गया है।
4. **जेनेटिक्स:** अगर घर में माता-पिता या भाई-बहन को डायबिटीज है, तो खतरा बढ़ जाता है।

ट्रम्प की इकतरफा शुल्क नीति

अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट द्वारा राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की वैश्विक शुल्क निर्धारण नीति को गैर संवैधानिक करार दिये जाने के बाद भारत से हुए इसके व्यापार समझौते की वैधता पर भी सवालिया निशान लगना स्वाभाविक है। सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया है कि श्री ट्रम्प ने जिस कानून 'इंटरनेशनल इकोनॉमिक पावर्स एक्ट' का इस्तेमाल करके दुनिया के विभिन्न देशों के बने माल पर अमेरिका में आयात होने पर शुल्क लागने का काम किया है वह उन्हें इसका अधिकार ही नहीं देता है, अत: उनका आदेश असंवैधानिक है। अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से दुनिया के विभिन्न देशों ने राहत की सांस ली है लेकिन श्री ट्रम्प ने अपने देश की सुरक्षा के तहत बने नियमों के तहत जिन आयातित उत्पादों पर शुल्क बढ़ाया है उन पर इस फैसले का कोई असर नहीं पड़ेगा। अमेरिका के सर्वोच्च न्यायालय की नौ सदस्यीय पीठ ने अपना फैसला 6-3 के बहुमत से देते हुए स्पष्ट किया कि शुल्क निर्धारण का अधिकार केवल अमेरिका की संसद (कांग्रेस) के पास है जिसे राष्ट्रपति लांघ नहीं सकते हैं। मगर सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने के बाद राष्ट्रपति ने एक प्रेस कान्फ्रेस में कहा कि भारत के साथ हुए व्यापार समझौते पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

ज्ञातव्य है कि अमेरिका ने भारत के साथ अभी अन्तरिम समझौता ही किया है जिसका ब्यौरा अभी बन रहा है। अत: भारत के पास ऐसा हथियार आ गया है कि वह सुप्रीम कोर्ट के फैसले की रोशनी में इस ब्यौरे को तैयार करे और पुरानी शुल्क व्यवस्था की ओर लौटने का प्रयास करे। पुरानी व्यवस्था में अमेरिका को भेजे जाने वाले सामान पर अधिकतम तीन से चार प्रतिशत शुल्क की दरें प्रभावी थीं जबकि नये समझौते में इन्हें बढ़ाकर 18 प्रतिशत कर दिया गया है। इसके साथ ही समझौते में गैर शुल्कीय या नान टैरिफ शर्तें भी हैं जैसे भारत द्वारा रूस से कच्चा तेल आयात करने पर भी अमेरिका ने 25 प्रतिशत अतिरिक्त शुल्क लगाने की धमकी दी थी। इसे लेकर भारत की विरोधी पार्टियां व्यापार समझौते की कटु आलोचना कर रही थीं और इसे भारत की संप्रभुता से जोड़ रही थीं। सुप्रीम कोर्ट का फैसला आने के बाद भारत सरकार के हाथ में ऐसा अस्त्र आ गया है कि वह समझौते की विभिन्न शर्तों को ढीला करा सके। अमेरिका के संविधान के अनुसार आपसी कारोबारी मुल्कों पर शुल्क निर्धारण करने का अधिकार केवल कांग्रेस के पास होने की वजह से राष्ट्रपति ट्रम्प को अपनी वैश्विक शुल्क नीति को कांग्रेस के पास लेकर जाना चाहिए था मगर उन्होंने ऐसा नहीं किया और अधिशासी आदेश जारी करके शुल्क नीति लागू कर दी। इससे अमेरिका की राजनीति में भूचाल आने की संभावना भी बढ़ गई है क्योंकि कांग्रेस में अमेरिका की विपक्षी डेमोक्रेटिक पार्टी का भी अच्छा दबदबा है। अमेरिका के इतिहास में अभी तक किसी भी राष्ट्रपति ने इंटरनेशनल इमरजेंसी इकोनॉमिक पावर एक्ट का इस्तेमाल शुल्क दर निर्धारण के लिए नहीं किया है। मगर विगत वर्ष 2 अप्रैल को श्री ट्रम्प ने यह घोषणा की कि विदेशी कारोबार व आर्थिक प्रक्रियाओं के चलते अमेरिका में आपातकाल जैसी स्थिति बन चुकी है जिसकी वजह से उन्हें अमेरिका के हितों को देखते हुए नई शुल्क नीति लागू करनी पड़ रही है। इसके बाद ट्रम्प ने विभिन्न कारोबारी देशों पर इकतरफा शुल्क लगाने का ऐलान कर दिया था। इससे वर्ष 2025 के भीतर ही अमेरिका के राजकीय कोष में 142 अरब डालर की अतिरिक्त धनराशि जमा हुई थी। मगर ट्रम्प के इस कदम से पूरी दुनिया के स्थापित विश्व क्रम में तूफान आ गया था और अमेरिकी शुल्कों ने एक हथियार का रूप ले लिया था। इस 142 अरब डालर की धनराशि में भारत से वसूली गई लगभग 49 करोड़ डालर की रकम भी शामिल है।

> **भारत अमेरिका को जो भी माल निर्यात करता है उसका लगभग 55 प्रतिशत ऐसा है जिसका अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा के तत्वों से कोई लेना-देना नहीं है, क्योंकि राष्ट्रीय सुरक्षा के मद्देनजर वहां के राष्ट्रपति को शुल्क बढ़ाने का अधिकार है, अत: ऐसे माल पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद शुल्क दरें पूर्व की भांति ही हो जानी चाहिए। राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े सामान में धातु व इंजीनियरिंग मशीनरी आदि की वस्तुएं आती हैं। जाहिर है कि घरेलू सामान जैसे कालीन से लेकर हीरे-जवाहरात व आभूषणों तथा कपड़ों आदि का अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता जबकि भारत 55 प्रतिशत के लगभग ऐसा ही सामान अमेरिका को निर्यात करता है।**

अमेरिका ने सर्वाधिक धनराशि चीन से वसूली है। अत: सुप्रीम कोर्ट के आदेश से उन देशों को यह छूट मिल गई है कि वे नई शुल्क दरों के तहत अमेरिका को दी गई अतिरिक्त रकम की वापसी की मांग करें। हालांकि सुप्रीम कोर्ट इस मसले पर चुप रहा है लेकिन जहां तक भारत का सवाल है तो फैसले से उसे फौरी लाभ तभी मिल सकता है जबकि समझौते की वैधता पर प्रश्न चिन्ह लग जाये और अमेरिका ने बढ़ी हुई शुल्क दर के हिसाब से भारत से अभी तक जो भी वसूला है उस रकम की वापसी हो। भारत अमेरिका को जो भी माल निर्यात करता है उसका लगभग 55 प्रतिशत ऐसा है जिसका अमेरिका के राष्ट्रीय सुरक्षा के तत्वों से कोई लेना-देना नहीं है, क्योंकि राष्ट्रीय सुरक्षा के मद्देनजर वहां के राष्ट्रपति को शुल्क बढ़ाने का अधिकार है, अत: ऐसे माल पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद शुल्क दरें पूर्व की भांति ही हो जानी चाहिए। राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े सामान में धातु व इंजीनियरिंग मशीनरी आदि की वस्तुएं आती हैं। जाहिर है कि घरेलू सामान जैसे कालीन से लेकर हीरे-जवाहरात व आभूषणों तथा कपड़ों आदि का अमेरिका की राष्ट्रीय सुरक्षा से कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता जबकि भारत 55 प्रतिशत के लगभग ऐसा ही सामान अमेरिका को निर्यात करता है। मगर राष्ट्रपति ट्रम्प अपने देश के सुप्रीम कोर्ट के फैसले को शर्मिन्दा करने वाला बता रहे हैं, इससे उनकी मानसिक स्थिति का ही पता चलता है। पूरी दुनिया जानती है अमेरिका का लोकतन्त्र समूचे विश्व में सबसे खुला व पारदर्शी व जवाबदेह लोकतन्त्र है जिसमें वहां के निर्वाचित राष्ट्रपति को उसकी संसद द्वारा बनाये गये संवैधानिक अनुदेशों पर ही चलना होता है। यहां का सुप्रीम कोर्ट संसद द्वारा बनाये गये कानूनों की परख फिर संविधान की कसौटी पर करता है। अत: राष्ट्रपति ट्रम्प को अपने सुप्रीम कोर्ट के आदेशों का सम्मान करते हुए भारत के साथ हुए व्यापार समझौते की खुद ही तसदीक करनी चाहिए।

मुफ्तखोरी...

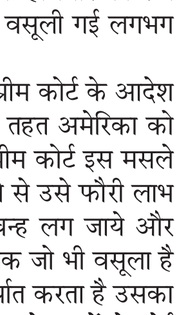
गीता पाढा

"मुफ्तखोरी इंसान को नाकारा और निकम्मा बना देती है,
और मुफ्त की रेवड़ियां इस चलन को और बढ़ावा देती हैं,,
देखा-देखी राज्य सरकारें
स्वयं को कर्जों के बोझ तले दबा लेती हैं,
चुनाव में विकास के नाम पर मुफ्त -मुफ्त यह नारे लगा लेती है,,
जनहित और जनलुभावन का यह भेद मिटा देती है,
और विकसित भारत के स्वप्न पर ग्रहण लगा देती है...।।"

असम में कांग्रेस-भाजपा क्या है गम?

मिर्च मसाला
त्रिदीब रमण
gossipguru.in

'क्या अजीब सफर है ये, सिर पर कड़ी धूप है और मुट्ठियों में जकड़ रखी कुछ छांव है
सरमाया लुट चुका है, मन बोझिल, तन शिथिल, फिर भी क्यों थकते नहीं पांव हैं'

असम में चुनाव सिर पर है, सो सियासी बाजीगरियों का दौर रोज-ब-रोज नई अंगड़ाइयां मार रहा है, अभी पिछले दिनों असम कांग्रेस के पूर्व सिरमौर भूपेन बोरा ने भगवा दामन थाम लिया। विश्वस्त सूत्रों के हवाले से खबर

मिली है कि बोरा को भाजपा के करीब लाने में असम के एक सीनियर पत्रकार की महत्ती भूमिका रही। यह भी कहा जाता है कि भाजपा संग बोरा की 'डील लॉक' कराने में इस पत्रकार महोदय ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, उन्होंने अपने फोन से पहली दफे बोरा की असम के चीफ से बात कराई। कहते हैं किसी भांति बोरा व उस भाजपा सिरमौर की पूरी बातचीत पत्रकार महोदय के फोन में रिकार्ड हो गई। जिसमें भाजपा के यह बड़बोले क्षत्रप बोरा से यह पूछते हुए सुनाई देते हैं कि 'आप अपनी पार्टी से और कितने प्रमुख लोगों को भाजपा ज्वॉइन करा सकते हैं?' उनसे जवाब में असम के एक निवर्तमान कांग्रेसी सांसद का नाम लिया जाता है, साथ ही यह भी बताया जाता है कि प्रदेश के कम से कम 4 कांग्रेसी विधायक भाजपा में आने को तैयार हैं, फिर इन विधायकों के नाम बताए जाते हैं, दूसरी ओर से कहा जाता है-'अरे इनमें तो दो मुसलमान एमएलए हैं, ये हमारे किस काम के, आप जरा सांसद वाली डील फाइनल कराइए।' अपना काम खत्म करने के बाद इस पत्रकार महोदय ने भाजपा के उसी बड़बोले क्षत्रप को फोन लगाया और कहा-'माय जॉब इज़ डन।' दूसरी ओर एक दंभ भरी आवाज़ में जवाब आया-' चिंता मत करो, तुम्हारा रेट तुम्हें मिल जाएगा।' हक्का-बक्का रह गए उस सीनियर पत्रकार ने इसे अपनी तौहीन समझी और माना जाता है कि उन्होंने तैश में आकर अपने फोन की सारी रिकॉर्डिंग असम कांग्रेस के बड़े नेता गौरव गोगोई को सौंप दी और कहा-'कांग्रेस के बड़े नेताओं की प्रैस कांफ्रेंस में यह पूरी रिकार्डिंग आप वहां मौजूद मीडिया को सुना देना, असम में सियासी बवाल मच जाएगा।' कहते हैं बड़े नेताओं को गोगोई ने वह रिकॉर्डिंग उन्हें सौंप दी, जब यह पूरी बातचीत सुनी तो दंग रह गए कि यहां कांग्रेस के नेता भी अपने रेट लगवा रहे हैं। सो, उन्होंने गौरव को सलाह दी कि 'फिलहाल इस मामले को ठंडे बस्ते में डाल देने में ही भलाई है अन्यथा इस रिकॉर्डिंग के बाहर आने से कांग्रेस की भी उतनी ही फजीहत होगी।'

जम्मू-कश्मीर में 'कारा हटाओ' अभियान उफान पर

जम्मू-कश्मीर कांग्रेस प्रमुख तारिक हामिद कारा के खिलाफ अब राज्य में बगावत ने आकार लेना शुरू कर दिया है, पिछले कोई डेढ़ वर्षों से कारा पर यही आरोप बार-बार लग रहे हैं कि वे राज्य में पार्टी को एकजुट रखने में अब तक नाकाम साबित हुए हैं। पिछले दिनों जम्मू-कश्मीर के कांग्रेसी नेताओं के दिल्ली पहुंचने का सिलसिला बदस्तूर जारी रहा, पहले तो ये राहुल गांधी से मिलना चाहते थे, पर राहुल इन दिनों काफी व्यस्त हैं, सो जब इन नेताओं का राहुल से मिलना संभव नहीं हो पाया तो ये कांग्रेस अध्यक्ष खड़गे के पास धमक पड़े, अपने 'कारा हटाओ, पार्टी बचाओ' का उद्घोष लेकर। अब खड़गे साहब की दुविधा यह है कि वे इस मामले में ज्यादा अपनी नाक नहीं घुसाना चाहते क्योंकि वे जानते हैं कि हामिद कारा राहुल गांधी की पसंद रहे हैं और राहुल ने ही उनका चयन जम्मू-कश्मीर प्रदेश अध्यक्ष के लिए किया था, अब पार्टी की जम्मू इकाई ने भी 'कारा हटाओ' अभियान में कंधा से कंधा मिला लिया है, इनकी मांग तो थोड़ी और अलहदा है, ये चाहते हैं कि जम्मू के किसी हिंदू लीडर को पार्टी अध्यक्ष बनाया जाए जिससे यहां भाजपा के मजबूत हिंदू आधार में सेंध लगाई जा सके। सनद रहे कि कभी जम्मू संभाग कांग्रेस का एक मजबूत आधार हुआ करता था, आखिरी बार कांग्रेस ने कोई हिंदू प्रदेश अध्यक्ष बनाया था वह भी महज़ कुछ समय के लिए, पर यह बात भी चार दशक पुरानी हो गई है। वहीं कारा से असंतुष्ट नेताओं का एक बड़ा वर्ग जम्मू-कश्मीर के एआईसीसी प्रभारी सैयद नासिर हुसैन से भी उतने ही नाराज़ हैं क्योंकि वे पिछले काफी समय से कारा विरोध की अनदेखी करते आ रहे हैं, वे बार-बार असंतुष्ट नेताओं के समक्ष बस यही जुमला दुहराते रहते हैं कि 'इन्हें थोड़ा वक्त और दे दो।' कारा पर आरोप है कि वे अध्यक्ष रहते कश्मीर में एक भी उल्लेखनीय पार्टी कार्यक्रम आयोजित नहीं कर पाए हैं। यह तो कारा के विरोधी भी जानते हैं कि बगैर राहुल गांधी की सहमति के कारा को यहां से रूखसत कर पाना नामुमकिन है। पर बिल्ली के गले में घंटी बांधे कौन, क्योंकि नासिर हुसैन जैसे नेताओं की राहुल के आगे मुंह खोलने की हिम्मत नहीं, असंतुष्ट नेताओं को राहुल मिलने का वक्त ही नहीं देते। सो, अब ले देकर सबकी निगाहें एआईसीसी महासचिव और कश्मीरी नेता जी.ए. मीर पर टिक आई हैं, जिनकी इन दिनों हाईकमान से ज्यादा बनती नहीं, पर वे चाहे तो डंके की चोट पर राहुल के आगे अपनी बात रख सकते हैं।

भाई की फिक्र में हरसिमरत

पंजाब के आने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर शिरोमणि अकाली दल और भाजपा में चुनावी तालमेल पर सहमति बन चुकी है। अब तक यह बात भाजपा और अकाली दल दोनों समझ चुके हैं कि जब तक हिंदू वोटरों का रूझान आम आदमी पार्टी से कम नहीं होगा प्रदेश में आप की संभावनाओं को धूमिल कर पाना मुश्किल कार्य है, अगर

हिंदू वोट एकजुट होकर भाजपा गठबंधन की झोली में आते हैं तो आगे की लड़ाई वहां त्रिकोणात्मक हो जाएगी। खास कर सिख व पंजाबी वोटर अकाली दल, कांग्रेस व आप में बंट सकते हैं। दलित वोटरों का स्वाभाविक रूझान इस दफे कांग्रेस की ओर पहले से दिख रहा है। अकाली-भाजपा गठबंधन की नई आधारशिला रखने का सबसे पहला क्रेडिट सुखबीर सिंह बादल को जाता है। सबसे पहले बादल भाजपा के बड़े नेता से मिलने दिल्ली पहुंचे और भाजपा के साथ मिलकर चुनाव लड़ने में अपनी सहमति दिखाई।

बड़े नेताजी को इस बात के लिए तैयार करने में भी कामयाब रहे कि 'अकाली दल इस गठबंधन का सीनियर पाटर्नर रहेगा और वे यानी सुखबीर गठबंधन के सीएम फेस रहेंगे और इस चुनाव में भाजपा अपना पूरा धन, बल व तंत्र झोंक देगी।' कहते हैं इस मुलाकात के बाद समझौते के प्रारंभिक स्वरूप पर सहमति बन गई।

सुखबीर जब लौट कर घर आए तो माना जाता है कि उनकी पत्नी हरसिमरत कौर बादल उनसे बेतरह नाराज़ थीं, क्योंकि सुखबीर ने अपने साले विक्रम मजीठिया की जमानत व रिहाई को लेकर बड़े नेता जी से कोई बात नहीं की थी। कहते हैं इसके बाद हरसिमरत कौर की तरफ से बड़े नेता से मिलने का समय मांगा गया, समय मुकर्रर हुआ और इस मुलाकात में हरसिमरत ने भाजपा नेता से अपने लिए बस एक ही फेवर मांगा कि 'गुड विल जेस्चर' के तहत उनके भाई विक्रम मजीठिया को बेल मिल जाए ताकि भाजपा-अकाली दल में फिर से एक नए रिश्ते की शुरूआत हो सके।' क्या यह महज़ इत्तफाक था कि इसके कुछ दिनों बाद ही मजीठिया बेल पर छूट कर जेल से बाहर आ गए।

क्या 1 मार्च को अमेरिका ईरान पर हमला बोल सकता है?

अमेरिका के सुप्रीम कोर्ट का निर्णय भले ही अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप के प्रतिकूल आया हो पर ट्रंप अपने पुराने तेवरों से टस से मस नहीं हो रहे। सूत्र बताते हैं कि 'अगर बातचीत अब भी फेल रही तो ट्रंप एक मार्च या उसी सप्ताह में ईरान पर स्ट्राईक का ऑर्डर दे सकते हैं।' इस बात की संभावना और भी बलवती होती जा रही है क्यों कि अमेरिका ने ईरान को पांच प्रमुख प्वाइंट्स से घेर लिया है और मिडिल ईस्ट में अमेरिकी फौजों की तैनाती अपने पूरे उफान पर है। ट्रंप ने अभी संकेत दिया है कि 'ईरान पर फिलहाल सीमित हमला होगा। जिसके केंद्र में उसके मिलिट्री बेस होंगे, अमेरिका ने अभी ईरान को समझौते पर दस्तखत करने के लिए 10 दिनों की मोहलत दी है। ईरान ने इस पर सोचने के लिए अभी चार दिनों का वक्त मांगा है। विषेशज्ञों का मानना है कि अमेरिका अपनी नेवी और एयर स्ट्राईक से 'टारगेट' हमला कर सकता है। अमेरिका चाहता है कि ईरान की मौजूदा लीडरशिप बेहद कमजोर हो, उसकी विदाई हो और उसकी जगह वहां लोकतंत्र की बहाली हो। वहीं एक संभावना यह भी जताई जा रही है कि वहां की मौजूदा लीडरशिप अमेरिका के आगे घुटनों पर आ जाए, अपनी पॉलिसी बदल ले और फिर सत्ता पर काबिज रहे। यह एक तरह का 'वेनिजुएला मॉडल' भी हो सकता है। पर विषेशज्ञ इस बात को लेकर आषंकित हैं कि इतने वर्षों बाद मध्य-पूर्व में इतने बड़े अमेरिकी जखीरे की तैनाती युद्ध की आशंका को ही बल देता है। अगर यह जंग छिड़ी तो दुनिया में 20 फीसदी गैस व तेल की सप्लाई ठप्प पड़ सकती है।

...और अंत में

हाल में ही चैन्नई में एक हाई प्रोफाइल शादी संपन्न हुई। इस शादी में बड़ी राजनीतिक हस्तियों और चमकते फिल्मी सितारों का भरपूर मंजर देखने को मिला। यह शादी थी आंध्र के पूर्व मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी के भतीजे साहिल रेड्डी की, जो जगन के चचेरे भाई वाईएस सुनील रेड्डी के बेटे हैं। दुल्हन भी कोई मामूली हस्ती नहीं थी, वह

मुरूगप्पा समूह के मालिक की बेटी हैं। चैन्नई के लीला पैलेस में संपन्न हुए इस विवाह समारोह में तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन अपने बेटे और राज्य के डिप्टी सीएम उदयानिधि स्टालिन के साथ मौजूद थे। फिर वहां फिल्म स्टार विजय की भी उपस्थिति दर्ज हुई जो शीघ्र ही अपनी नई राजनीतिक पारी की शुरूआत करने वाले हैं। विजय वहां काफी समय तक मौजूद रहे, खास कर स्टालिन की मौजूदगी में उनके वहां होने के कई सियासी निहितार्थ आंके जा सकते हैं। फिल्म स्टार सूरीया भी वहां पूरे वक्त मौजूद रहे। कुल मिला कर यह समारोह एक नए सियासी गठजोड़ की इबारत लिखने में जुटा रहा।

बच्चे रहें सुरक्षित

यह तथ्य हर कोई जानता है कि आज के बच्चे आने वाले कल का एक सुंदर भविष्य हैं और इन्हीं के मजबूत वर्तमान के दम पर हम एक शानदार भारत की तस्वीर देखते हैं लेकिन अहम बात यह है कि इन्हीं बच्चों की सुरक्षा हम सबकी बहुत बड़ी जिम्मेवारी बन जाती है। घर-परिवार-समाज में बच्चों को ज्यादा से ज्यादा महत्व दिया जा रहा है। उनका लालन-पालन बेहतर तरीके से किया जा रहा है और माता-पिता चाहे वह गरीब, मध्यम वर्गीय या अमीर क्यों न हो, ज्यादा से ज्यादा सुविधाएं देने की कोशिश में रहता है। बच्चों को शिक्षा और सुविधाओं के मामले में न केवल दिल्ली सरकार बल्कि राज्य सरकारें भी बहुत कुछ कर रही हैं। लेकिन मुश्किल उस समय आती है जब बड़ी संख्या में बच्चों के लापता होने की खबरें सोशल मीडिया पर वायरल होने लगती हैं। हकीकत यह है कि इससे आतंक फैल जाता है और माता-पिता चिंता करने लगते हैं। पिछले दिनों दिल्ली पुलिस ने बकायदा एक प्रैस कांफ्रेंस आयोजित करके लोगों को वायरल हो रही खबरों से सावधान रहने की अपील करते हुए तथ्य भी प्रस्तुत किया। पुलिस ने यह भी बताया कि घबराने की आवश्यकता नहीं है, फैक्ट चैक यही है कि चुनौतियां गंभीर हैं और अपने बच्चों पर हमें खुद नजर रखनी होगी और उनकी सुरक्षा खुद करनी होगी। सुबह, दोपहर, शाम बच्चों के स्कूली समय और उनके खेलने-कूदने के समय को लेकर एक नियम बनाकर उस पर चैक करना होगा।

हालांकि पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में अहम टिप्पणी करते हुए कहा है कि बच्चों के लापता केस में कहीं कोई नैटवर्क तो नहीं? यह सच है कि दिल्ली में लापता बच्चों की समस्या एक गंभीर और संवेदनशील सामाजिक मुद्दा है। देश की राजधानी होने के कारण दिल्ली में हर वर्ष बड़ी संख्या में बच्चों के गुम होने की

घटनाएं दर्ज की जाती हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की रिपोर्टों के अनुसार, दिल्ली में जहां बच्चों के लापता होने के सबसे अधिक मामले सामने आते हैं। पुलिस की जिम्मेदारी बढ़ रही है और वह बहुत कुछ कर भी रही है। देखा जाए तो लापता बच्चों के मामलों के पीछे कई कारण होते हैं। इनमें मानव तस्करी, बाल श्रम, भीख मंगवाने वाले गिरोह, घरेलू हिंसा, पारिवारिक कलह, गरीबी, और सोशल मीडिया के माध्यम से फुसलाकर ले जाना शामिल है। कई मामलों में बच्चों को नौकरी, मॉडलिंग या बेहतर जीवन का झांसा देकर दिल्ली जैसे महानगरों में लाया जाता है और फिर उनका शोषण किया जाता है। कुछ बच्चे घर में डांट-फटकार या अत्यधिक दबाव के कारण स्वयं भी घर छोड़ देते हैं। इसलिए पारिवारिक वातावरण प्रेम से भरपूर होना चाहिए। बहरहाल दिल्ली पुलिस ने लापता बच्चों को खोजने के लिए कई विशेष अभियान चलाए हैं। "ऑपरेशन मुस्कान" और "ऑपरेशन मिलाप" जैसे अभियानों के माध्यम से हजारों बच्चों को खोजकर उनके परिवारों से मिलाया गया है। पुलिस द्वारा विशेष किशोर इकाइयां बनाई गई हैं जो केवल बच्चों से संबंधित मामलों पर काम करती हैं। इसके अलावा, रेलवे स्टेशनों, बस अड्डों और भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में निगरानी बढ़ाई गई है क्योंकि ये स्थान बच्चों के गायब होने के प्रमुख केंद्र माने जाते हैं। लेकिन परिवारों को विशेषकर झुग्गी-बस्तियों में रहने वालों को बच्चों पर नजर जरूर रखनी चाहिए। सब कुछ सरकार पर तो छोड़ा नहीं जाना चाहिए। हमारी खुद की भी तो जिम्मेदारी बनती है। यद्यपि सरकार ने तकनीकी उपाय भी अपनाए हैं। "ट्रैकचाइल्ड" पोर्टल और "खोया-पाया" वेबसाइट के माध्यम से लापता और मिले हुए बच्चों की जानकारी ऑनलाइन उपलब्ध कराई जाती है। नागरिक भी इन प्लेटफॉर्म्स के जरिए सूचना दे सकते हैं। साथ ही चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर 1098 बच्चों की सहायता के लिए 24 घंटे उपलब्ध है। दिल्ली की बात करें तो यह सच है कि आज भी चुनौतियां बनी हुई हैं। कई मामलों में बच्चों की पहचान स्थापित करना कठिन होता है, विशेषकर जब वे बहुत छोटे होते हैं या किसी अन्य राज्य से लाए गए होते हैं। परिवारों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति भी खोज प्रक्रिया को प्रभावित करती है। कुछ मामलों में शिकायत दर्ज कराने में देरी भी समस्या को गंभीर बना देती है। मेरा यह मानना है कि इस समस्या के समाधान के लिए समाज की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। अभिभावकों को अपने बच्चों की गतिविधियों पर ध्यान देना चाहिए और उन्हें ऑनलाइन सुरक्षा के बारे में जागरूक करना चाहिए। स्कूलों में भी बच्चों को सुरक्षा, आत्मरक्षा और आपातकालीन संपर्क नंबरों की जानकारी दी जानी चाहिए। सामुदायिक सतर्कता, जागरूकता अभियान और तेज कानूनी कार्रवाई से ही इस समस्या पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सकता है। हमें यह मानना होगा कि लापता बच्चों की समस्या केवल कानून-व्यवस्था का विषय नहीं है, बल्कि यह समाज की सामूहिक जिम्मेदारी है। जब तक सरकार, पुलिस, परिवार और समाज मिलकर प्रयास नहीं करेंगे, तब तक इस गंभीर समस्या का पूर्ण समाधान संभव नहीं है। मिल-जुलकर काम करने से बच्चों की सुरक्षा रहेगी और भविष्य की इस विरासत की सुरक्षा हमारा पारिवारिक, नैतिक और सामाजिक कर्त्तव्य भी है।

इसी में है अन्नामलाई की भलाई

अन्नामलाई कभी तमिलनाडु में भाजपा के एक दमकते नक्षत्र थे, पर लगता है इन दिनों उनकी आभा को किंचित ग्रहण लग गया है। पूर्व पुलिस अधिकारी अन्नामलाई वैसे तो संघ के अब भी सबसे ज्यादा दुलारे हैं और भाजपा के संगठन महासचिव बीएल संतोष उनके सबसे बड़े पैरोकार बताए जाते हैं। इनको लेकर संतोष भाजपा नेतृत्व से अक्सर कहते रहते हैं कि 'अन्नामलाई से बड़ा हमारे पास तमिलनाडु में कोई दूजा नेता नहीं है।' लेकिन जबसे भाजपा ने अन्नामलाई की जगह नयनार नागेंद्ररन को प्रदेश भाजपा अध्यक्ष बनाया है, अन्नामलाई की नाराज़गी अपने पार्टी हाईकमान से बढ़ गई लगती है। अन्ना के न चाहने के बावजूद भी भाजपा ने इस चुनाव में अन्नाद्रमुक के साथ चुनावी गठबंधन कर लिया और महज़ 30 सीटों पर ही मान गए। पार्टी ने इन 30 में से 6 सीटों पर जीत दिलाने का जिम्मा अन्नामलाई को सौंपा था, पर अन्नामलाई ने अपने बीमार पिता के अस्पताल में होने का हवाला देकर इस जिम्मेदारी को स्वीकार करने से मना कर

दिया। बीते दिनों जब भाजपा के एक बड़े नेता तिरूचिरापल्ली पहुंचे तो उन्होंने अन्नामलाई को तलब कर उनकी भरपूर क्लास लगाई। कहते हैं बड़े नेता ने उनसे कहा कि 'आपने अपनी च्वॉइस की चार सीटें हमें बताई थी, जहां से आप चुनाव लड़ना चाहते हैं, पर हमने उन चारों सीटों का जमीनी सर्वेक्षण करवाया तो पता चला कि इनमें से किसी भी सीट पर आप जीतने की स्थिति में नहीं हैं। लीडर वही है जो खुद भी चुनाव जीत सके। आप दो चुनाव लड़े हैं, पर दोनों हार गए। हमने लोकसभा में आपको अपनी सबसे सुरक्षित सीट कोयंबटूर दी पर आप वहां भी चुनाव हार गए। केवल संघ की पैरवी और सोशल मीडिया में हीरो बनने से कोई नेता नहीं बन जाता।' इस पर अन्नामलाई ने कहा- 'मैंने भाजपा के लिए क्या नहीं किया, अपनी जमी-जमाई नौकरी तक कुर्बान कर दी।' बड़े नेता हंसे और बोले- 'तो क्या आप अपनी इसी कुर्बानी का सिला चाहते हैं? ठीक है हम आपको राज्यसभा में लेकर आ जाएंगे, पर यह सब पहले बताना न था।' **(एनटीआई)**

जम्मू, उधमपुर में 7 ड्रग तस्कर गिरफ्तार

जम्मू, (पंजाब केसरी): जम्मू-कश्मीर के जम्मू और उधमपुर जिलों में अलग-अलग स्थानों से मादक पदार्थ के सात कथित तस्करों को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि आर.एस. पुरा के निवासी बलविंदर कुमार और सनी कुमार को जम्मू शहर के गांधी नगर इलाके से गिरफ्तार किया गया और उनके पास से एक पिस्तौल, एक मैगजीन और 21 ग्राम हेरोइन बरामद की गई। उन्होंने बताया कि सांबा निवासी मोहम्मद इकबाल और अमित कुमार उर्फ जोगी को भी गांधी नगर से गिरफ्तार किया गया और उसके पास से एक पिस्तौल और 146 ग्राम हेरोइन जब्त की गई। अधिकारी ने बताया कि ये गिरफ्तारियां मादक पदार्थ के एक तस्कर के खुलासे के आधार पर की गईं।

पीएफआई के शिक्षा प्रभारी अशरफ मौलवी की जमानत याचिका खारिज

कोच्चि, (पंजाब केसरी): राष्ट्रीय अन्वेषण अभिकरण (एनआईए) की अदालत ने प्रतिबंधित संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) के शिक्षा विभाग के राष्ट्रीय प्रभारी अशरफ उर्फ करमन्ना अशरफ मौलवी की जमानत याचिका को खारिज कर दिया है। एनआईए ने जमानत याचिका का विरोध करते हुए आरोप लगाया था कि पीएफआई के राष्ट्रीय प्रभारी ने हथियार प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया था और आतंकवादी संगठन आईएसआईएस की विचारधारा का प्रचार किया था। विशेष एनआईए अदालत के न्यायाधीश एम. के. मोहनदास ने शुक्रवार को पीएफआई के शिक्षा विभाग के राष्ट्रीय प्रभारी और प्रतिबंधित संगठन से संबद्ध अखिल भारतीय इमाम परिषद के उपाध्यक्ष अशरफ उर्फ करमन्ना अशरफ मौलवी की जमानत याचिका खारिज कर दी। मौलवी पीएफआई की राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के संबंध में दर्ज मामले में दूसरा आरोपी है।

दिल्ली आर.एन.आई. नं. 40474/83
पंजाब केसरी
दिल्ली कार्यालय :
फोन आफिस: 011-30712200, 45212200,
प्रसार विभाग: 011-30712224
विज्ञापन विभाग: 011-30712229
सम्पादकीय विभाग: 011-30712292-93
मैगजीन विभाग: 011-30712330
फैक्स : 91-11-30712290, 30712384, 011-45212383, 84
Email: Editorial@punjabkesari.com
स्वत्वाधिकारी दैनिक समाचार लिमिटेड, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, नजदीक वजीरपुर डीटीसी डिपो, दिल्ली-110035 के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक अनिल शारदा द्वारा पंजाब केसरी प्रिंटिंग प्रैस, 2-प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से मुद्रित तथा 2, प्रिंटिंग प्रैस कॉम्पलैक्स, वजीरपुर, दिल्ली से प्रकाशित।

दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर का उद्घाटन आज

- इस कॉरिडोर के शुरू हो जाने से दिल्ली के सरायकांले खां से मेरठ पहुंचना असान हो जाएगा

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में आधुनिक, तेज और टिकाऊ परिवहन व्यवस्था को नई दिशा देने वाला 'नमो भारत' प्रोजेक्ट अपने अंतिम चरण में पहुंच गया है। 180 किमी प्रति घंटे की डिजाइन स्पीड और 160 किमी प्रति घंटे की अधिकतम परिचालन गति वाले इस हाई-स्पीड, हाई-फ्रीक्वेंसी रेल सिस्टम का उद्देश्य दिल्ली और आसपास के शहरों के बीच यात्रा को तेज, सुरक्षित और आरामदायक बनाना है।

औसत परिचालन गति 90 किमी प्रति घंटा रखी गई है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज (रविवार)को उद्घाटन करेंगे। इस कॉरिडोर के शुरू हो जाने से दिल्ली के सरायकांले खां से मेरठ पहुंचना असान हो जाएगा।दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर की कुल लंबाई 82.15 किमी है। इसमें 70 किमी एलिवेटेड और 12 किमी भूमिगत ट्रैक शामिल हैं। दिल्ली में लगभग 14 किमी और उत्तर प्रदेश में 68 किमी का हिस्सा है। परियोजना की कुल लागत 30,274 करोड़ रुपए है।

फंडिंग में एडीबी (लगभग 1 अरब डॉलर), एनडीबी (500 मिलियन डॉलर) और एआईआईबी (500 मिलियन डॉलर) का योगदान है। केंद्र सरकार की हिस्सेदारी 20 प्रतिशत, दिल्ली सरकार की 3.22 प्रतिशत और उत्तर प्रदेश सरकार की 16.78 प्रतिशत है।

फिलहाल, 55 किमी सेक्शन (न्यू अशोक नगर से मेरठ साउथ) के 11 स्टेशन चालू हैं। 16 स्टेशनों में जंगपुरा, सराय काले खां, न्यू अशोक नगर, आनंद विहार (अंडरग्राउंड), साहिबाबाद, गाजियाबाद, गुलधर, दुहाई, मुरादनगर, मोदी नगर नॉर्थ/साउथ, मेरठ साउथ, शताब्दी नगर, बेगमपुल (अंडरग्राउंड) और मोदिपुरम शामिल हैं। दुहाई और मोदिपुरम में डिपो बनाए गए हैं।

प्रधानमंत्री ने 8 मार्च 2019 को शिलान्यास किया था। 20 अक्टूबर 2023 को 17 किमी का प्राथमिक खंड राष्ट्र को समर्पित किया गया। 2024 में विस्तार के बाद 5 जनवरी 2025 को ट्रेन दिल्ली पहुंची। 22 फरवरी को न्यू अशोक नगर से सराय काले खां (5 किमी) और मेरठ साउथ से मोदिपुरम (21 किमी) खंड के उद्घाटन के साथ पूरा कॉरिडोर चालू होने की संभावना है।

वित्त वर्ष 2024-25 में भारत का औषधि निर्यात 9.4 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): वाणिज्य मंत्रालय ने शनिवार को कहा कि देश का औषधि निर्यात वर्ष 2024-25 में 9.4 प्रतिशत बढ़कर 30.47 अरब डॉलर हो गया और उद्योग की वर्ष 2026-27 में दहाई अंक में बढ़ने की मंशा है। अहमदाबाद में आयोजित एक 'चिंतन शिविर' के दौरान सरकारी अधिकारियों और दवा उद्योग के बीच निर्यात से जुड़े मुद्दों पर चर्चा हुई। यह क्षेत्र, जिसकी कीमत अभी लगभग 60 अरब डॉलर है, वर्ष 2030 तक 130 अरब डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।भारत मात्रा के हिसाब से औषधि क्षेत्र में तीसरे नंबर पर है। यहां से 200 से ज़्यादा बाजार में दवाएं निर्यात की जाती हैं।

60 प्रतिशत से ज़्यादा निर्यात कड़े नियामकीय बाजारों के लिए होता है।भारत के दवा निर्यात में अमेरिका का 34 प्रतिशत और यूरोप का 19 प्रतिशत हिस्सा है।मंत्रालय ने कहा, 'बातचीत में सरकार का ध्यान लगातार निर्यात में तेज़ी लाने के लिए हालात बनाने पर रहा।

इस सप्ताह सोने की चमक बढ़ी, चांदी फिर से 2.50 लाख के पार

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): सोने और चांदी की कीमतों में इस हफ्ते तेजी देखने को मिली है। सोने का दाम 2,300 रुपए प्रति 10 ग्राम से अधिक और चांदी की कीमतों में करीब 8,000 रुपए प्रति किलो की वृद्धि हुई है।

इंडिया बुलियन ज्वेलर्स एसोसिएशन (आईबीजेए) के अनुसार, 24 कैरेट सोने का दाम बढ़कर 1,55,066 रुपए प्रति 10 ग्राम हो गया है, जो कि पिछले हफ्ते इसी दिन 1,52,765 रुपए प्रति 10 ग्राम था। यह दिखाता है कि सोने की कीमतों में बीते एक हफ्ते के दौरान 2,301 रुपए प्रति 10 ग्राम की वृद्धि हुई है। 22 कैरेट सोने का दाम बढ़कर 1,42,040 रुपए प्रति 10 ग्राम हो गया है, जो कि पहले 1,39,933 रुपए था। वहीं, 18 कैरेट सोने की कीमत 1,14,574 रुपए प्रति 10 ग्राम से बढ़कर 1,16,300 रुपए प्रति 10 ग्राम हो गई है। सोने के साथ चांदी की कीमतों में भी तेजी बनी हुई है। चांदी की कीमत एक हफ्ते में 7,881 रुपए बढ़कर 2,50,314 रुपए प्रति किलो हो गई है, जो कि बीते हफ्ते 2,42,433 रुपए प्रति किलो थी।

हाजिर बाजार में 24 कैरेट के सोने ने 20 फरवरी को 1,55,066 रुपए प्रति 10 ग्राम का उच्चतम भाव छुआ। वहीं, न्यूनतम भाव 17 फरवरी को 1,51,195 रुपए प्रति 10 ग्राम का रहा। चांदी ने 20 फरवरी को 2,50,314 रुपए प्रति किलो का उच्चतम भाव छुआ। वहीं, न्यूनतम भाव 17 फरवरी को 2,32,955 रुपए प्रति किलो का देखा गया।

इस हफ्ते अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सोने और चांदी की कीमतों में तेजी देखने को मिली है। सोना और चांदी का दाम क्रमशः 5,080.90 डॉलर प्रति औंस और 82.343 डॉलर प्रति औंस था, जो कि एक हफ्ते पहले 5,046.30 डॉलर प्रति औंस और 77.96 डॉलर प्रति औंस था।

बीज मंत्र जाप से समस्या होगी दूर : महाब्रह्मर्षि

मोहड़ी, (पंजाब केसरी): मंत्र भावातीत है, मन से पार है। सारा जगत मन से है। जो जगत दिखाई देता है, महसूस होता है, वह मन से हट जाए तो सब खत्म हो जाएगा, विलीन हो जाएगा। सृष्टि की हर रचना का आधार बीज है। बीज का अर्थ है परमात्मा जो अपने आप में परिपूर्ण है। जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि जी ने कहा कि बीज मंत्रों को जागृत करने की आवश्यकता होती है जिस प्रकार से हम अपनी खाद्य सामग्री को प्रक्रिया के द्वारा तैयार करते हैं तो वह अपना रूप लेती है। मंत्र को जागृत करने के लिए निष्कीलन, उत्कीलन करने के बाद ही बीज मंत्र का जाप करना है। कालांतर में आपकी शारीरिक समस्या खत्म हो जाएगी फिर आप परमात्मा से एक हो जाएंगे। जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि जी ने कहा कि आज जिन असाध्य रोगों का निवारण आधुनिक विज्ञान नहीं कर पा रहा है उनका निवारण आयुर्वेद के अलौकिक विज्ञान दैवव्यपाश्रय से संभव हो गया है। जगद्गुरु महाब्रह्मर्षि जी ने कहा कि यदि आप अपने शरीर का भला चाहते हो तो मां दुर्गा के पाठ के बगैर घर से बाहर न निकलें।

जागरूकता ही साइबर अपराध से बचाव का प्रभावी कवच

जयपुर, (बनवारी कुमावत): सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस श्री सूर्यकांत ने कहा कि डिजिटल क्रांति ने अपार सुविधाएँ प्रदान की हैं तथा इससे शासन, सेवाएँ और संवाद पहले से कहीं अधिक सुलभ हुए हैं। परंतु इसके दुरुपयोग होने से चुनौतियां उत्पन्न होती है। ऐसी स्थिति में साइबर सुरक्षा केवल बैंक खातों की सुरक्षा नहीं, बल्कि संस्थागत विश्वास की रक्षा का भी विषय बन गई है। उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा कि न्यायपालिका अपनी भूमिका निभाने में कोई कसर नहीं छोड़ेगी, ताकि इस खतरे को देश से समाप्त किया जा सके। जस्टिस श्री सूर्यकांत राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर (आरआईसी) में 'साइबर सुरक्षा- जागरूकता, संरक्षण एवं न्याय तक समावेशी पहुंच' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि "डिजिटल अरेस्ट" जैसी कोई न्यायिक प्रक्रिया अस्तित्व में नहीं है। यह पूर्णतः धोखाधड़ी का मामला है। उन्होंने कहा कि दीर्घकालिक साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए नागरिक शिक्षा का एक अनिवार्य हिस्सा बनाना होगा। मुख्य न्यायाधीश ने राजस्थान में साइबर न्यायालय की स्थापना की घोषणा के लिए मुख्यमंत्री का आभार व्यक्त किया। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि डिजिटल युग में तकनीक के विस्तार के साथ साइबर अपराध की नई चुनौतियां भी सामने आई हैं। इससे बचाव के लिए नागरिकों में जागरूकता सबसे प्रभावी कवच है। उन्होंने कहा कि साइबर सुरक्षा हमारा सामूहिक संकल्प है तथा इस संकल्प को पूरा करने के लिए सरकार, न्यायपालिका और समाज को मिलकर काम करना होगा। श्री शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार साइबर अपराध पर नियंत्रण के लिए ठोस कदम उठा रही है। हमारी सरकार ने साइबर अपराधियों पर कठोर कार्रवाई सुनिश्चित करते हुए ऑपरेशन एंटी वायरस अभियान के तहत साइबर अपराधियों को जेल की सलाखों के पीछे पहुंचाया है। साथ ही, प्रदेश में साइबर अपराधों पर नियंत्रण एवं रोकथाम के लिए राजस्थान साइबर क्राइम कण्ट्रोल सेण्टर (आरफॉरसी) की स्थापना की जा रही है।

लक्खी फाल्गुन मेला शुरु

खाटूश्यामजी, (पंजाब केसरी): करोड़ों भक्तों की आस्था का केन्द्र बाबा श्याम का वार्षिक लक्खी फाल्गुन मेला शनिवार को शुरू हो गया है।आठ दिवसीय लक्खी मेले में देश के कोने कोने से लाखों श्याम इस वार्षिक महोत्सव में लखदातार का दीदार करने खाटूश्यामजी पहुंचेंगे।बाबा श्याम के इस मेले की तैयारियों को लेकर श्री श्याम मंदिर कमेटी व जिला प्रशासन अंतिम रूप दे रहा है।

बाबा श्याम के लक्खी मेले को लेकर देशभर के श्याम भक्तों में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है।बाबा श्याम की एक झलक पाने के लिए भक्तजन खाटू नगरी पहुंच रहे है। शनिवार को बाबा श्याम के लक्खी मेले का प्रथम दिन रहा और हजारों श्याम भक्तों ने बाबा श्याम के दरबार में मत्था टेककर खुशहाली की कामना की।

खाटू धाम में रैन बसेरा का लोकार्पण : कस्बे की प्रसिद्ध धार्मिक नगरी में नगरपालिका परिसर में श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए नवनिर्मित रैन बसेरा का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन कार्यक्रम में श्री श्याम मंदिर कमेटी के अध्यक्ष शक्तिसिंह चौहान, मेला मजिस्ट्रेट मोनिका सामोर तथा नगरपालिकाई ईओ ओमप्रकाश चौधरी ने फीता काटकर रैन बसेरा का लोकार्पण किया। रैन बसेरा का निर्माण 36.75 हजार रुपये की लागत से किया गया है। यह निर्माण भामाशाह श्री श्याम मंदिर कमेटी के सहयोग से पूर्ण हुआ जिससे फाल्गुनी मेला सहित वर्षभर आने वाले श्याम भक्तों को रात्रि विश्राम की बेहतर सुविधा उपलब्ध हो सकेगी। उद्घाटन के अवसर पर नगरपालिका प्रशासन की ओर से श्री श्याम मंदिर कमेटी के अध्यक्ष शक्तिसिंह चौहान का साफा पहनाकर अभिनंदन किया गया।

पतंजलि विश्वविद्यालय में "अभ्युदय" "योगधर्म से युगधर्म" आयोजित

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी): हरिद्वार स्थित पतंजलि विश्वविद्यालय के भव्य सभागार में वार्षिक सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक महोत्सव "अभ्युदय 2026" का आयोजन अत्यंत गरिमा, आध्यात्मिक उल्लास और राष्ट्रगौरव के साथ संपन्न हुआ। यह आयोजन प्राचीन गुरुकुल परंपरा और आधुनिक शिक्षा के सजीव समन्वय का प्रतीक बनकर उभरा। इस वर्ष अभ्युदय कार्यक्रम की थीम "योगधर्म से युगधर्म" रही। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। पतंजलि विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं ने "योगधर्म से युगधर्म" नाट्य प्रस्तुति प्रस्तुत कर कार्यक्रम में पधारे गणमान्य अतिथियों का मन मोह लिया।

इस अवसर पर पतंजलि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति स्वामी रामदेव जी ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि आप सब उस पतंजलि विश्वविद्यालय के विद्यार्थी हैं जो पूरी दुनिया का संस्कृति का सबसे बड़ा केंद्र है। आप सभी इस ऋषि संस्कृति के ध्वजवाहक बनकर इस अनुष्ठान को आगे बढ़ा रहे हैं।

मरीन लाइंस में 74 मंज़िला 'वन मरीना' लॉन्च

मुंबई, (पंजाब केसरी): व्हाई एम इंफ्रा ने अश्विन शेट ग्रुप के साथ रणनीतिक साझेदारी में साउथ मुंबई के मरीन लाइंस में 74 मंज़िला अल्ट्रा-लक्ज़री रेसिडेंशियल टावर 'वन मरीना' लॉन्च किया है। इंफ्रा ग्रुप के चेयरमैन सुहैल याकूब ने कहा, "वन मरीना सिर्फ एक लक्ज़री एड्रेस नहीं, बल्कि साउथ मुंबई की विरासत भूमि को विश्वस्तरीय विकास में बदलने की हमारी सोच का प्रतीक है।"मैनेजिंग डायरेक्टर आतिफ याकूब ने जोड़ा, "यह प्रोजेक्ट सीमित सप्लाई वाले प्रीमियम माइक्रो-मार्केट में दीर्घकालिक मूल्य सृजन का अवसर प्रदान करता है।" अश्विन शेट ग्रुप के चेयरमैन और एमडी अश्विन एन शेट ने कहा, "बीओमोंड और सीनर्जी के बाद सोबो में हमारी वापसी 'वन मरीना' के साथ डिज़ाइन उत्कृष्टता और दीर्घकालिक प्रतिबद्धता को दर्शाती है।"

नानावटी में कैंसर पर कार्यक्रम

मुंबई, (पंजाब केसरी): नानावटी मैक्स सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल ने अपने इंस्टीट्यूट ऑफ कैंसर केयर के माध्यम से हाल ही में 'कैंसर सिर्फ एक अल्पविराम है, पूर्ण विराम नहीं' (कैंसर इज जस्ट ए कोमा, नॉट ए फुलस्टॉप) विषय पर प्रेरक कार्यक्रम का आयोजन किया।यूरोलॉजिक एंड गायनेकोलॉजिक ऑन्कोसर्जरी के एचओडी एवं प्रिंसिपल डायरेक्टर डॉ. हेमंत तनगांवकर ने कहा कि कैंसर को लेकर फैले भ्रम दूर करने के लिए इस तरह के कार्यक्रम जरूरी हैं। उन्होंने कहा, 'लोगों का यहां आना यह दिखाता है कि कैंसर भी अन्य बीमारियों की तरह ही एक बीमारी है। अगर जल्दी पता लग जाए और सही समय पर इलाज किया जाए, तो इसे भी पूरी तरह ठीक किया जा सकता है।

आकाश इंस्टीट्यूट मुंबई का जेईई मेन में उत्कृष्ट प्रदर्शन

मुंबई, (पंजाब केसरी): आकाश एजुकेशनल सर्विसेज लिमिटेड के मुंबई स्थित छात्रों ने एक बार फिर जेईई मेन 2026 (सेशन 1) में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए क्षेत्र की निरंतर शैक्षणिक उत्कृष्टता को साबित किया है। छात्रों की उपलब्धियों पर टिप्पणी करते हुए चीफ अकादमिक एवं बिजनेस हेड डॉ. एच. आर. राव ने कहा, "मुंबई के हमारे छात्रों के असाधारण परिणाम उनकी शैक्षणिक प्रतिबद्धता और आकाश के सशक्त शैक्षणिक इकोसिस्टम का प्रमाण हैं। हमें उनके कठिन परिश्रम पर अत्यंत गर्व है।

गुमशुदा महिला की तलाश

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि यह महिला (फोटो में प्रदर्शित) जिसका **नामः** अंजुल सैनी, **पुत्रीः** विनोद कुमार सैनी, **निवासीः** WZ–496, सैनी मोहल्ला, पालम गांव, नई दिल्ली **उम्रः** 27 साल, **कदः** 5 फुट 5 इंच, **चेहराः** गोल, **रंगः** गोरा, **शरीरः** स्वस्थ, **पहनावाः** हरे रंग का स्वेटर, काले रंग का लोअर और पैरों में काले रंग के जूते पहने हुए, दिनांक **11.02.2026** को लगभग दोपहर 12:00 बजे, अपने घर के क्षेत्र, **थाना अन्तर्गत पालम गांव, नई दिल्ली** से लापता है। इस संदर्भ में **DD No. 83A, dated 12.02.2026 थाना अन्तर्गत पालम गांव, नई दिल्ली** में दर्ज किया गया है।

पुलिस द्वारा हर संभव कोशिश के बाद भी अब तक इस लापता महिला के बारे में कोई जानकारी या सुराग नहीं मिल पाया है।

यदि किसी भी व्यक्ति को इस महिला के बारे में कोई जानकारी या सुराग मिले तो अधोहस्ताक्षरी को निम्नलिखित पते पर सूचित करने की कृपा करें।

थाना प्रभारी
थाना– पालम गांव, नई दिल्ली
फोनः 011-25365981, 7065036227

ईमेल : cic@cbi.gov.in
वेबसाइट : http://cbi.nic.in
फैक्स : 011-24368639
दूरभाष : 011-24368638, 24368641

DP/2280/SW/2026

पीएम श्री स्कूल भवन का शिलान्यास

खाटूश्यामजी, (पंजाब केसरी): कस्बे में शिक्षा क्षेत्र को नई दिशा देने की पहल के तहत पीएम श्री राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के नवीन भवन का विधिवत शिलान्यास किया गया। इस अत्याधुनिक विद्यालय भवन का निर्माण श्री श्याम मंदिर कमेटी द्वारा लगभग 10 करोड़ रुपये की लागत से करवाया जाएगा।शनिवार को विद्यालय परिसर में आयोजित कार्यक्रम में मंदिर कमेटी के अध्यक्ष शक्तिसिंह चौहान ने सपत्नीक पूजा-अर्चना कर नवीन भवन की आधारशिला रखी। वैदिक मंत्रोच्चार के साथ आचार्य धर्मेंद्र शर्मा ने विधिवत पूजा संपन्न करवाई।इस अवसर पर उपखंड अधिकारी मोनिका सामोर, ईओ ओमप्रकाश चौधरी, प्रधानाचार्य बनवारीलाल कुमावत, श्याम सुंदर शर्मा सहित अन्य अतिथियों ने भी नींव रखकर निर्माण कार्य का शुभारंभ किया।

गुमशुदा/अपहृत की तलाश

संजना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि एक लडकी (फोटो में दर्शायी गयी) जिसका नाम **संजना पुत्री स्व. श्री राजू निवासी म. नं. 84, किशनपुरा बागपत मार्ग, मेरठ रोड उत्तर प्रदेश** जो चंद्र आर्य विद्या मंदिर छात्रावास, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली से **दिनांक 07.01.2026 को रात लगभग 09:30 बजे से** लापता/अपहृत है। इस संदर्भ में एक **एफआईआर नं./डीडी नं. 70/2026 अतर्गत धारा 137(2) भारतीय न्याय संहिता 2023 एक्ट, दिनांक 08.01.2026 थाना अमर कॉलोनी, दिल्ली** में दर्ज है। स्थानीय पुलिस ने इस लडकी का पता लगाने के लिए गंभीर प्रयास किए लेकिन अब तक कोई सुराग नही मिला है। जिसका हुलिया नीचे दिया गया है:–

लिंगः स्त्री, **आयुः** 15 वर्ष, **कदः** 5" फीट, **रंगः** गोरा, **चेहराः** गोल, **शरीरः** मजबूत, **पहनावाः** सूट व सलवार, काले रंग की जैकिट और पेरों में चप्पल पहने हुए है।

अगर किसी को इस गुमशुदा लडकी के बारे में कोई जानकारी मिले तो निम्नलिखित पते पर सूचित करें:–

थाना प्रभारी
थानाः अमर कॉलोनी, दिल्ली
फोनः 011–26412194
मोबाइलः 8750870931

वेबसाइटः http://cbi.nic.in
ई–मेलः cic@cbi.gov.in
टेली. नं.: 011-24368638/24368641
फैक्स नं.: 011-24368639

DP/1877/SE/2026

गुमशुदा की तलाश

लक्ष्मी

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है की एक महिला नाम **लक्ष्मी** पुत्री कुंज बिहारी, निवासी- मकान नंबर 33,34, तीसरी मंजिल, गली नंबर 8, हिमगिरी एन्क्लेव चंदर विहार, दिल्ली। उक्त महिला दिनांक 15.02.2026 रात 08:10 बजे से अपने घर से गुमशुदा है। इस संबंध में **डीडी संख्या 19ए दिनांक 16.02.2026 पुलिस थाना निहाल विहार, दिल्ली** में दर्ज है। स्थानीय पुलिस द्वारा इस गुमशुदा महिला की तलाश करने की कोशिश की गयी है लेकिन अभी तक कोई सुराग नहीं मिल पाया। इस गुमशुदा महिला का विवरण इस प्रकार है:

नामः लक्ष्मी, **लिंगः** महिला, **उम्रः** 19 वर्ष, **शरीरः** 5'5" ft, **रंगः** गोरा, **शरीरः** सामान्य, **चेहराः** गोल, **पहनावाः** गुलाबी कुर्ती और नीली जींस और सफेद जूते। यदि किसी के पास इस गुमशुदा महिला के संबंध में कोई जानकारी है, तो कृपया थाना प्रभारी/ निहाल विहार, दिल्ली को सूचित करें।

ई-मेल : cic@cbi.gov.in
फोनः 011-24368638, 24368641
फैक्स : 011-24368639

थाना प्रभारी
थाना, निहाल विहार, दिल्ली
फोन नं. 7042245698, 9868410686

DP/2269/OD/2026

पहचान की अपील

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि यह महिला (फोटो में प्रदर्शित) जिसका **नामः** स्वाति माथुर **पुत्रीः** सुधीर माथुर **पताः** पुराना बी–20, नया बी–961ए, प्रथम तल, न्यू अशोक नगर, दिल्ली **उम्रः** 30-40 साल, **लिंगः** महिला, **कदः** 5 फुट, **चेहराः** गोल, **शरीरः** पतला **रंगः** सांवला, **पहनावाः** ब्लैक कलर की टी–शर्ट और अंडर वियर पहने हुए, **दिनांक 13.02.2026** को 961 1 चर्च के पास, बी ब्लॉक, न्यू अशोक नगर दिल्ली में मृत पायी गया, **थाना अन्तर्गत न्यू अशोक नगर, दिल्ली**

इस संदर्भ में **DD No.57A, दिनांक 13.02.2026, थाना अन्तर्गत न्यू अशोक नगर, दिल्ली** में दर्ज है।

हर संभव कोशिश के बाद भी अब तक इस मृतक महिला के बारे में कोई जानकारी या सुराग नहीं मिल पाया है।

यदि किसी भी व्यक्ति को इस मृतक महिला के बारे में कोई जानकारी या सुराग मिले तो अधोहस्ताक्षरी को निम्नलिखित पते पर सूचित करने की कृपा करें।

थाना प्रभारी
थाना न्यू अशोक नगर, दिल्ली
फोनः 011-22610839, 8750870631

DP/2296/ED/2026

लापता/अगवा की तलाश

लक्ष्मी कुमारी

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि एक लड़की जिसका **नामः** लक्ष्मी कुमारी, **पुत्रीः** कामेश्वर, **पताः** म नं. 1232, गली नं. 12, मटके वाली गली, कापसहेड़ा, नई दिल्ली, **लिंगः** लड़की, **उम्रः** 14 साल, **कदः** 4'7", **रंगः** गोरा, **शरीरः** सामान्य, **चेहराः** गोल, **पहनावाः** स्कूल की ड्रैस व पैरों में स्कूल के जूते पहने है, जो दिनांक 16.02.2026 से अपने घर से लापता/अगवा है। इस बाबत **FIR No. 102/26 U/s 137(2) भारतीय न्याय संहिता, 2023, दिनांक 16.02.2026, थानाः कापसहेड़ा, नई दिल्ली** में दर्ज है।

स्थानीय पुलिस द्वारा हर संभव कोशिश के बाद भी इस लापता/अगवा लड़की के बारे में कुछ मालूम नहीं हो पाया है। अगर किसी को भी इसके बारे में कोई जानकारी मिले तो कृपया निम्नलिखित पर सूचित करें।

फोनः 011-24368638, 24368641
वेबसाईटः http://cbi.nic.in
ई–मेलः cic@cbi.gov.in
फैक्सः 011-24368639

थानाध्यक्ष
थानाः कापसहेड़ा, नई दिल्ली
फोनः 011–25063758, 25066105
7065036226

DP/2176/SW/2026

अर्थजगत

मिलों में मांग बढ़ने से गेहूं और बासमती चावल में उछाल

नई दिल्ली, (एनएनएस) फ्लोर मिलों की मांग बढने तथा बिकवाली कमजोर होने से गेहूं 10 रुपए बढ़कर मिल डिलीवरी 2710/2715 रुपए एवं चक्की पहुंच के भाव 2718/2720 रुपए प्रति क्विंटल हो गए। बासमती चावल की कीमते भी ग्राहकी निकलने से मजबूत रही।

कल क्या होगा?

सोमवार फाल्गुन सुदी षष्ठी को बारीक चावल, ग्वार, ग्वारगम, गेहूं, ढ़ैचा, जौ, जई, देशी चना, काबुली चना, मसूर, वनस्पति घी, सरसों, सोयाबीन, बिनौला एवं इसके तेल, पिस्ता, हल्दी, कालीमिर्च, गोंद, अजवायन, मगज तरबूज, बेलगिरी, काजू, छुहारा, जायफल, जावित्री, सौंफ, कमरकस, कॉपर, निकिल, पीतल, जस्ता, गुड़-चीनी में लाभ तथा लोबिया, पाम ऑयल, मूंग, उड़द, तुवर, लौंग, दालचीनी, सौंठ, बड़ी इलायची, अखरोट, छोटी इलायची, गोला, पोस्तदाना, बारदाना, देशी घी, दूध पाउडर, सोना-चांदी, सीसा, टिन में हानि की संभावना है। भाग्यांक 1-2-7-8 है। यात्रा विचार- पश्चिम दिशा की ओर 10.06 बजे पूर्वाहन के बाद यात्रा शुभ होगी।

अनाज-दाल (भाव प्रति क्विं.): गेहूं: एमपी देशी 3700/3900, दड़ा (मिल पहुंच) 2710/2715, चक्की (पहुंच) 2718/2720, आटा चक्की (10 किलो) (जीएसटी सहित) 320/330, रोलर फ्लोर मिल आटा (50 किलो) 1510/1520, मैदा (50 किलो) 1530/1540, सूजी (50 किलो) 1590/1600, चोकर (48 किलो)1195/1200, चावल: बासमती लालकिला 14200, स्वाद 10300, शरबती सेला 5300/5400, स्टीम 6400/6500, (1121 नं.) चावल सेला 8500/8600, स्टीम 9400/9500, सोर्टेक्स 9700/9800, (1509 नं.) चावल सेला 7700/7800, स्टीम 8400/8500, बासमती (1718) सेला 8300/8400, चावल 1401 स्टीम 8700/8800, परमल कच्चा 3600/3700, ब्रोकन (25 प्रश.) 3350/3400, वंड 3700/3800, पीआर- (11) सेला 4000/4100, आईआर (8)3200/3250, बाजरा: कैटलफीड 2025/2050, ज्वार: पीली 2200/2400, सफेद 2900/3000, मक्की: एमपी 1850/2000, बिहार 2050/2100, जौ: 2200/2250, उड़द कच्चा: यूपी 7600/7800, रंगून एफएक्यू 8225/8250, एसक्यू 8800/8825, दाल उड़द: छिलका (लोकल) 9800/10600, बढिय़ा 11300/11800, धोया लोकल 10000/10300, बढिय़ा 11500/11900, मूंग कच्ची: राजस्थान 5900/8300, यूपी/बिहार 7100/7800, एमपी 6900/7600, दाल मूंग: छिलका 9200/9800, बढिय़ा 10500/11800, मूंग धोया: लोकल 8800/10200, बढिय़ा 11200/11700, मसूर कच्ची: छोटी 6500/7300, मोटी विदेशी 5650/5660, देशी बिल्टी 6375/6400, दाल मसूर: लोकल 6700/7500, बढिय़ा 8000/9000, मलका: लोकल 6500/6700, बढिय़ा 6900/8000, मोठ 4800/4850, अरहर: रंगून 8300/8325, देशी कर्नाटक 8600/8700, दाल अरहर: दड़ा 10600/10800, पटका 11200/11800, चना (खड़ी मोटर) राजस्थान 5800/5825, आस्टेरलिया 5750/5760, चनादाल: लोकल 6475/6550, बढिय़ा 6650/6800, बेसन (35 किलो) (जीएसटी अतिरिक्त): एग्रोप्योर 2580, राजमा चित्रा: चीन 10400/10600, ब्राजील इंडियन 8500/8600 पुणे-भूटान 8000/8100, काबली चना: छोटा 5400/5500, मीडियम 5800/6100, मोटा 8500/9000, लोबिया: ब्राजील 7100/7200, लंदन 7500/7700 , मटर: सफेद देशी &, विदेशी 3950/4050, हरी मटर देशी.

चीनी मिल डिलीवरी: प्राइवेट मिलें (जीएसटी अतिरिक्त): अफजलगढ़ 4020, सिंभावली 4060, शामली 4040, मोदी 4050, देवबंद 4145, किनौनी 4195, बुढ़ाना 4040, खतौली 4150, मवाना 4036, दौराला 4160, अगौता 4010, धामपुर 4040, बुंदकी 4020, हाजिर 4350/4500.

गुड़-शक्कर: गुड़ पेड़ी 4000/4100, चाकू 4200/4300, ढैया 4400/4500, शक्कर 4600/4700, खांडसारी 5200/5300.

तिलहन और तेल-तिलहन: तिलहन: सरसों 6600/6650, खली एक्सपेलर: सरसों 2700/2850, बिनौला 3700/3850, डिऑयल्ड एक्सटेरक्शन (टन): राइसब्रान कंटीन्यूस 13500/13600, सरसों 22000/22500, सोयाबीन पीला 43000/43500, सूरजमुखी 23800/24000, मूंगफली (40-45 प्रश.) 28000/30000, राईसब्रान (प्रति यूनिट) 165/166, खाद्य तेल (जीएसटी अतिरिक्त): मूंगफली साल्वेंट रिफाइंड (टीन) 2700/2950, सरसों तेल (टीन) 2400/2650, सरसों एक्सपेलर 13850, तिल तेल 14000, सोयाबीन रिफाइंड मिल डिलीवरी 14300, सोया रिफाइंड (टीन) 2200/2300, सनफ्लावर 2400/2550, बिनौला मिल डिलीवरी 12900, चावल तेल पंजाब 11300, गोला तेल (टीन) 4800/4900, अखाद्य तेल: राइस फैट्ांटी 9800/9850, सोया एसिड ऑयल 8600/8650, अरंडी 14100/14200.

लोहा व इस्पात : (प्रति टन)जीएसटी पेड सरिया: कामधेनु: (8 एमएम) 67400, (10 एमएम) 66200, (12 एमएम) 63800, (16-25 एमएम) 65000, कामधेनु पीएएस-10000 (पीस): (8 एमएम) 391, (10) 600, (12) 848, (16) 1508, (20 एमएम) 2358, (25 एमएम) 3681, अम्बा शक्ति -500 एसडी: (8 एमएम) 66200, (10 एमएम) 64400, (12 एमएम) 63500, (16-25 एमएम) 64100, (32 एमएम) 63800, अम्बा शक्ति-ट्राईकोर (8 एमएम) 66100, (10) 64200, (12) 63300, (16-25) 63600, (32) 63200, केवीएस टीएमटी बार (8 एमएम) 66400, (10) 65900, (12) 63200, (16-25) 65500, (28-32) 62800, टीएमटी: जयभारत: (8 एमएम) 69100, (10 एमएम) 67900, (12 एमएम) 65500, (16-25 एमएम) 66700, अनमोल-500 एसडी: (8 एमएम) 69100, (10 एमएम) 67900, (12 एमएम) 65500, (16-25 एमएम) 66700, एंगल: राना (जीएसटी अतिरिक्त) (50&5) 45000, केवीएस-एमएस (35&5) 48000, (40&5/6) 48500, (50&5) 49000, (50&6) 49500, (65&5/6) 50000, जयभारत: (50&5 से 75&10) 49000, अनमोल: 50000, चैनल: राना (जीएसटीअतिरिक्त) 46000, एमएस (केवीएस) (75&40) (100&50) 49500, जयभारत 52000, अनमोल 52000, गार्डर (ज्वाइस्ट): जयभारत 51500, अनमोल 51500, टी-आयरन: राना 48000, (बिलट): (ढाई से तीन इंच) 39500, (साढ़े तीन इंच) 40000, (चार इंच) 40500, (पांच इंच) 41000, (छ: इंच) 41000, स्क्रैप: पुरानी 37500, मैल्टिंग स्क्रैप 38500, इंगट 45500, राउंड 52000.

अलौह धातु : (किलो/जीएसटी अतिरिक्त): एंटीमनी: चीन &, कैडमियम: रॉड &, मैक्सिको &, प्लेट &, लैड (सीसा): बैट्री सफेद 112, बैट्री काला 94, देशी मुलायम 189/207, देशी सख्त (एक-डेढ़ प्रतिशत) 199/206, चार प्रतिशत 207/217, पी.पी.&, गन मैटल स्क्रैप: लोकल 651, मिक्स 677, जालंधर 693, ब्रास (पीतल): हनी 692/732, रेडिएटर देशी 532, रेडिएटर विदेशी 532, चादरी देशी 680/716, पुर्जे स्क्रैप 652/692, टिन (रांग): इंगट अफ्रीका 4450, इंडोनेशिया 4500, जिंक (जस्ता): इंगट (पटरा) एचजेडएल 332, एजेड 378, आई जेड 334, आईजे 333, पीएमआई 289, ड्रास (ढीमा) 255, निकिल कैथोड: रसियन- (4&4) 1570, (8&8) 1575, (4&24) 1580, नार्वे (4&4) 1590, (4&24) 1595, कॉपर (तांबा): आरमेचर प्लांट 1120, भट्ठी 1118, सीसी 1225, एल्यूमीनियम: सीजी इंगट 311, शीट कटिंग 276, वायर स्क्रैप 281, बर्तनफूट 233.50, पुर्जाफूट 215, रॉड: लोकल 285, कम्पनी 324

कार्रवाई • भूमिका बिल्डर के घर व कार्यालय पर छापे

कई संदिग्ध खातों को सीज किया, लेनदेन की जांच होगी

भास्कर न्यूज | फरीदाबाद

भूमिका बिल्डर के घर व कार्यालय पर चल रही आयकर विभाग की कार्रवाई शुक्रवार देर रात समाप्त हो गई। इस दौरान आयकर विभाग की टीम ने बिल्डर के बैंक खातों की गहन जांच कर कई संदिग्ध खातों को सीज कर दिया। अब जांच पूरी होने तक इन खातों से किसी भी प्रकार का लेनदेन नहीं हो सकेगा।

सूत्रों ने बताया कि आयकर विभाग की टीम ने कार्रवाई के दौरान शुक्रवार देर रात बिल्डर से जुड़े वित्तीय दस्तावेज, प्रॉपर्टी डील के रिकॉर्ड, निवेश से संबंधी कागजात और इलेक्ट्रॉनिक डाटा को कब्जा में लेकर जांच की। अंतिम चरण में टीम ने बैंकिंग लेनदेन की पड़ताल पर विशेष ध्यान दिया। जांच में कई ऐसे खाते सामने आए, जिनमें बड़े स्तर पर नकद जमा और संदिग्ध ट्रांजेक्शन पाया गया। बताया जा रहा है इन खातों के माध्यम से कथित रूप से अघोषित आय के लेनदेन की आशंका जताई जा रही है। इसी आधार पर विभाग ने संबंधित खातों को सीज करने की कार्रवाई की है। फिलहाल विभाग ने कुछ भी बताने से इनकार कर दिया है। विभागीय सूत्रों ने बताया कि बैंक प्रबंधन को भी निर्देश दिया गया है कि जांच पूरी होने तक इन खातों में कोई निकासी या पैसा ट्रांसफर न होने दिया जाए।

संभावित टैक्स चोरी का होगा आकलन

भूमिका बिल्डर का वह आफिस जहां आयकर छापे चले।

कार्रवाई के दौरान आयकर विभाग की टीम ने बिल्डर और उसके करीबी सहयोगियों से भी लंबी पूछताछ की। सूत्रों के मुताबिक पूछताछ में कई वित्तीय लेनदेन और निवेश से जुड़े महत्वपूर्ण सुराग मिले हैं, जिनकी आगे जांच की जाएगी। साथ ही कुछ दस्तावेजों को विभाग अपने साथ ले गया है, जिनका विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा। आयकर विभाग के अधिकारियों ने आधिकारिक तौर पर कोई बयान जारी नहीं किया है, लेकिन सूत्रों का कहना है कि प्रारंभिक जांच में बड़ी मात्रा में वित्तीय अनियमितताओं के संकेत मिले हैं। विभाग अब जब्त किए गए दस्तावेजों और डिजिटल डाटा की जांच कर वास्तविक कर देनदारी और संभावित टैक्स चोरी का आकलन करेगा। फरीदाबाद में लगातार हो रही कार्रवाई से रीयल एस्टेट क्षेत्र में हड़कंप मचा हुआ है। पिछले हफ्ते भी एक बिल्डर के खिलाफ छापेमारी हुई थी। उसमें भी बड़े पैमाने पर गड़बड़ी सामने आई थी।

सड़क पर दौड़ रही कार में अचानक लगी आग

भास्कर न्यूज | फरीदाबाद

चंदावली से मोहना गांव की ओर जाने वाली सड़क पर एक कार में अचानक आग लग गई। घटना रात करीब 9 बजे की है। आग इतनी भीषण थी कि कुछ ही मिनट में पूरी कार जल गई। कार से आर्यन नामक युवक फरीदाबाद से मोहना गांव की ओर जा रहा था। रास्ते में अचानक कार के इंजन से धुआं निकलने लगा। युवक ने तुरंत कार को सड़क किनारे खड़ा कर नीचे उतर गया। इसके बाद कुछ ही देर में इंजन में आग लग गई। देखते ही देखते आग पूरी गाड़ी में फैल गई। युवक ने तुरंत डायल 112 और फायर ब्रिगेड को सूचना दी। इस दौरान वहां मौजूद लोगों ने आग बुझाने की कोशिश की, लेकिन वे इसमें सफल नहीं हुए। इसके बाद आईएमटी फायर ब्रिगेड स्टेशन से एक गाड़ी मौके पर पहुंची और दमकल कर्मियों ने आग को बुझाया।

एक्शन • छांयसा व दुरेंची गांव में छापेमारी अभियान

नाबालिग मेडिकल प्रैक्टिस करते हुए मिला, पुलिस के हवाले किया

भास्कर न्यूज | पलवल

स्वास्थ्य एवं पुलिस विभाग ने शनिवार को छांयसा और दुरेंची गांव में छापेमारी अभियान चलाया। यह कार्रवाई गांव में झोलाछाप कथित डॉक्टरों और बिना लाइसेंस के चल रहीं दवा दुकानों के खिलाफ की गई। संयुक्त छापेमारी के दौरान दुरेंची गांव में एक क्लीनिक पर छापा मारा गया। जहां नाबालिग मेडिकल प्रैक्टिस करते पकड़ा गया। आरोपी को पुलिस के हवाले कर दिया गया।

जानकारी के अनुसार हथीन के एसडीएम अप्रितम सिंह ने डीसी डॉ. हरीश कुमार वशिष्ठ के निर्देश पर हथीन के एसएमओ डॉक्टर संजय शर्मा को छापेमारी अभियान के लिए ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया। छापेमारी दस्ते में पीएचसी छांयसा के इंचार्ज मेडिकल अफसर डा. देवेंद्र जाखड़, सीएचसी हथीन के डा. इम्तियाज खान, आईए पवन कुमार एवं पुलिस अधिकारी शामिल थे। छापे के दौरान गांव दुरेंची में 17 वर्षीय नाबालिग बिना शैक्षणिक प्रमाणपत्र एवं बिना रजिस्ट्रेशन के मेडिकल प्रैक्टिस करते पकड़ा गया। आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की जा रही है। आरोपी को पुलिस के हवाले कर दिया गया। एसएमओ डा. संजय शर्मा ने बताया कि छांयसा गांव में छापेमारी की भनक लगते ही अधिकांश प्राइवेट मेडिकल प्रैक्टिशनर दुकानें बंद कर भूमिगत हो गए।

पलवल. दुरेंची गांव में क्लीनिक पर कार्रवाई करती स्वास्थ्य विभाग की टीम।

घर-घर सर्वे अभियान के तहत 2401 लोगों की स्क्रीनिंग: छांयसा गांव में स्वास्थ्य विभाग द्वारा चलाए जा रहे विशेष जांच अभियान के तहत अभी तक 1028 मरीजों की ओपीडी की गई। स्वास्थ्य विभाग के अनुसार हेपेटाइटिस ए एवं ई, लेप्टोस्पायरोसिस और स्क्रब टाइफस के 60 सैंपल लिए गए, जिनमें कोई भी पॉजिटिव नहीं पाया गया। कुल 1102 सैंपल एकत्र किए गए हैं। हेपेटाइटिस-बी की पुष्टि के लिए 11 और एचसीवी (हेपेटाइटिस-सी) के 40 ब्लड सैंपल जांच के लिए भेजे गए हैं, जिनकी रिपोर्ट आनी बाकी है। बुखार की जांच के लिए अब तक 52 ब्लड स्लाइड तैयार की गई हैं, जिनमें पीवी/पीएफ का कोई पॉजिटिव केस नहीं मिला। स्वास्थ्य टीमों ने घर-घर सर्वे अभियान के तहत 2401 लोगों की स्क्रीनिंग की है।

कार की टक्कर से बैंक मैनेजर की मौत, दो बच्चों के थे पिता

फरीदाबाद | सूरजकुंड रोड पर शुक्रवार रात तेज रफ्तार कार की टक्कर से एक निजी बैंक के मैनेजर की मौत हो गई। उनकी पहचान संजय कॉलोनी निवासी तरुण चौहान के रूप में हुई है। हादसे के दौरान वह स्कूटी से घर लौट रहे थे। सूरजकुंड थाने की पुलिस कार जब्त कर आरोपी की तलाश कर रही है।

पुलिस के अनुसार तरुण संजय कॉलोनी में परिवार के साथ रहते थे। उनके परिवार में पत्नी और दो बच्चे हैं। वह एक निजी बैंक में मैनेजर थे। उनकी बैंक की शाखा सूरजकुंड मार्ग स्थित एक मॉल में है। हादसे के दौरान वह स्कूटी से घर लौट रहे थे। इस दौरान मानव रचना यूनिवर्सिटी के पास तेज रफ्तार कार ने स्कूटी को टक्कर मार दिया। इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें नजदीकी अस्पताल ले जाया गया। जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया गया।

सिंगापुर की आईटी कंपनी में जॉब के नाम पर ठगी, अरेस्ट

फरीदाबाद | सिंगापुर की आईटी कंपनी में नौकरी दिलाने के नाम पर 2.41 लाख से अधिक की ठगी के मामले में साइबर थाना सेंट्रल की टीम ने मास्टर माइंड यूपी के बरेली निवासी तुषार (24) को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने उसे कोर्ट में पेश किया, जहां से उसे चार दिन के रिमांड पर भेज दिया गया। पुलिस प्रवक्ता के अनुसार इस्माइलपुर निवासी व्यक्ति ने साइबर थाना सेंट्रल में दी शिकायत में कहाकि 11 अगस्त 2025 को उनके पास एक फोन आया। काल करने वाले ने अपने को एशिया कंसल्टेंट से बताते हुए कहाकि सिंगापुर की आईटी कंपनी में जॉब का आफर है। फिर पीड़ित का ऑनलाइन मीटिंग के माध्यम से साक्षात्कार लिया गया। ठगों ने प्रोफाइल वेरिफिकेशन एंव वीजा प्रोसेसिंग के नाम पर 2,41,103 रुपए विभिन्न खातों में ट्रांसफर करा लिए।

एमवीएन यूनिवर्सिटी में विद्यार्थियों ने गीत-संगीत से समां बांधा

पलवल | युवा उत्साह, सांस्कृतिक विविधता और तकनीकी नवाचार के संगम के साथ एमवीएन यूनिवर्सिटी में दो दिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। उत्सव का शुभारंभ कुलपति डॉ. अरुण गर्ग, उपकुलपति डॉ. एनपी सिंह, कुलसचिव डॉ. योगेंद्र सिंह एवं सभी विभागों के डीन ने दीप प्रज्ज्वलित कर लिया। इस महोत्सव के तहत 50 से अधिक सांस्कृतिक एवं तकनीकी प्रतियोगिताएं हुईं। इनमें समूह गायन, नाट्य प्रस्तुति, युगल एवं लोक नृत्य, नुक्कड़ नाटक, पोस्टर निर्माण, स्केचिंग, स्लोगन लेखन, वेब पेज डिजाइनिंग, ऐप डिजाइनिंग तथा प्रोग्रामिंग क्विज प्रमुख रहीं। महोत्सव में पलवल, फरीदाबाद, मथुरा और नोएडा सहित लगभग 20 शिक्षण संस्थानों ने भाग लिया।

एनएच पर सड़क हादसे में तीन की मौत, वाहन चालकों पर केस

पुलिस ने केस दर्ज कर शव पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंपा

भास्कर न्यूज | पलवल

नेशनल हाईवे-19 पर सड़क दुर्घटनाओं में तीन लोगों की मौत हो गई। संबंधित थानों की पुलिस ने केस दर्ज कर पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिए। देवली गांव निवासी महेंद्र सिंह ने शिकायत में कहाकि उनके 50 वर्षीय चाचा धर्मवीर 20 फरवरी को देर शाम बाइक से जा रहे थे। जब वे करमन बार्डर से आगे पहुंचे तो रोड पर खड़े ट्रक से उनकी बाइक टकरा गई। इससे उनकी मौत हो गई।

इसी तरह यूपी के इटावा जिले के कोटी शेरपुर गांव निवासी जयवीर सिंह ने शिकायत में कहा कि वह गाइड का काम करते हैं। 20 फरवरी को वह और उनके साथी एटा जिले के खेड़ा गांव निवासी भजनलाल ट्रकों के इंतजार में गदपुरी टोल पर खड़े थे। इसी दौरान भजनलाल को किसी वाहन ने कुचल दिया। जिससे उसकी मौत हो गई।

इसी तरह यूपी के कन्नौज जिले के खुरमपुर निवासी प्रेम ने शिकायत में कहा कि वह पृथला-ततारपुर रोड स्थित कंपनी में नौकरी करते हैं। उनका दोस्त कानपुर निवासी वीरेंद्र कुमार अकसर उनसे मिलने कंपनी में आता था। 19 फरवरी को कंपनी के कर्मचारी ने बताया कि आपका दोस्त घायलावस्था में पृथला फ्लाईओवर के पास पड़ा है। वह मौके पर पहुंचे और उसे जिला अस्पताल ले गए। वहां से उसे हॉयर सेंटर रेफर कर दिया गया। लेकिन रास्ते में ही वीरेंद्र की मौत हो गई। पुलिस ने सभी आरोपी वाहन चालकों के खिलाफ केस दर्ज कर पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिए।

पति ने गोली मारकर की पत्नी की हत्या, जांच जारी

भास्कर न्यूज | फरीदाबाद

बसंतपुर गांव की सनलाइट कालोनी में शुक्रवार रात एक व्यक्ति ने सरेराह पिस्तौल से तीन गोली मारकर पत्नी की हत्या कर दी। मृतका की पहचान 32 वर्षीय संगीता के रूप में हुई है। वह काफी समय से अपनी दो बेटियों के साथ पति से अलग रह रही थी। उसका दिल्ली की साकेत कोर्ट में पति से तलाक और मारपीट का मामला विचाराधीन था। पल्ला थाना पुलिस हत्या का मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश में लगी है।

पुलिस के अनुसार संगीता सनलाइट कालोनी में 11 और पांच वर्षीय दो बेटियों के साथ रहती थी। उसकी करीब 12 साल पहले शिव इंक्लेव पार्ट-दो निवासी दिलीप यादव के साथ लव मैरिज हुई थी। मनमुटाव के चलते पति-पत्नी अलग रह रहे थे। दोनों का दिल्ली की साकेत कोर्ट में तलाक का मामला चल रहा था। शुक्रवार शाम दिलीप संगीता से मिलने उसके घर गया तो वह नहीं मिली। इसके बाद वह लौटने लगा। इसी दौरान उसे गली में आती हुई संगीता मिल गई। दोनों बातचीत करने लगे और देखते ही देखते उनमें कहासुनी शुरू हो गई।

वर्कशॉप अग्निकांड में घायल एसआई रवि की भी मौत, परिवार शोक-संतप्त

मूलरूप से कैथल निवासी रवि मुजेसर थाने में साल 2023 से तैनात थे

भास्कर न्यूज | फरीदाबाद

सेक्टर-24 के वर्कशॉप अग्निकांड में घायल 29 वर्षीय एसआई रवि की भी शनिवार सुबह दिल्ली के सफदरगंज अस्पताल में मौत हो गई। वह 40 फीसदी से अधिक झुलस गए थे। वह छह दिन से अस्पताल में भर्ती थे। हादसे में अभी तक दमकल कर्मी भविचंद, कालका जी लुब्रिकेंट कंपनी मालिक के बेटे अभिषेक सहित चार लोगों की मौत हो चुकी है। जबकि अस्पतालों में भर्ती कई की हालत गंभीर बनी हुई है।

मृतक एसआई रवि की फाइल फोटो।

पुलिस प्रवक्ता यशपाल के अनुसार एसआई रवि मूलरूप से कैथल जिले के क्योडक गांव के रहने वाले थे। वह मार्च-2022 में पीएसआई के पद पर हरियाणा पुलिस में भर्ती हुए थे। ट्रेनिंग के बाद अक्टूबर-2023 में उनकी तैनाती मुजेसर थाने में हुई थी। तब से वह मुजेसर थाने में ही तैनात थे। वह शादीशुदा थे, लेकिन उनके अभी कोई बच्चा नहीं था।

16 फरवरी की की शाम डायल-112 पर आग लगने की सूचना मिलते ही वह अपनी टीम के साथ सेक्टर-24 के मुजेसर स्थित कालका जी लुब्रिकेंट कंपनी व शिव स्टील की वर्कशॉप में लगी आग पर काबू पाने व बचाव कार्य के लिए पहुंचे थे। ड्रम में रखे केमिकल और ज्वलनशील पदार्थ में आग लगने से जोरदार धमाका हुआ। जिसमें वह 40 फीसदी से अधिक झुलस गए थे। उसे दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जहां शनिवार सुबह उनकी इलाज के दौरान मौत हो गई। पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद रवि का शव परिजनों को सौंप दिया। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि रवि साहसी और बहादुर पुलिसकर्मी थे। उन्होंने अपनी जान की परवाह न कर आग पर काबू पाने और उसमें फंसे लोगों को बचाने का प्रयास किया था।

गुरुग्राम

राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन करने पर सम्मान

गुरुग्राम | भारत सरकार, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए कर्मचारी राज्य बीमा निगम, उप क्षेत्रीय कार्यालय, गुरुग्राम को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस संबंध में भारत सरकार, गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा पूर्व, पूर्वोत्तर, उत्तर-I एवं उत्तर-II क्षेत्रों के कार्यालयों के लिए संयुक्त राजभाषा सम्मेलन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन अंतर्राष्ट्रीय इनडोर प्रदर्शनी केंद्र हापानिया, अगरतला में किया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री अमित शाह ने की। कार्यक्रम में केंद्रीय गृह राज्य मंत्री बंडी संजय कुमार तथा डॉ. माणिक साहा, मुख्यमंत्री, त्रिपुरा विशिष्ट अतिथि थे।

खांडसा गांव के कमरे में फंदा लगा युवक ने खुदकुशी की

गुरुग्राम | सेक्टर-37 थाना क्षेत्र के खांडसा गांव में किराए के कमरे में युवक ने 19 फरवरी को फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। सूचना मिलने पर पुलिस ने एफएसएल व फिंगरप्रिंट विशेषज्ञों की टीम से कमरे का निरीक्षण कराया। पुलिस को कमरे से कोई सुसाइड नोट नहीं मिला। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर मोर्चरी पहुंचाया। मृतक की पहचान बिहार के सीतामढ़ी निवासी राकेश कुमार (32 वर्ष) के रूप में हुई है। वह अपने पिता के साथ खांडसा गांव में किराए पर रहता था। 18 फरवरी को उसका पिता गांव चला गया था। 19 फरवरी की दोपहर बाद राकेश कुमार अपने कमरे बाहर नहीं निकला था।

पति, ससुर व सरपंच जेठानी पर विवाहिता ने लगाए आरोप

नूंह | 25 वर्षीय विवाहिता ने ससुर पर गंदी नजर रखने और पति के दूसरी महिला के साथ अवैध संबंधों का आरोप लगाया है। महिला ने सरपंच जेठानी और जेठ पर भी कई गंभीर आरोप लगाए हैं। विवाहिता शिकायत लेकर एसपी कार्यालय पहुंची थी। पिनगवां थाने के एसएचओ ने ऐसी किसी शिकायत मिलने से इंकार किया है। महिला ने बताया कि वह राजस्थान के एक गांव की रहने वाली है और उसकी शादी पिनगवां के गौरव के साथ वर्ष 2022 में हुई थी। आरोप है कि शादी के बाद से ससुराल पक्ष के लोग उसे किसी न किसी बात पर प्रताड़ित करते रहे हैं।

गांव कांकरौला की दो बेटियों ने कुश्ती में जीते ब्रांज मेडल

गुरुग्राम | शनिवार को रोहतक के लाढ़ौत गांव में अंडर-15 आयु वर्ग प्रदेश स्तरीय गर्ल्स कुश्ती प्रतियोगिता खेली गई। इस प्रतियोगिता में गुरुग्राम के गांव कांकरौला की दो बेटियों ने ब्रांज मेडल जीतकर गांव व क्षेत्र का नाम रोशन किया है। राव नवल सिंह स्पोर्ट्स क्लब के प्रशिक्षक मनीष पहलवान ने बताया कि उनकी दो खिलाड़ियों ने प्रतियोगिता में भाग लिया। प्रतियोगिता में दोनों के वर्ग में प्रदेशभर से करीब 30-30 पहलवान शामिल थी। 36 किलोग्राम में प्रियांशी व 46 किग्रा में रुचि ने सेमीफाइनल (अंतिम चार) में जगह बनाई थी। प्रियांशी ने क्वार्टर फाइनल में सोनीपत की पहलवान को हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई थी और सेमीफाइनल में प्रियांशी को सोनीपत की पहलवान से करीबी मुकाबले में 3-1 से हराया।

अनदेखी • सुशांत लोक फेस-1 में पेड़ की जड़ों को कंक्रीट से ढका

ठेकेदार बोला: पेड़ केवल मिट्टी से दबे...मौके पर हकीकत कुछ और

भास्कर न्यूज | गुरुग्राम

गुरुग्राम में हरियाली को बढ़ाने व बचाने के वन विभाग समेत कई अन्य विभाग के अधिकारी केवल दावे करते हैं। लेकिन पेड़ों को बचाने के लिए वन विभाग व अन्य विभाग कितने सक्रिय हैं, इसकी बानगी गुरुग्राम के पॉश क्षेत्र सुशांत लोक फेस-1 में देखी जा सकती है। यहां बिजली की केबल के लिए डक का निर्माण किया जा रहा है और हाल ही डक के ऊपर फुटपाथ को कंकरीट से बनाया गया है। लेकिन फुटपाथ के बीच खड़े दर्जनों पेड़ों की अनदेखी कर इन पेड़ों को कंकरीट में ही चारों ओर से बंद कर दिया गया। इस संबंध में डक निर्माण का काम करने वाले ठेकेदार से बात की तो उनका कहना है कि पेड़ केवल मिट्टी से दबे हैं, कंकरीट से नहीं। जबकि पेड़ कंकरीट में दबे साफ दिखाई दे रहे हैं। गुरुग्राम शहर में पुराने पेड़ अब बहुत कम बचे हैं। कई सड़कें ऐसी हैं, जहां पेड़ हैं ही नहीं। ओल्ड रेलवे रोड, न्यू रेलवे रोड पर सेक्टर-4 चौक तक एक या दो पेड़ बचे हैं। इसी तरह सोहना रोड पर बादशाहपुर से राजीव चौक तक कोई पेड़ दिखाई नहीं देता। जिन सड़कों पर पेड़ बचे है, उन पर कभी चौड़ाई बढ़ाने के नाम पर, कभी सीवर लाइन, ड्रेन बनाने तो कभी फुटपाथ के लिए पेड़ काटे जा रहे हैं। यही नहीं कई पेड़ केवल लापरवाही के कारण दम तोड़ रहे हैं। कई ग्रीन बेल्ट में अवैध रूप से कब्जे कर हरे-भरे पेड़ों को नुकसान पहुंचाया जा रहा है। लेकिन वन विभाग के अधिकारियों का इस ओर कोई ध्यान नहीं है। जब इस संबंध में डिविजनल फोरेस्ट ऑफिसर राजकुमार यादव से बात की तो उन्होंने कहा कि वे इस बारे में जांच कराएंगे। कंकरीट को हटाकर पेड़ों को बचाया जाएगा। गुरुगाम कई जगह दम तोड़ रहे हैं पेड़ गुरुग्राम के कई इलाकों में सड़क व फुटपाथ पर खड़े पेड़ कंक्रीट, सीमेंट और टाइल्स से इस कदर घिरे हैं कि उनकी जड़ों को सांस लेना भी मुश्किल हो रहा है। ऐसे में हरे-भरे पेड़ चंद ही दिनों में सूख जाते हैं। ऐसे सूखते पेड़ों के दर्द को समझने का प्रयास इक्का-दुक्का लोग ही करते हैं। हालांकि मानसून से पहले ऐसे पेड़ों को हरा भरा बनाने के लिए प्रशासन कोई ठोस कदम उठाए तो हरियाली को बचाया जा सकता है। इसके अलावा गुरुग्राम के रेलवे रोड के बीच डिवाइडर पर पेड़ लगा दिए गए हैं, जो अब दोनों तरफ से कंकरीट के बीच दब रहे हैं।

हरियाली को लेकर केवल हो रहे दावे

गुरुग्राम। सुशांत लोक फेस-1 में फुटपाथ के साथ पेड़ों को कंकरीट से दबाने की तैयारी।

ट्रक की चपेट में आने से बाइक से गिरी युवती, सिर में गंभीर चोट लगने से मौत

गुरुग्राम | बिलासपुर थाना क्षेत्र में 20 फरवरी की रात को ट्रक की चपेट में आने से एक बाइक पर सवार एक युवती गिर गई। युवती का सिर सड़क पर लगने से उसकी मौत हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस ने अस्पताल से शव को कब्जे में लेकर मोर्चरी में पहुंचा दिया है। अज्ञात ट्रक चालक के खिलाफ धारा 281, 106(1) बीएनएस के तहत मामला दर्ज किया है।

मृतका की पहचान मेरठ (उत्तर प्रदेश) ग्रास मंडी निवासी निधी के रूप में हुई है। वह बिलासपुर क्षेत्र में पार्क इन होटल में नौकरी करती थी। 20 फरवरी की रात को 9.30 बजे वह होटल में ही काम करने वाले सहकर्मी राहुल कुमार के साथ बाइक पर सवार होकर हाईवे किंग पर खाना खाने गई थी। खाना खाने के बाद जब वे वापस होटल से निकल थे तो स्टारेक्स यूनिवर्सिटी के सामने तेज रफ्तार ट्रक की चपेट में आने से निधी बाइक से गिर गई। सहकर्मी राहुल कुमार ने एंबुलेंस की मदद से निजी अस्पताल पहुंचाया। हालत गंभीर होने के कारण निधी को सीएचसी पटौदी में रेफर कर दिया। सीएचसी पटौदी में डॉक्टरों ने निधी को मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने सीएचसी पटौदी से शव को कब्जे में लिया।

खाना लेने जा रहे युवक को अज्ञात वाहन ने मारी टक्कर

गुरुग्राम | बिलासपुर थाना क्षेत्र के गांव पचगांव चौक के पास 19 फरवरी की रात के समय खाना लेने जा रहे युवक को अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में घायल युवक की शुक्रवार की रात को उपचार के दौरान मौत हो गई। मृतक के भाई की शिकायत पर अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ धारा 281,106(1) बीएनएस के तहत केस दर्ज किया है।

मृतक की पहचान दिल्ली के उत्तम नगर निवासी सुशांत मिश्रा (22 वर्ष) के रूप में हुई। वह बिलासपुर क्षेत्र स्थित एक निजी कंपनी में नौकरी करता था और पचगांव में किराए के कमरे में रहता था। गत 19 फरवरी की रात करीब 11.30 बजे सुशांत मिश्रा खाना लेने के लिए बाहर गया था। पचगांव चौक के पास अज्ञात वाहन ने सुशांत मिश्रा को टक्कर मार दी, जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल सुशांत को दिल्ली के हरिनगर स्थित दीनदयाल उपाध्याय अस्पताल में भर्ती कराया गया।

बाइक से जा रहे स्वास्थ्य कर्मी को स्कॉर्पियो ने मारी टक्कर

गुरुग्राम | बिलासपुर थाना क्षेत्र में एक स्कॉर्पियो की टक्कर लगने से फर्रुखनगर में स्वास्थ्य विभाग में कार्यरत टेक्नीशियन की मौत हो गई। टेक्नीशियन बाइक से जा रहा था। पुष्पेंद्र नामक व्यक्ति ने पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद जमालपुर पुलिस चौकी पुलिस मौके पर पहुंची और स्कॉर्पियो के नीचे फंसे बाइक सवार टेक्नीशियन को निकालकर अस्पताल पहुंचाया, जहां उसे डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। वहीं स्कॉर्पियो चालक के खिलाफ केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

जाटों के रहने वाले पुष्पेंद्र ने बताया कि गत 20 फरवरी की देर रात करीब 10.30 बजे बांस लंबी शादी में जा रहा था। जब अग्रवाल बीयर हाउस के सामने पहुंचा तो उसके सामने एक बाइक पर सवार युवक बांस लांबी की ओर जा रहा था। पुष्पेंद्र ने बताया कि उसके आगे चल रहे एक बाइक सवार को एक स्कॉर्पियो ने सीधी टक्कर मार दी और बाइक सवार को कुचलते हुए स्कॉर्पियो तेज भगा दी।

50 नए एयरपोर्ट से मिलेगा वैश्विक विस्तार: दीपक

पीएफटीआई चेयरमैन ने घोषणाओं का स्वागत किया

भास्कर न्यूज | गुरुग्राम

केंद्र सरकार द्वारा अगले पांच वर्षों में देशभर में 50 नए एयरपोर्ट विकसित करने की घोषणा को इंफ्रास्ट्रक्चर विस्तार, व्यापार सुगमता और औद्योगिक विकास की दिशा में ऐतिहासिक पहल बताते हुए प्रोग्रेसिव फेडरेशन ऑफ ट्रेड एंड इंडस्ट्री (पीएफटीआई) के चेयरमैन दीपक मैनी ने इसका स्वागत किया है। उन्होंने कहा कि यह पहल केवल परिवहन सुविधा का विस्तार नहीं, बल्कि नए भारत के आत्मविश्वास, विकास और वैश्विक नेतृत्व की ओर बढ़ता हुआ सशक्त कदम है। इंफ्रास्ट्रक्चर, बिजनेस और इंडस्ट्री के इस समन्वित विकास मॉडल से भारत निश्चित रूप से विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ेगा। फेडरेशन के चेयरमैन ने कहा कि वर्तमान में देश में 165 सक्रिय एयरपोर्ट संचालित हैं और औसतन हर 33 दिन में एक नया एयरपोर्ट या टर्मिनल राष्ट्र को समर्पित किया जा रहा है। यह केवल विमानन क्षेत्र का विस्तार नहीं, बल्कि मल्टी सेक्टोरल ग्रोथ का मजबूत आधार है, जो लॉजिस्टिक्स, मैन्युफैक्चरिंग, एक्सपोर्ट, पर्यटन, रियल एस्टेट और एमएसएमई सेक्टर को नई गति देगा।

उन्होंने कहा कि 50 नए एयरपोर्ट देश के टियर 2 और टियर 3 शहरों को राष्ट्रीय और वैश्विक बाजारों से जोड़ेंगे। इससे सप्लाई चेन मजबूत होगी, ट्रांसपोर्टेशन कॉस्ट घटेगी और निवेश के अवसर बढ़ेंगे। बेहतर कनेक्टिविटी से उद्योगों के लिए कच्चे माल और तैयार उत्पादों की आवाजाही तेज होगी, जिससे ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को ठोस मजबूती मिलेगी।

जलभराव से निपटने की तैयारी, कचरा साफ होंगे

नूंह | मानसून में जल भराव की समस्या से निपटने की तैयारियां अभी से शुरू कर दी गई हैं। दावा किया जा रहा है कि मानसून शुरू होने से पहले शहरभर की सीवरेज लाईनें साफ करवा दी जाएंगी तथा सभी मेनहोल पर जाल लगाए जाएंगे ताकि कचरा फंसने से ड्रेनेज प्रभावित न हो।

नगरपरिषद के चेयरमैन संजय मनोचा ने जोगीपुर रोड पर स्थित 3.6 एमएलडी क्षमता वाले सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट का निरीक्षण भी किया। जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग के कनिष्ठ अभियंता और एसटीपी इंचार्ज शकील अहमद ने सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट के विभिन्न खंडों में निरीक्षण करवाया और उन्हें इसकी कार्यप्रणाली संबंधी विस्तृत जानकारी दी। उनके साथ ही आसपास के गांवों से आए जिम्मेदार नागरिकों ने भी इस बारे में विस्तार से जानकारी ली। जेई शकील अहमद ने बताया की मानसून में शहर में जल भराव की समस्या ना हो इसके लिए विभाग ने अभी से ही प्रयास शुरू कर दिए हैं। शहर की अधिकतर जल निकासी सीवरेज ट्रीटमेंट प्लांट पर ही निर्भर है जिसको देखते हुए नगर परिषद के साथ मिलकर काम किया जा रहा है मानसून से पहले ही सीवरेज लाइन की सफाई कराई जाएगी, वहीं नगर परिषद द्वारा सीवरेज के मेनहोल पर जाल भी लगवाया जाएगा ताकि लाइनों में कचरा ना फंसे और कोई रुकावट पैदा ना हो। विभाग के पास सुपरशक्र मशीन भी मौजूद है।

पाम ऑयल पर वैज्ञानिक मंथन

खाद्य तेल सुरक्षा को लेकर विशेषज्ञों ने साझा किए विचार

भास्कर न्यूज | गुरुग्राम

'पाम ऑयल के पोषण एवं कार्यात्मक पहलू' विषय पर शनिवार को ऑइल टेक्नोलॉजी एसोसिएशन ऑफ इंडिया (नॉर्थ जॉन), फेयर लैब्स और मलेशियन पाम ऑइल काउंसिल का संयुक्त सेमिनार आयोजित किया गया। सेक्टर-34 स्थित इन्फोसिटी-1, टेक्नोलॉजी पार्क में आयोजित इस सेमिनार में चिकित्सा विशेषज्ञों, तकनीकी विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं और उद्योग से जुड़े हितधारकों ने आधुनिक खाद्य प्रणालियों में पाम ऑयल के विभिन्न उपयोग, सीमाएं, चुनौतियां और अनुपालन संबंधी मुद्दों पर चर्चा की। कार्यक्रम के शुभारंभ के साथ ऑइल टेक्नोलॉजी एसोसिएशन ऑफ इंडिया (नॉर्थ जोन) के अध्यक्ष सीएस जोशी ने आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत खाद्य तेल उत्पाद को बढ़ावा देने का आह्वान किया। मुख्य अतिथि के रूप में इंडियन काउंसिल आफ एग्रीकल्चर रिसर्च के उप महानिदेशक एसके सिंह ने भारत में खाद्य तेल सुरक्षा को सुदृढ़ करने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान एवं टिकाऊ कृषि पद्धतियों की आवश्यकता पर जोर दिया।

फिरौती नहीं देने पर लोहे की रॉड से युवक को पीटा, दो गिरफ्तार

गुरुग्राम| गुरुग्राम पुलिस ने फिरौती मांगने और जानलेवा हमले के मामले में दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। बता दे कि यह गिरफ्तारी 20 फरवरी को रेवाड़ी से की गई। आरोपियों की पहचान हरीश उर्फ हरिया (32 वर्ष) और शिवा (26 वर्ष) के रूप में हुई है, जो बादशाहपुर के रहने वाले हैं। मामला गुरुग्राम के सेक्टर-47 स्थित पार्क हॉस्पिटल से शुरू हुआ, जहां एक व्यक्ति को गंभीर रूप से घायल अवस्था में भर्ती कराया गया था। डॉक्टरों ने शुरुआत में पीड़ित को बयान देने के लिए अयोग्य घोषित कर दिया था। होश में आने के बाद, पीड़ित ने 8 जनवरी को पुलिस को लिखित शिकायत दी।

शिकायत के अनुसार, पीड़ित बादशाहपुर का निवासी है और किराए की जमीन पर झुग्गी बनाकर रहता है। उसने बताया कि गांव के नरेंद्र उर्फ टिल्लू से उसकी कहासुनी हुई थी।

हर मामले में आगे रहना चाहती थीं दिव्या भारती, आज से तीन दिन बाद सालगिरह

जब ड्राइवर को हटाकर दौड़ाई थी कार

मेरे हिस्से के किस्से

रूमी जाफरी
बॉलीवुड फिल्मों के लेखक और निर्देशक

तीन दिन बाद यानी 25 फरवरी को दिव्या भारती की सालगिरह है। अभी कुछ दिन पहले जब मैं 'ओ रोमियो' के प्रीमियर में गया तो कई सालों बाद वहां दिव्या के भाई कुणाल से मुलाकात हुई। कुणाल से मिलकर मैं बहुत इमोशनल हो गया। तभी मन में आया कि दिव्या से जुड़े कुछ किस्से आपके साथ साझा करूं। इसलिए आज मेरे हिस्से के किस्से में बात दिव्या भारती की।

दिव्या एक जिंदादिल, खुशमिजाज और चौबीसों घंटे मस्ती के मूड में रहने वाली लड़की थी। मैंने उसे कभी थका हुआ, उदास, खामोश या गंभीर नहीं देखा। वह जिंदगी का हर लम्हा ऐसे जीती थी, जैसे उसे अंदाजा हो कि उसके पास समय कम है और हर पल को पूरी तरह जी लेना है। मैंने पहले भी कहा है कि उसके भीतर एक बच्ची रहती थी। जो उसके मन में आता, बिना अंजाम सोचे वह कर डालती थी।

जुहू में उसके पड़ोस में आइसक्रीम की एक मशहूर दुकान थी। हर रात वहां इतनी भीड़ होती कि लोग अपनी गाड़ियां उसके घर के गेट के सामने खड़ी कर देते। दिव्या को अंदर जाने में परेशानी होती, काफी देर तक हॉर्न बजाना पड़ता, तब जाकर गाड़ियां हटतीं। वह कई बार लोगों को समझा चुकी थी कि गेट के सामने गाड़ी खड़ी करके आइसक्रीम मत खाइए। एक दिन उसने देखा कि फिर गाड़ियां खड़ी हैं। उसे गुस्सा आ गया। वह उतरी, पास पड़ी लोहे की रॉड उठाई और गाड़ियों के शीशे, लाइट और दरवाजों पर मारना शुरू कर दिया। लोग हैरान रह गए कि एक लड़की रॉड लेकर गाड़ियां तोड़ रही है। उसे शांत कराने में समय लगा।

मैं और साजिद घर पर थे। तभी फोन आया तो हम सीधे जुहू पुलिस स्टेशन भागे। वहां दिव्या खड़ी थी और बाहर कई टूटी हुईं

शूटिंग के दौरान दिव्या भारती। फाइल फोटो (साभारः सोशल मीडिया)

गाड़ियां। बहुत से लोग जमा थे। साजिद ने सबसे बात की और मामला शांत करवाया। कुछ दिन पहले ही साजिद ने मुझे बताया था कि वह केस कई साल चला। उस समय दिव्या चूंकि नाबालिग थी, इसलिए उसके पिता को पक्षकार बनाया गया था। कुछ अरसा पहले ही वह मामला खत्म हुआ। जैसा कि मैंने कहा कि वह सच में एक बच्ची थी। जो मन में आता वही करती थी। शायद उसी के लिए कहा गया है :

सैर कर दुनिया की गाफिल जिंदगानी फिर कहां
जिंदगी गर कुछ रही तो ये जवानी फिर कहां

एक और किस्सा मैं आपको बताता हूं। बात अक्टूबर 1991 की है। मेरे बड़े भाई की भोपाल में शादी थी। दिव्या ने जिद पकड़ ली कि वह भी जाएगी। मैंने समझाया कि तेरे जाने से शादी में सबका ध्यान भटक जाएगा। सब दुल्हन को छोड़कर तुझे ही देखते रहेंगे। वह मान गई। जब मैं जाने लगा तो उसने मेरे लिए एक मेडिकल बॉक्स तैयार किया। एक कागज पर लिख दिया कि सिरदर्द हो तो यह गोली, पेट दर्द हो तो यह, एलर्जी हो तो यह, चोट लगे तो यह बैंडेज। उसने डॉक्टर की तरह पूरा मेडिकल बॉक्स पैक कर दिया। वह बॉक्स कई साल मेरे पास रहा, फिर शिफ्टिंग में कहीं खो गया। उसका मुझे आज भी दुख है।

नवंबर के अंत में मेरे भाई और भाभी बंबई घूमने आए। दिव्या बड़ी बेचैनी से उनका इंतजार कर रही थी। जब वे आए तो उसने भाभी के नई दुल्हन वाले भारी लाल कपड़े पहन लिए और बोली कि आज हम मस्ती करेंगे। जब साजिद आएगा तो कहेंगे कि आज ही शादी होगी, उसकी खिंचाई करेंगे। इत्तेफाक से उस रात साजिद आया ही नहीं। वह मस्ती करती रही और बोली, आज मैं तुम दोनों के बीच सोऊंगी। सुबह होते ही वह शूटिंग पर चली गई। वहां जाकर कार भेज दी और कहा कि भैया-भाभी को लेकर आओ।

फिल्म 'दिल ही तो है' का सेट लगा था, असरानी जी निर्देशन कर रहे थे। तभी एक ओपन जीप आई, उसमें अजय देवगन बैठे थे। सबके स्वागत से समझ में आ गया कि 'फूल और कांटे' हिट हो चुकी है और नया सितारा आ गया है। वहीं मेरी अजय से मुलाकात हुई। खैर, उसके बाद हम लोग निकले। मैं ड्राइवर की बगल वाली सीट पर बैठ गया। पीछे भैया-भाभी और दिव्या बैठे थे। वापस लौटते समय हाईवे पर एक गाड़ी ने हमें ओवरटेक किया। दिव्या बोली, आगे निकलो। मैं तेज गाड़ी चलाने के खिलाफ था। ड्राइवर को इशारा कर दिया कि तेज मत चलाना। उसने मेरी बात मान ली। लेकिन जैसे ही सिग्नल पर गाड़ी रुकी तो दिव्या उतरी, ड्राइवर को हटाया और खुद ड्राइविंग सीट पर बैठ गई। उसने जो गाड़ी दौड़ाई कि दूसरी कार से आगे निकलकर ही मानी।

ऐसा ही था दिव्या का नेचर। वह हर काम सबसे आगे रहकर करना चाहती थी। सबसे आगे निकलना चाहती थी। शायद दुनिया से जाने के मामले में भी वह हम सबसे आगे निकल गई। आज उसकी याद में उसकी फिल्म 'शोला और शबनम' का गीत सुनिए, अपना ख्याल रखिए, खुश रहिए :

तू पागल प्रेमी आवारा, दिल तेरी मोहब्बत का मारा...

• rumyjafrywrites@gmail.com

लेखक-प्रकाशक के पास सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित पूर्वानुमति के बिना इस लेख के किसी भी हिस्से को ना तो पुनः प्रकाशित किया जा सकता है, ना ही किसी तरह का व्यावसायिक इस्तेमाल कियाजासकताहै।

'मेरे हिस्से के किस्से' कॉलम को अपने मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

गाजर के स्वाद में डूबी रस मलाई, बनाना भी आसान

रीडर रेसिपी कॉन्टेस्ट

शालिनी जैन
गृहिणी
खुरई (मप्र)

भेजिए रेसिपी और जीतिए 5,100 रु. का गिफ्ट

इस कॉलम में आप भी अपनी रेसिपी भेजकर हर सप्ताह जीत सकते हैं **5,100 रु.** मूल्य का गिफ्ट। इसके लिए **QR कोड** को स्कैन कीजिए और लिख भेजिए अपनी रेसिपी। साथ में अपना नाम, प्रोफेशन, फोटो, डिश की तस्वीर जरूर भेजें।

लाल सीजनल गाजर से हलवे के अलावा और भी कई तरह की मिठाइयां बनाई जा सकती हैं। आइए, आज इस गाजर के पारंपरिक स्वाद को कुछ नया रूप देते हुए इसकी रस मलाई बनाते हैं। इसे बनाना भी बेहद आसान है।

बनाने की सामग्री : 250 ग्राम गाजर, 1 लीटर दूध, 200 ग्राम चीनी, 1/2 कटोरी सूजी, 1/2 कटोरी पिस्ता-बादाम (कटे हुए), 4 से 5 इलायची, 1 चम्मच घी, थोड़ा-सा तेल।

बनाने की विधि :

- सबसे पहले गाजर को अच्छी तरह धोकर छील लीजिए। इसे छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर आधा कप दूध के साथ मिक्सी में पीसकर मुलायम पेस्ट बना लीजिए। इस पेस्ट में से 2 से 3 चम्मच अलग रख दीजिए।
- अब एक पैन में घी गर्म करें। इसमें एक चम्मच चीनी, गाजर का पेस्ट, सूजी और आधा कप दूध डालकर मध्यम आंच पर पका लीजिए। थोड़ी ही देर में ही सूजी पूरा दूध सोख लेगी और मिश्रण गाढ़ा होकर आटे की लोई जैसा बन जाएगा। अब गैस को बंद कर दीजिए।
- मिश्रण को थोड़ा ठंडा होने दीजिए। फिर हाथों पर हल्का-सा तेल लगाकर इसे अच्छी तरह मसल लीजिए और छोटी-छोटी गोल बॉल बना लीजिए।
- जब तक आप बॉल्स बनाएं, तब तक दूसरी ओर एक पैन में बचा हुआ दूध डालकर उबाल लीजिए। इसे लगभग आधा होने तक उबालें। अब इसमें बचा हुआ गाजर का पेस्ट और चीनी मिला लीजिए। चीनी घुलने दीजिए, फिर कटे हुए मेवे और इलायची पाउडर डाल दीजिए।
- तैयार बॉल्स को स्टीमर में हल्क-सा तेल लगाकर 7-8 मिनट तक स्टीम करें। इसके बाद इन्हें उबलते हुए दूध में डाल दीजिए। करीब 2 मिनट तक पकाएं। गैस बंद कर दीजिए और ढककर 30 मिनट तक ठंडा होने दीजिए। तैयार है गाजर की रस मलाई।

तारे-सितारे

मनीष शर्मा
ज्योतिषाचार्य

24 फरवरी से होलाष्टक प्रारंभ हो जाएगा। मौसम अनुकूल रहेगा। देश में कामकाजी लोगों को फायदा होगा। व्यापारिक स्थितियां अच्छी रहेंगी। अन्य क्षेत्रों में व्यापार में वृद्धि होगी। लेकिन गुरु एवं शुक्रवार के दिन व्यापार में गिरावट आ सकती है।

• jyotish.sansar@gmail.com

मेष

चंद्र का गोचर रहेगा। धन की आवक के साथ मन प्रसन्न रहेगा। बुध एवं गुरुवार को स्थायी संपत्ति संबंधी मामलों में लाभ के आसार हैं। सप्ताहांत में आस-पास के लोगों से तनाव हो सकता है। भाइयों से सहयोग प्राप्त होगा।

वृषभ

रवि और सोमवार के दिन तनाव रह सकता है। वाहन प्रयोग में सावधानी रखें। मंगल एवं बुधवार को परेशानी से राहत मिलेगी। गुरु एवं शुक्रवार को कोई समस्या नहीं आएगी। शनिवार को पराक्रम में वृद्धि होगी।

मिथुन

रवि एवं सोमवार को काम की अधिकता रहेगी। यात्रा का योग भी बना हुआ है। मंगल एवं बुधवार को आय में कमी आ सकती है। गुरु एवं शुक्रवार से पुनः कार्य में तेजी आएगी। शनिवार को नए सहयोग प्राप्त होंगे।

कर्क

दशम चंद्र से सफलता मिलती रहेगी। नए वाहन-भवन खरीदने का विचार बनेगा। मंगल एवं बुधवार को आर्थिक आधार मजबूत होगा। गुरु एवं शुक्रवार को संभलकर रहने का समय है। शनिवार का दिन उत्तम रहेगा।

सिंह

समय सब प्रकार से अनुकूल रहेगा। चिंताएं समाप्त होंगी। मंगल एवं बुधवार को कार्य की अधिकता हो सकती है। गुरु एवं शुक्र को आय में वृद्धि होगी। छोटी यात्रा पर जाने का योग बनेगा। शनिवार को व्यय अधिक होंगे।

कन्या

अष्टम चंद्र से आरंभ चिंताओं से भरा हो सकता है। मंगलवार की शाम से कुछ राहत मिलने की संभावना बनेगी। सप्ताहांत के दिनों में व्यर्थ की बातें परेशान कर सकती हैं। पिता का सहयोग प्राप्त होगा।

तुला

चंद्र की दृष्टि राशि पर है। आय अच्छी बनी रहेगी एवं प्रसन्नता भी प्राप्त होगी। मंगल एवं बुधवार को आय में कमी हो सकती है। गुरु एवं शुक्रवार से पुनः स्थिति काबू में आएगी। शनिवार भी अच्छा दिन रहेगा।

वृश्चिक

विरोधी हावी होने का प्रयास करेंगे। पराक्रम श्रेष्ठ रहेगा एवं भाइयों से सहयोग मिलेगा। मंगलवार एवं बुधवार अनुकूल रहेंगे। गुरुवार एवं शुक्रवार को कठिनाइयां आ सकती हैं। शनिवार को आय में सुधार होगा।

धनु

पंचम चंद्र। संतान से सहयोग प्राप्त होगा। मंगल एवं बुधवार को खर्च में वृद्धि रहेगी। गुरु एवं शुक्रवार सबसे अच्छे दिनों में रहेंगे। परिवार के साथ समय व्यतीत होगा। शनिवार को हर कार्य में सतर्कता रखनी होगी।

मकर

चतुर्थ चंद्र से आरंभ में कठिनाई आएगी। मंगल एवं बुधवार को संतान से सुख मिलेगा। आय में वृद्धि होगी। गुरु एवं शुक्रवार को सुखद आश्चर्यजनक सूचना मिल सकती है। शनिवार सबसे अच्छा दिन रहेगा।

कुंभ

तृतीय चंद्रमा से आरंभ अच्छा होगा। मंगल एवं बुधवार को समस्याएं आ सकती हैं। गुरुवार की दोपहर से अनुकूल स्थितियां निर्मित होंगी। शुक्र को विरोधियों का पक्ष कमजोर होगा। शनिवार को सावधान रहना होगा।

मीन

द्वितीय चंद्र पुरानी समस्याओं से निदान दिलाएगा। मंगलवार एवं बुधवार को कार्यों में सफलता की प्राप्ति होगी। गुरु एवं शुक्रवार को आवक कमजोर हो सकती है। शनिवार को संतान से सुख की प्राप्ति होगी।

मेरा पैसा

मैनेजमेंट गुरु
एन. रघुरामन

कैशलेस दुनिया में बच्चों को पैसे का महत्व सिखाएं

'जो आंखों से ओझल है, वह दिमाग से भी गायब हो जाता है।' यह कहावत आज के दौर में बिल्कुल सटीक है। आज नकदी लगभग 'अदृश्य' हो गई है; हर भुगतान कार्ड, फोन या ऑनलाइन होता है। जब पैसा हाथों में नहीं दिखता, तो जेहन में उसकी अहमियत कम होने लगती है। क्या आप मेरी बात समझ रहे हैं?

मेरे इस विचार को हाल ही में 'लंदन फाउंडेशन फॉर बैंकिंग एंड फाइनेंस' के एक रिसर्च से समर्थन मिला। यह संस्था एक दशक से 15-18 साल के किशोरों के नजरिए पर नजर रख रही है। शोध में पाया गया कि किशोरों में वित्तीय समझ का स्तर चिंताजनक रूप से कम है। इस 'यंग पर्सन्स मनी इंडेक्स' रिपोर्ट के अनुसार, संपर्क किए गए दो-तिहाई किशोरों ने पैसों को लेकर बहुत अधिक मानसिक तनाव महसूस किया। तो आखिर हम क्या करें? यहां कुछ सबक हैं जो हमें बच्चों को जरूर सिखाने चाहिए:

पैसों की अच्छी आदतें:
माता-पिता अपने बच्चों को सही 'मनी माइंडसेट' विकसित करने में मदद कर सकते हैं। उन्हें पसंदीदा चीज खरीदने के लिए पैसे बचाने या निवेश करने के लिए प्रोत्साहित करें। जन्मदिन पर मिले नकद उपहार बचाने से इसकी शुरुआत की जा सकती है। बच्चे के नाम से 'माइनर अकाउंट' या पीपीएफ खाता खोलें और अपने फोन पर उन्हें दिखाएं कि उनका पैसा कैसे बढ़ रहा है।

डिनर टेबल पर हो निवेश की बात:
कुछ सुरक्षित शेयर खरीदें और रोज अखबार में उन्हें दिखाएं कि उस शेयर की कीमतों में क्या बदलाव आ रहे हैं। यह उन्हें निवेश और बचत से जोड़ने का एक परोक्ष तरीका है। जब वे इसमें दिलचस्पी दिखाने लगें, तो उन्हें यह भी समझाएं कि कुछ निवेश आकर्षक दिखने के बावजूद जोखिम भरे क्यों होते हैं। धीरे-धीरे वे असुरक्षित और जोखिम वाले क्षेत्रों को समझना शुरू कर देंगे।

कर्ज कैसे काम करता है, ये सिखाएं:
हाल ही में मैंने अपनी बेटी को कर्ज का एक 'ट्रिक' बताई। नई कार खरीदने के लिए मैंने कार लोन लेने के बजाय अपनी फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) पर ओवरड्राफ्ट (ओडी) लिया। ऐसा करते समय मैंने उसे दो और बातें सिखाईं। पहला यह कि गिरवी रखी गई संपत्ति पर ब्याज दर कम होती है और दूसरा यह कि यदि वह एफडी जल्द ही मैच्योर होने वाली हो, तो यह 'सोने पे सुहागा' है। इस तरह हमें एक ही दिन में पैसा मिल गया और कार लोन की तुलना में 1% कम ब्याज देना पड़ा।

मैनेजमेंट टिप:
आजकल घरों में कैश कम दिखता है, इसलिए पैसों के बारे में बात करना। उसे अखबार या मोबाइल स्क्रीन के जरिए किसी न किसी रूप में बच्चों को दिखाना पिछले दशकों की तुलना में कहीं अधिक जरूरी है।

फाइनेंशियल गाइड • लोन के लिए बटन दबाने से पहले ये 'रियलिटी चेक' जरूर करें

5 लाख रुपए का पर्सनल लोनः कब आफत!

मेरा पैसा टीम

आज के दौर में जब मोबाइल एप पर महज दो-चार क्लिक करते ही लोन के 5 लाख रुपए खाते में आ सकते हैं।

यह सुविधा किसी 'जादुई छड़ी' से कम नहीं लगती। लेकिन पर्सनल फाइनेंस की दुनिया में एक पुरानी कहावत है- जो पैसा जितनी जल्दी आता है, उसकी ईएमआई उतनी ही लंबी और भारी होती है। **पर्सनल लोन** अक्सर विलासिता के लिए नहीं, बल्कि मजबूरी में लिए जाते हैं। लेकिन एक बार जब आप दहाई अंकों की ब्याज दर पर पांच साल की ईएमआई के लिए साइन करते हैं, तो भविष्य की अपनी आय गिरवी रख रहे होते हैं। यह टिप्पणी सिर्फ लोन अप्रूवल पाने के बारे में नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करने के बारे में है कि लोन आपकी बाकी जरूरतों को प्रभावित किए बिना आपकी जिंदगी में फिट बैठ सके। आइए समझते हैं कि इस कर्ज के जाल और जरूरत के बीच का पूरा सच क्या है...

लोन की जरूरतः क्यों और कब?

आम तौर पर लोग पर्सनल लोन तब लेते हैं जब बचत एफडी या गिरते फंड में फंसी होती है। अचानक अस्पताल का बिल, शादियों के अनचाहे खर्च या क्रेडिट कार्ड का ब्याज बढ़ने लगता है। ऐसी स्थिति में पर्सनल लोन मुश्किल हालात में सहूलियत का अहसास कराता है, लेकिन तैयारी जरूरी है।

- अच्छा रिकॉर्डः जैसे ही आप लोन के लिए पैन नंबर डालते हैं, बैंक आपके वित्तीय जीवन की कुंडली खोल लेता है। • क्रेडिट गणितः अगर स्कोर 700 से ऊपर है, तो राह आसान है। 650 से नीचे होने पर कर्ज मिलना न सिर्फ मुश्किल होगा, बल्कि बहुत महंगा भी होगा। • उधार लेने की भूखः अगर एक महीने में 4-5 बैंकों में आवेदन किया है, तो बैंक आपको 'क्रेडिट हंग्री' मानेगा और आपकी क्रेडिट रेटिंग गिर जाएगी।

छिपे खर्च... शुरुआती ब्याज दर का भ्रम

अक्सर विज्ञापन में '10.5% से शुरू' लिखा होता है, जो उन्हीं के लिए होता है जिनका रिकॉर्ड बेदाग है। आम आदमी के लिए यह दर 14-16% तक जा सकती है। 1% से 3% की 'प्रोसेसिंग फीस' आपके खाते में पैसा आने से पहले ही काट ली जाती है। यानी 5 लाख के लोन पर 15,000 रुपए का सीधा झटका।

- प्री-पेमेंट (समय से पहले भुगतान) के नियमों को भी जांचें। कुछ कर्जदाता पहले 12 महीनों तक लोन बंद करने की अनुमति नहीं देते हैं। यदि आप बोनस या बिजनेस इनकम से समय से पहले लोन चुकाने की योजना बना रहे हैं, तो यह शर्त आपके लिए बहुत मायने रखती है।

सहजताः क्या आप ईएमआई दे पाएंगे?

बैंक सैलरी देखकर तय करता है कि आप कितने लोन के 'योग्य' हैं, लेकिन 'सहजता' आपको तय करनी है। मान लीजिए आप महीने में 1 लाख कमाते हैं। अभी ₹30,000 की ईएमआई चल रही हैं। बैंक 13 हजार रुपए की नई ईएमआई बना सकता है। लेकिन खुद से पूछें कि क्या होगा यदि बोनस मिलने में देरी हो जाए, अचानक कोई खर्च आ जाए?

- **50% का नियमः** यदि कुल ईएमआई मासिक आय के 50% से अधिक है, तो आप खतरे की घंटी बजा रहे हैं।
- **लंबी अवधि का धोखाः** ईएमआई कम करने के चक्कर में 3 साल के लोन को 5 साल पर ले जाना सुनने में अच्छा लगता है, पर इसका मतलब यह है कि आपको कई गुना ज्यादा ब्याज देना पड़ेगा।

दस्तावेज तैयार रखें, कई आवेदन से बचें

- यदि आप वेतनभोगी हैं, तो आपको हालिया सैलरी स्लिप और छह महीने के बैंक स्टेटमेंट की जरूरत होगी। यदि आपका खुद का काम है, तो कम से कम दो साल का आयकर रिटर्न (आईटीआर) दिखाना होगा।
- **एक साथ पांच बैंकों में आवेदन न करें:** इस उम्मीद में कि कोई एक तो अप्रूव करेगा ही। हर आवेदन आपकी क्रेडिट रिपोर्ट पर एक निशान छोड़ता है। कम समय में बहुत अधिक पूछताछ आपके स्कोर को थोड़ा कम कर सकती है और आपको 'कर्ज का भूखा' दिखा सकती है।
- **प्रो टिपः** आवेदन करने से पहले अपनी क्रेडिट रिपोर्ट खुद चेक कर लेना बेहतर है। रिजेक्शन का झटका खाने से पहले ही समस्या को ठीक करने में समझदारी है।

निष्कर्षः समाधान या सिर्फ टाल-मटोल?

पर्सनल लोन एक उपयोगी और लचीला पैसा है, लेकिन यह सस्ता पैसा नहीं है। इसकी ब्याज दरें होम लोन या फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) के बदले लिए गए लोन की तुलना में काफी अधिक होती हैं। ऐसे में पर्सनल लोन लेने से पहले खुद से एक ईमानदारी भरा सवाल पूछें: 'क्या यह लोन मेरी समस्या सुलझाएगा या बस उसे कुछ वक्त के लिए आगे टाल देगा?' यदि आपके पास पुनर्भुगतान की स्पष्ट योजना है और आपके बजट में थोड़ी सांस लेने की जगह है, तो 5 लाख का यह लोन एक बेहतरीन वित्तीय ब्रिज साबित हो सकता है। लेकिन अगर आप केवल 'उम्मीद' के भरोसे कर्ज ले रहे हैं, तो याद रखिए- पैसा तो एक दिन में आ जाएगा, लेकिन ईएमआई सालों तक आपका पीछा नहीं छोड़ेगी।

5 वर्ष में SIP से 20 लाख की एसयूवी लें या डाउन पेमेंट से

अगर आपका सपना 5 साल में 15-20 लाख रुपए की एसयूवी घर लाने का है, तो अभी से प्लानिंग और निवेश शुरू करना होगा। सही रणनीति के साथ एसआईपी इस टारगेट को हकीकत में बदल सकती है। एसयूवी खरीदने से पहले सबसे जरूरी सवाल यह है कि क्या आप पूरी रकम एकमुश्त देना चाहते हैं या लोन लेकर सिर्फ डाउन पेमेंट का इंतजाम करना चाहते हैं। इसी फैसले पर एसआईपी की राशि तय होगी।

पूरा कैश देकर एसयूवी खरीदना चाहते हैं?
अगर आप पूरा कैश देकर एसयूवी लेना चाहते है, तो 5 साल बाद 20 लाख का फंड चाहिए। अगर आप एसआईपी के जरिये म्यूचुअल फंड में निवेश करते हैं और औसतन 12% सालाना रिटर्न मानते हैं तो मंथली 25,000 रुपए की एसआईपी करनी होगी। 5 साल बाद एसआईपी की वैल्यू 20,27,590 होगी। अगर लक्ष्य 15 लाख रुपए का है तो मासिक एसआईपी 19 हजार रुपए करनी होगी। यह अनुमान बाजार के औसत रिटर्न के आधार पर है।

50% डाउन पेमेंट का प्लान है तो?
अगर 40 से 50% डाउन पेमेंट के साथ लोन लेने का सोच रहे हैं, तो आपका टारगेट काफी छोटा हो जाएगा। मान लीजिए 20 लाख की एसयूवी के लिए आपको 10 लाख रुपए डाउन पेमेंट के रूप में जुटाने हैं। इसके लिए आपको हर महीने करीब 13,000 रुपए की एसआईपी करनी होगी। इस तरह निवेश का बोझ भी हल्का रहेगा और कार का सपना भी पूरा हो सकता है।

एसआईपी में छुपा है कंपाउंडिंग का जादू
एसआईपी लॉन्ग-टर्म निवेश के लिए एक अच्छा विकल्प है। बीपीएन फिनकैप के डायरेक्टर एके निगम कहते हैं कि इसका सबसे बड़ा फायदा कंपाउंडिंग है। समय के साथ यह फंड को धीरे-धीरे बड़ा बनाता है। लंबे समय तक एसआईपी करने से आप बाजार की उठापटक का फायदा उठा सकते हैं। इससे निवेश की लागत भी औसतन कम हो जाती है। इसमें एक साथ बड़ी रकम लगाने की जरूरत नहीं होती।

10-5-3 नियमः जानिए अलग-अलग निवेश से कितना रिटर्न

यह 10-5-3 का आसान नियम बताता है कि अलग-अलग निवेश विकल्पों से औसतन कितना रिटर्न मिल सकता है:

10(इक्विटी): म्यूचुअल फंड या शेयर बाजार में लंबी अवधि के निवेश पर 10% रिटर्न की उम्मीद की जा सकती है। यहां जोखिम, मुनाफा दोनों अधिक।

5(डेट): एफडी, पीपीएफ या डेट फंड जैसे सुरक्षित विकल्पों में 5% रिटर्न मिलता है। पूंजी सुरक्षित रखने के लिए बेहतर।

3(सेविंग्स): बैंक सेविंग्स अकाउंट में रखे पैसे पर 3% ब्याज मिलता है। यहां पैसा इमरजेंसी के लिए रखना चाहिए।

निष्कर्षः ज्यादा जोखिम, लेकिन 10%, सुरक्षित निवेश पर 5% और तुरंत नकदी (लिक्विडिटी) के लिए सालाना 3% रिटर्न मिलता है।

सोमवार को भास्कर बिजनेस गाइड में पढ़ें

मार्केट इनसाइटः टैरिफ पर 'सुप्रीम' फैसले के बाद क्या मार्केट में लौट सकती है तेजी?

फंड का फंडा- जानिए पीएसयू फंड क्या होते हैं? बीते वर्षों में कितना रिटर्न दिया?

आईपीओ- क्लीन मैक्स, ओमनीटेक इंजी. समेत 9 इश्यू 4405 करोड़ रुपए जुटाएंगे

सुझाव और प्रतिक्रिया इस पते पर भेज सकते हैं- business.bhaskar@dbcorp.in

भास्कर Q&A

गिफ्ट दे रहे हैं तो क्लबिंग ऑफ इनकम भी समझें

• मैंने 2013 में होम लोन लिया था। 2023 में ₹7.5 लाख का टॉप-अप लिया। फिलहाल टॉप-अप बाकी है। इस पर लोन प्रोटेक्शन इंश्योरेंस नहीं लिया है। क्या इंश्योरेंस लेना सही रहेगा? -शैलेंद्र कुमार मेहता

आपने लोन का बड़ा हिस्सा पहले चुका दिया है। सिर्फ टॉप-अप के लिए बैंक वाला लोन प्रोटेक्शन इंश्योरेंस लेना फायदेमंद नहीं होगा। यह महंगा पड़ता है और एकमुश्त प्रीमियम जाती है। अक्सर प्रीमियम लोन में जोड़ दी जाती है और उस पर ब्याज भी लगता है। लोन घटने के साथ ही कवर कम होने लगता है। परिवार को अतिरिक्त सुरक्षा नहीं मिलती है। लेकिन इस स्तर पर टर्म इंश्योरेंस लेना ज्यादा समझदारी भरा फैसला हो सकता है। उम्र कम और सेहत ठीक हो तो यह सबसे सस्ता इंश्योरेंस साबित होता है। सम इंश्योर्ड जितना कवर मिलता है। लोन के साथ-साथ परिवार की बाकी जरूरतें भी कवर हो जाती है। अगर आप सिर्फ टर्म इंश्योरेंस कवर करना चाहते हैं तो बकाया टॉप अप से कम से कम 20% अधिक का टर्म इंश्योरेंस लें। अगर जिम्मेदारी इससे अधिक है और ज्यादा भी ले सकते हैं।

मुझे रिटायरमेंट पर 1 करोड़ का फंड मिला है। क्या यह राशि पत्नी को दे सकता हूं? एक वित्त वर्ष में कितनी राशि ट्रांसफर की जा सकती है?- विपिन चंद्र शर्मा, चंडीगढ़

आप अपनी रिटायरमेंट की पूरी राशि पत्नी को गिफ्ट कर सकते हैं। इसकी कोई अधिकतम सीमा नहीं है। आयकर कानून की धारा 56(2)(x) के तहत पति-पत्नी को 'रिश्तेदार' माना गया है। ऐसे रिश्तेदारों से मिला गिफ्ट पूरी तरह टैक्स-फ्री होता है। पत्नी को इस 1 करोड़ रुपए पर कोई टैक्स नहीं देना होगा। हालांकि, यहां 'क्लबिंग का नियम' (धारा 64(1)(iv)) समझना जरूरी है। यदि पत्नी को आपसे मिले पैसे को कहीं निवेश किया जाता है और उससे ब्याज, किराया या कोई अन्य कमाई होती है, तो वह आय पत्नी की नहीं, बल्कि आपकी (पति की) आय मानी जाएगी और टैक्स भी आप ही को देना होगा। यह नियम केवल उस पैसे से होने वाली आय पर लागू होता है, गिफ्ट की मूल राशि पर नहीं। यह प्रावधान इसलिए है ताकि लोग टैक्स बचाने के लिए अपनी आय पत्नी के नाम पर न दिखा सकें। यहां यह साफ करना भी जरूरी है कि यदि पत्नी की अपनी कोई निजी कमाई है (जैसे सैलरी या बिजनेस), तो उस पर यह क्लबिंग का नियम लागू नहीं होता।

एक्सपर्ट पैनलः एसके सेठी, डायरेक्टर, रिया इंश्योरेंस, सीए डॉ. अभय शर्मा

आपके मन में पर्सनल फाइनेंस से जुड़े कोई भी सवाल हों, तो यह क्यूआर कोड स्कैन करके भेजें। एक्सपर्ट जवाब देंगे।

ग्रेट निकोबार में संरचना परियोजना के लिए रास्ता साफ आदिवासी अधिकारों और पर्यावरणीय मुद्दों पर उठे सवाल

भारत के दो हिस्से...पहला असम के पहाड़ों में बसा आदिवासी जिला दीमा हसाओ, दूसरा यहां से 1,400 किलोमीटर दूर अंडमान सागर में दुर्गम द्वीप ग्रेट निकोबार। भौगोलिक रूप से ये दो विपरीत ध्रुव हैं। लेकिन इनके बीच एक गहरा नीतिगत रिश्ता है। दोनों जगहों पर सरकार ने निजी और सार्वजनिक परियोजनाओं के लिए जमीन दी, पर्यावरण और आदिवासी कानूनों की अनदेखी के आरोप लगे, और अदालतों में कठोर प्रश्न पूछे गए। राष्ट्रीय हरित अधिकरण (एनजीटी) ने पिछले दिनों सरकार की 81,000 करोड़ रुपए की ग्रेट निकोबार संरचना परियोजना के लिए रास्ता साफ कर दिया। तर्क दिया कि परियोजना की पर्यावरण मंजूरी में पर्याप्त सुरक्षा उपाय मौजूद हैं। इस मंजूरी पर पर्यावरणविद सवाल उठा रहे हैं। मसले पर सरोकार की पड़ताल।

राष्ट्रीय हरित (झंडी) अधिकरण

पर्यावरण की चिंता *यूपीए बनाम राजग*

यूपीए सरकार (2004–2014) :

यूपीए काल में पर्यावरण नीति की सबसे बड़ी उपलब्धि थी वन अधिकार अधिनियम 2006। इसने करोड़ों वन निवासियों को भूमि पर कानूनी हक दिया और ग्राम सभाओं को वन भूमि के किसी भी उपयोग पर अनिवार्य सहमति का अधिकार दिया।

वेदांता–नियामगिरि, ओड़ीशा
2010
–पर्यावरण मंत्री जयराम रमेश ने 1.7 अरब डालर की बाक्साइट खनन परियोजना खारिज की।
–वन अधिकार अधिनियम और जनजातीय अधिकारों का हवाला दिया।

नियामगिरि –ग्राम सभा
2013
–सर्वोच्च न्यायालय की निगरानी में 12 ग्राम सभाओं ने सर्वसम्मति से खनन के विरुद्ध मतदान किया। आदिवासी स्वशासन का ऐतिहासिक उदाहरण।

पास्को स्टील, ओड़ीशा
2010–12
एनसी सक्सेना समिति ने वन अधिकार अधिनियम उल्लंघन पाया; एनजीटी ने मार्च 2012 में पर्यावरण मंजूरी निलंबित की। साल 2017 में पास्को ने परियोजना से हाथ खींचे।

आर्द्रभूमि संरक्षण नियम
2010
भारत की आर्द्रभूमियों के लिए पहला व्यापक कानूनी ढांचा
–2017 में राजग ने इसे संशोधित किया। पर्यावरणविदों ने कमजोर बताया।

राजग सरकार (2014 के बाद) : राष्ट्रीय हित का कवच–
राजग सरकार के काल में एक स्पष्ट नीतिगत बदलाव आया। 'एकल खिड़की मंजूरी' की अवधारणा ने पर्यावरण मंत्रालय को एक स्वतंत्र नियामक से अधिक एक सुविधा प्रदाता में बदलना शुरू किया। राष्ट्रीय सुरक्षा और रणनीतिक महत्त्व के तर्कों ने वन कानूनों, ग्राम सभाओं और वैज्ञानिक समितियों की आवाज को पृष्ठभूमि में धकेलना शुरू किया।

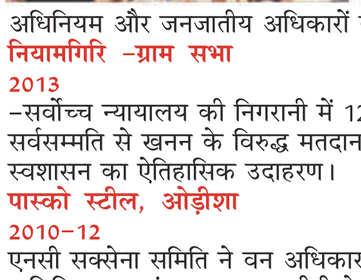

विवादास्पद चार धाम महामार्ग
साल 2016–2021
889 किमी परियोजना को 53 अलग कार्यों में बांटा। पर्यावरण आकलन से बचने के लिए सर्वोच्च न्यायालय से नियुक्त समिति के अध्यक्ष रवि चोपड़ा ने कहाः– पर्यावरण आकलन न करके अकल्पनीय नुकसान किया गया।

केन–बेतवा नदी जोड़
2021
44,605 करोड़ रुपए की कैबिनेट मंजूरी। सर्वोच्च न्यायालय की केंद्रीय अधिकार समिति की लंबित रपट में कहा गया कि 5,803 हेक्टेयर पन्ना व्याघ्र संरक्षित क्षेत्र का मूल भाग डूबेगा। रपट में परियोजना को आर्थिक रूप से अव्यावहारिक बताया गया।

पर्यावरण आकलन मसौदा
2020
बिना मंजूरी के चल रही परियोजनाओं को वैधानिक दर्जा देने का प्रस्ताव; सामरिक परियोजनाओं को जन–सुनवाई से छूट। भारी विरोध के बाद वापस लेना पड़ा।

वन संरक्षण संशोधन अधिनियम
2023
साल 1996 के सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय की व्यापक वन परिभाषा को सरकारी अभिलेखों तक सीमित किया। लाखों हेक्टेयर बिना अभिलिखित वन कानूनी संरक्षण से बाहर।

ग्रेट निकोबार 2022–26
मंजूरी, फरवरी 2026 में सभी याचिकाएं खारिज। उच्चाधिकार समिति रपट गोपनीय; एक करोड़ पेड़ और लेदरबैक कछुओं के आवास पर खतरा।

जनसत्ता सरोकार

राष्ट्रीय हरित अधिकरण का यह आदेश महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में नियोजित रणनीतिक महत्त्व की भविष्य की परियोजनाओं के लिए एक संदर्भ बिंदु के रूप में कार्य करेगा। इससे 166 वर्ग किलोमीटर की परियोजना पर भी नए सिरे से ध्यान केंद्रित होता है, और सवाल उठते हैं। यह एक रणनीतिक और आर्थिक केंद्र होगा जिसके लिए 130 वर्ग किलोमीटर वन भूमि को स्थानांतरित करने और लगभग दस लाख पेड़ों को काटने की आवश्यकता होगी।

ग्रेट निकोबार परियोजना क्या है?

ग्रेट निकोबार द्वीप 910 वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। यहां भारत का सबसे दक्षिणी स्थान, इंदिरा पाइंट स्थित है। द्वीप पर सरकार का मुख्य लक्ष्य यह है कि एक आर्थिक और रक्षा केंद्र बनाया जाए। यह लक्ष्य चार स्तंभों पर आधारित है : एक एकीकृत टाउनशिप जिसमें रक्षा सुविधाएं होंगी, एक ट्रांसशिपमेंट बंदरगाह, एक नागरिक और सैन्य हवाई अड्डा और 450 मेगावाट क्षमता वाला गैस और सौर ऊर्जा आधारित संयंत्र।

प्रारंभ में नीति आयोग द्वारा संचालित इस परियोजना की कार्यान्वयन एजंसी अब अंडमान और निकोबार द्वीप समूह एकीकृत विकास निगम लिमिटेड (एएनआइडीसीओ) है। परियोजना के लिए निर्धारित कुल क्षेत्रफल में से लगभग 149 वर्ग किलोमीटर का उपयोग एकीकृत टाउनशिप के लिए, 8.45 वर्ग किलोमीटर का नए हवाई अड्डे के लिए, 7.66 वर्ग किलोमीटर का बंदरगाह के लिए और 0.39 वर्ग किलोमीटर का विद्युत संयंत्र के लिए किया जाएगा। एकीकृत टाउनशिप में आवासीय, वाणिज्यिक, पर्यटन, रसद और रक्षा सुविधाएं शामिल होंगी।

> ***बंदरगाह*** और हवाई अड्डे के लिए भूमि पुनर्ग्रहण का भी प्रस्ताव है। बंदरगाह के लिए अनुमानित 2.98 वर्ग किलोमीटर और हवाई अड्डे के लिए 1.94 वर्ग किलोमीटर भूमि का पुनर्ग्रहण किया जाएगा।

माल ढुलाई बंदरगाह ग्रेट निकोबार के दक्षिणी छोर पर गलाथिया खाड़ी में होगा, जो एक पारिस्थितिक रूप से महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। यह लेदरबैक कछुओं के घोंसले बनाने के स्थलों का घर है, और जहां गलाथिया नदी समुद्र में गिरती है। बंदरगाह के पूर्व में दोहरे उपयोग वाले अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का प्रस्ताव है। यह द्वीप पर नौसेना के आइएनएस बाज नौसैनिक हवाई अड्डे के बाद दूसरा हवाई अड्डा होगा। हवाई अड्डे के निर्माण के लिए 4.2 वर्ग किलोमीटर भूमि का अधिग्रहण करना होगा और इससे 379 परिवार प्रभावित होंगे, जिनमें से ज्यादातर मुख्य भूमि से आकर द्वीप पर बसे हैं।

बंदरगाह और हवाई अड्डे के लिए भूमि पुनर्ग्रहण का भी प्रस्ताव है। बंदरगाह के लिए अनुमानित 2.98 वर्ग किलोमीटर और हवाई अड्डे के लिए 1.94 वर्ग किलोमीटर भूमि का पुनर्ग्रहण किया जाएगा। इसके लिए 33.35 मिलियन घन मीटर सामग्री की आवश्यकता का भी अनुमान है। एईकाम इंडिया प्राइवेट लिमिटेड द्वारा नीति आयोग के लिए तैयार की गई साल 2021 की पूर्व–व्यवहार्यता रपट के अनुसार, सीमेंट, पत्थर, रेत और इस्पात को निर्माण स्थलों तक पहुंचाना होगा।

केंद्र सरकार द्वारा इस परियोजना को आगे बढ़ाने के पीछे तीन प्रमुख कारण प्रतीत होते हैं: भू–राजनीति, समुद्री व्यापार और भौगोलिक लाभ। ग्रेट निकोबार द्वीप समूह, हिंद महासागर और प्रशांत महासागर को जोड़ने वाले संकरे समुद्री मार्ग मलक्का जलडमरूमध्य के सबसे निकट स्थित भारत का भूभाग है। भारत में पश्चिमी तट पर स्थित केरल के विझिंजम में केवल एक ही चालू मालवाहक बंदरगाह है। इस प्रकार, गलाथिया खाड़ी का बंदरगाह समुद्री व्यापार में हिस्सेदारी के लिए श्रीलंका के कोलंबो और हंबनटोटा बंदरगाहों, मलेशिया के पोर्ट क्लांग और सिंगापुर के बंदरगाह के साथ प्रतिस्पर्धा करेगा।

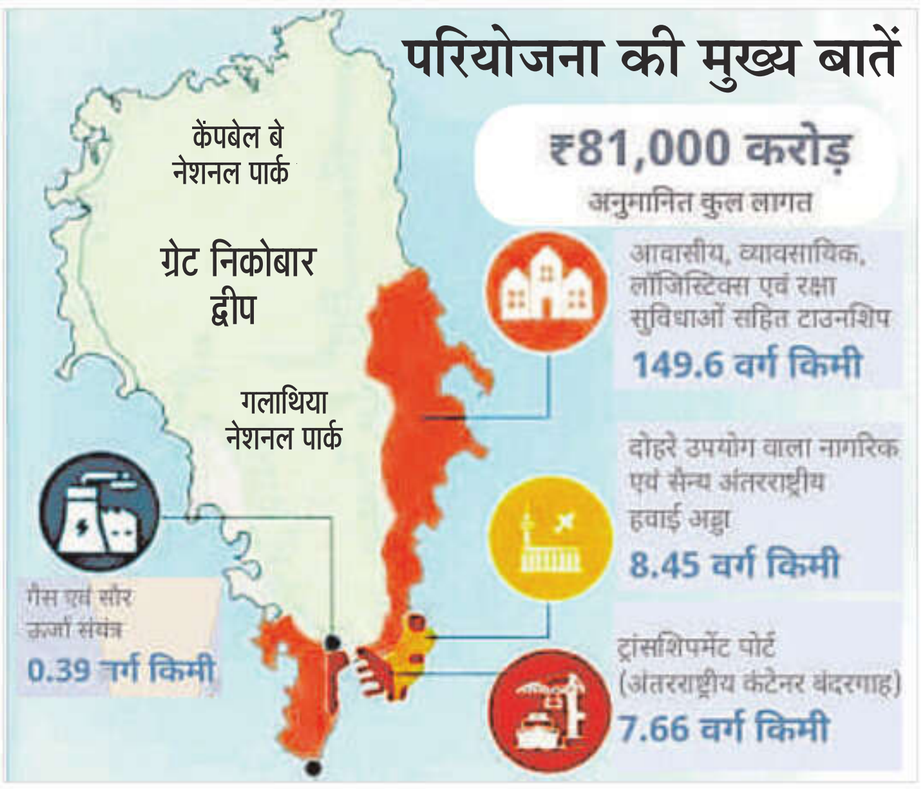

पर्यावरण और सामाजिक प्रभाव

ग्रेट निकोबार पारिस्थितिक रूप से समृद्ध, दूरस्थ और कम आबादी वाला द्वीप है। यह विशाल परियोजना इसके जंगलों, वन्यजीवों और स्थानीय समुदायों को गंभीर रूप से प्रभावित करेगी। सबसे पहले, बुनियादी ढांचे के निर्माण के कारण 130 वर्ग किलोमीटर के वन क्षेत्र को स्थानांतरित करके दस लाख से अधिक पेड़ों की कटाई की जाएगी। निकोबार द्वीप समूह सुंडालैंड जैव विविधता मुख्य भाग का हिस्सा है।

राजस्व भूमि को छोड़कर संपूर्ण ग्रेट निकोबार द्वीप समूह ग्रेट निकोबार जैवमंडल अभयारण्य का हिस्सा है। यह द्वीप तटीय आर्द्रभूमि वनों, मिश्रित सदाबहार वनों और सदाबहार पहाड़ी वनों का घर है। इस परियोजना के लिए गलाथिया खाड़ी वन्यजीव अभयारण्य और मेगापोड वन्यजीव अभयारण्य को अधिसूचित नहीं किया गया है। निकोबार मेगापोड एक स्थलीय पक्षी है जो केवल निकोबार द्वीप समूह में पाया जाता है और परियोजना क्षेत्र इसके घोंसलों को प्रभावित करेगा।

पर्यावरण मंजूरी दस्तावेज में ही गलाथिया खाड़ी में लेदरबैक कछुओं के घोंसला बनाने वाले स्थलों पर बंदरगाह के प्रभाव को स्वीकार किया गया है। इसमें कहा गया है कि द्वीप के पश्चिमी हिस्सों में कोई गतिविधि नहीं की जाएगी, क्योंकि कछुओं द्वारा इन स्थानों को वैकल्पिक स्थलों के रूप में उपयोग किए जाने की संभावना है। वन्यजीव आवासों के निरस्तीकरण के प्रभाव को कम करने के लिए, अंडमान और निकोबार प्रशासन से लिटिल निकोबार द्वीप पर लेदरबैक कछुआ अभयारण्य, मेनचल द्वीप पर मेगापोड अभयारण्य और पूरे मेरोए द्वीप में आने वाला एक प्रवाल अभयारण्य अधिसूचित करने का अनुरोध किया गया था।

इस परियोजना से स्वदेशी शोंपेन और निकोबारी समुदाय द्वारा उपयोग किए जाने वाले जंगलों और आदिवासी आरक्षित क्षेत्रों पर भी असर पड़ेगा। शोंपेन समुदाय के लगभग 250 सदस्य हैं, जो शिकारी–संग्रहकर्ता हैं और बाहरी दुनिया से उनका नियमित संपर्क नहीं है। इन सभी परियोजनाओं और गतिविधियों के कारण द्वीप की जनसंख्या में भारी वृद्धि होगी। आबादी 8,500 से बढ़कर 2050 तक 6.5 लाख हो जाएगी।

निकोबारियों की एक लंबे समय से लंबित मांग– सुनामी से पहले बसे उनके गांवों में पुनर्वास भी अधूरी रह सकती है। जनवरी में, आदिवासी परिषद ने आरोप लगाया कि द्वीप प्रशासन उन पर इन गांवों पर दावा छोड़ने के लिए दबाव डाल रहा है।

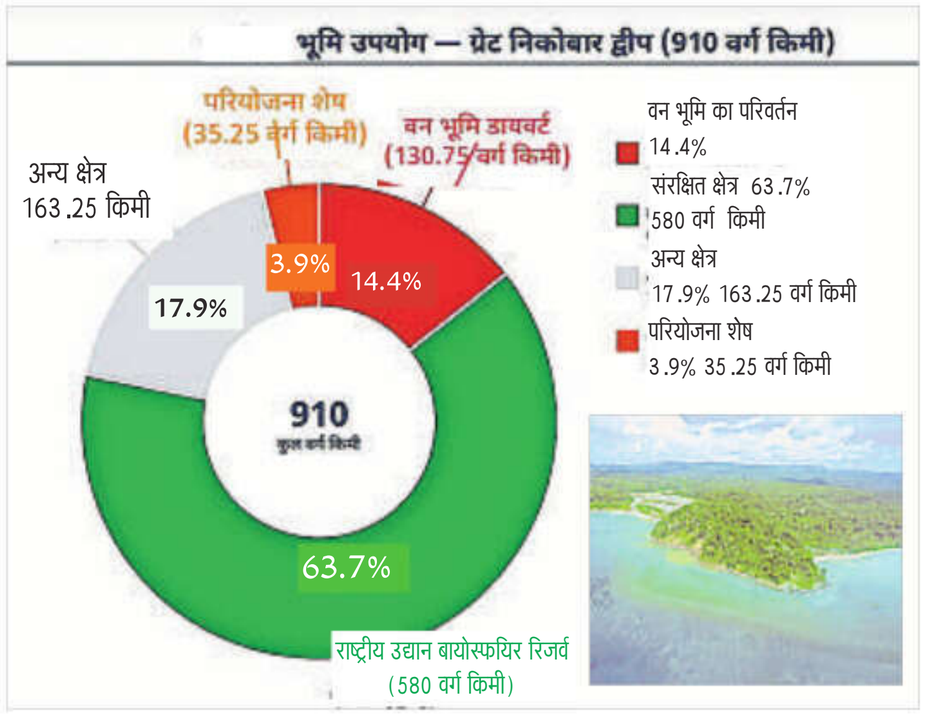

एनजीटी के विरोधाभासी निर्णयों पर उठते सवाल

राष्ट्रीय हरित अधिकरण अधिनियम, 2010 के तहत 18 अक्तूबर, 2010 को इसकी स्थापना की गई थी। इसका स्पष्ट उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण, वन संरक्षण और प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन से संबंधित मामलों का प्रभावी और शीघ्र निपटान करना और उद्देश्य वैज्ञानिक विशेषज्ञता और पारिस्थितिक सिद्धांतों पर आधारित न्याय प्रदान करने में सक्षम एक विशेष निकाय बनाना था।

हालांकि, ग्रेट निकोबार के मामले में, अधिकरण अपने इस दायित्व को निभाने में विफल रहा। उसने किसी दावे की गहन जांच किए बिना मंजूरी दे दी। ।

ऐसा करके अधिकरण ने एक खतरनाक मिसाल कायम कर दी है। अब किसी भी परियोजना को न्यायिक स्वीकृति प्राप्त करने के लिए केवल रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण बताना ही काफी होगा। यह हिमालयी राज्यों में चल रहे विकास कार्यक्रमों के संदर्भ में भी चिंताजनक संबंध स्थापित करता है। चार धाम सड़क चौड़ीकरण परियोजना को सर्वोच्च न्यायालय की स्वीकृति भी इसी व्यापक औचित्य राष्ट्रीय सुरक्षा के आधार पर दी गई थी। यह तरीका पर्यावरणीय आपदा का द्वार खोलता है।

एनजीटी ने हाल ही में विरोधाभासी फैसले सुनाए हैं। 12 फरवरी को, एक पीठ ने कहा कि पर्यावरण उल्लंघन मानव जीवन के खिलाफ गंभीर अपराध हैं। ठीक चार दिन बाद, 16 फरवरी को, एक अन्य पीठ ने ग्रेट निकोबार परियोजना को मंजूरी दे दी।

असम : तीन हजार बीघा यानी पूरा एक जिला!

गुवाहाटी उच्च न्यायालय की टिप्पणी थी– 3,000 बीघा! पूरा जिला?

अगस्त 2025 में गुवाहाटी उच्च न्यायालय में न्यायमूर्ति संजय कुमार मेधी की पीठ के सामने असम के दीमा हसाओ जिले में एक सीमेंट कंपनी को 3,000 बीघा आदिवासी भूमि आबंटित करने का मामला आया। 12 अगस्त की सुनवाई में न्यायमूर्ति मेधी ने पूछा– 3,000 बीघा! पूरा जिला? यह क्या हो रहा है?

मामले की पृष्ठभूमि : यह मामला दीमा हसाओ जिले में प्रस्तावित महाबल सीमेंट प्राइवेट लिमिटेड (बाद में जेके लक्ष्मी सीमेंट द्वारा अधिग्रहित) के सीमेंट संयंत्र से जुड़ा है। उम्रांग्सो कस्बे से नौ किलोमीटर दूर प्रस्तावित संयंत्र की भूमि में दो बसे हुए गांव आते हैं–नोब्दी लोंगकुकरो (डिमासा समुदाय) और छोटो लारफेंग (कार्बी समुदाय)।

दीमा हसाओ संविधान की छठी अनुसूची के अंतर्गत आता है–एक विशेष प्रावधान जो आदिवासी आबादी की भूमि और संसाधनों की रक्षा के लिए स्वायत्त परिषदों को अधिकार देता है। दीमा हसाओ स्वायत्त परिषद ने अक्तूबर 2024 में 2,000 बीघा व नवंबर 2024 में अतिरिक्त 1,000 बीघा–कुल 3,000 बीघा भूमि सीमेंट कंपनी को दे दी।

ग्रामीणों का आरोप : मुआवजे पर सवाल उठे। ग्रामीणों का आरोप है कि साल 2024 में आयोजित जन सुनवाई में उन्हें उनके अधिकारों की कोई जानकारी नहीं दी गई। केवल यह घोषणा हुई कि जमीन ली जाएगी और बदले में मुआवजा मिलेगा।

जो हुआ वह इस प्रकार था–
1–भूमि अधिग्रहण की सुविधा के लिए परिषद को लगभग 48 से 50 करोड़ रुपए मिले।
2–गांव वालों को कुल मिलाकर केवल लगभग दो करोड़ रुपए दिए गए। प्रत्येक परिवार को दो लाख रुपए मिले, ग्राम प्रधानों को 15 लाख रुपए मिले।
3–जब नोब्दी लोंगकुकरो के निवासियों को बड़े पक्षपात का पता चला तो उन्होंने चेक लौटा दिए।
4–16 मई 2024 को ग्रामीणों ने परिषद को औपचारिक शिकायत दी और जबरदस्ती करने और गलत जानकारी का आरोप लगाया
5–31 जुलाई 2024 को बुलडोजर लेकर अधिकारी जमीन पर कब्जे के लिए पहुंचे। बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन हुए। स्थानीय तीन युवकों ने 31 अक्तूबर 2024 को पुलिस में शिकायत दर्ज कराई कि परिषद के एक कार्यकारी सदस्य ने अपने सुरक्षाकर्मी से बंदूक छीनकर प्रदर्शनकारियों को डराने के लिए गोलीबारी की। परिषद सदस्य ने इन आरोपों को झूठा और निराधार बताया।
6–अगस्त 2024 में एक सामाजिक कार्यकर्ता ने जनहित याचिका दायर की। दिसंबर 2024 में स्वयं प्रभावित ग्रामीणों ने रिट याचिका दायर की जो जनवरी 2025 में स्वीकार कर ली गई।
यह मामला अभी गुवाहाटी उच्च न्यायालय में विचाराधीन है।

कृत्रिम मेधा : संभावना और आशंका

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

भारत में सबसे बड़ी समस्या रोजगार की कमी है। वर्तमान में 'आधिकारिक' बेरोजगारी दर 5.1 फीसद है, लेकिन हम जानते हैं कि यह इससे कहीं अधिक है। युवा बेरोजगारी दर 15 फीसद है। लगभग 55 फीसद 'रोजगारशुदा' लोग स्वरोजगार या दिहाड़ी मजदूर हैं। समृद्ध क्षेत्रों में कृषि कार्य पहले से ही मशीनीकृत हैं। ग्रामीण परिवार बेरोजगारी को यह बहाना बनाकर छिपाते हैं कि उनका बेटा या बेटी 'स्वरोजगार' में है।

कृत्रिम मेधा (एआइ) का दौर शुरू हो चुका है। यह सच है कि एआइ मानव क्षमताओं और उत्पादकता को कई गुना बढ़ा देगा।

भारत के पास मानव संसाधनों की विशाल और लगातार बढ़ती संपदा है (कम से कम 2050 तक)। हालांकि, इसकी गुणवत्ता विकसित देशों के मानव संसाधनों से काफी अलग है। एक विकसित देश में व्यावहारिक रूप से हर कोई स्कूली शिक्षा प्राप्त करता है और विद्यार्थियों की आबादी का एक बड़ा हिस्सा कालेज तक की शिक्षा ग्रहण करता है। वहां जीवन भर सीखने और नए कौशल हासिल करने का अवसर होता है। भारत में जनसांख्यिकीय लाभांश के साथ इसका बोझ भी आता है। देश में प्राथमिक स्तर पर स्कूली नामांकन बहुत अधिक है, लेकिन उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर नामांकन में हर स्तर पर गिरावट देखी जा रही है। उच्च शिक्षा में सकल नामांकन अनुपात (जीईआर) 45-50 फीसद के बीच है। कालेज में नामांकित अधिकांश छात्र स्नातक की डिग्री प्राप्त करते हैं, जो उन्हें 'कुशल' या 'रोजगार योग्य' नहीं बनाती है- यही मुख्य कारण है कि युवा वर्ग के लिए उपयुक्त नौकरी खोजना एक कठिन कार्य है।

भविष्य और भय

मैंने एंथ्रोपिक के सीईओ डारियो अमोदेई के कापीराइट वाले 38 पन्नों के निबंध 'द एडोलसेंस आफ टेक्नोलाजी' का सारांश पढ़ा है। आर्थिक व्यवधान पर वे कहते हैं कि कृत्रिम मेधा 'अभूतपूर्व गति से और व्यापक व्यावसायिक श्रेणियों में श्रम बाजारों को बाधित कर सकती है, जिससे *निकट भविष्य में* नौकरियों का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा (वाइट कालर जाब) विस्थापित हो सकता है।' यह डरावना है। भारत में एक अन्य अध्ययन में पाया गया कि कृत्रिम मेधा जाति को पहचानती है। यदि मनुष्य ने इसे जातिगत पूर्वाग्रह सिखाया है, तो यह और भी भयावह है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का यह कहना सही है कि एआइ भविष्य और समृद्धि के द्वार खोलेगा। मगर नौकरियों के नुकसान का भी डर है। टिकट जारी करने और चेक करने वाले, बस और ट्रेन कंडक्टर, रेल सिग्नलकर्मी, यातायात पुलिस अधिकारी, स्टेनोग्राफर और टाइपिस्ट, टूरिस्ट गाइड, अनुवादक, लैब तकनीकी कर्मी, बैंक कर्मी और निजी शिक्षक जैसी नौकरियां खत्म हो सकती हैं। माइक्रोसाफ्ट के सीईओ ने कहा है कि कुछ महत्त्वपूर्ण नौकरियों में कई काम स्वचालित हो जाएंगे। कंपनी ने वर्ष 2025 में हजारों नौकरियां खत्म कर दीं। टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज ने 2025 में घोषणा की कि पुनर्गठन प्रक्रिया के तहत वह बारह हजार से अधिक कर्मचारियों को नौकरी से निकाल देगी। विनोद खोसला का कहना है कि एआइ सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं को खत्म कर सकता है और बीपीओ कंपनियां अगले पांच वर्षों में लगभग गायब हो सकती हैं।

भारत में सबसे बड़ी समस्या रोजगार की कमी है। वर्तमान में 'आधिकारिक' बेरोजगारी दर 5.1 फीसद है, लेकिन हम जानते हैं कि यह इससे कहीं अधिक है। युवा बेरोजगारी दर 15 फीसद है। लगभग 55 फीसद 'रोजगारशुदा' लोग स्वरोजगार या दिहाड़ी मजदूर हैं। समृद्ध क्षेत्रों में कृषि कार्य पहले से ही मशीनीकृत हैं। ग्रामीण परिवार बेरोजगारी को यह बहाना बनाकर छिपाते हैं कि उनका बेटा या बेटी 'स्वरोजगार' में है। यदि शहरी क्षेत्रों में भी श्रमिक वर्ग के लिए रोजगार कम हो जाएं तथा सूचना प्रौद्योगिकी और उसके उत्पादों एवं सेवाओं जैसे 'कुशल' क्षेत्रों में शिक्षित युवाओं को रोजगार न मिले, तो स्थिति विस्फोटक हो जाएगी।

वैश्विक स्तर पर अपरिहार्य चुनौतियों से निपटने के लिए क्या तैयारी है? मेरी समझ से भारत समेत पूरी दुनिया अभी तक समाधानों के साथ तैयार नहीं हैं। मुख्य आर्थिक सलाहकार (सीईए) ने उन्नत अर्थव्यवस्थाओं *(जहां जनसंख्या कम हो रही है, वहां एआइ लाभकारी हो सकता है)* और विकासशील देशों *(जहां एआइ राज्य की क्षमता के लिए एक कठिन परीक्षा साबित होगा)* पर एआइ के प्रभाव में अंतर को रेखांकित किया है। स्वाभाविक रूप से समाधान भी अलग-अलग होंगे। उनका समाधान यह है कि *'निरंतर क्रियान्वयन से भारत पहला ऐसा बड़ा समाज बन सकता है... जो तकनीक को व्यापक रोजगार क्षमता से जोड़ सके।'* काश, समाधान इतना सरल होता।

कठिन उपाय

प्रौद्योगिकी को लगातार अपनाने के शुरुआती परिणाम नौकरियों में कमी के रूप में सामने आए हैं, कम से कम भारतीय कारखानों में यह स्थिति देखी जा रही है। मगर जैसा कि *इकोनोमिस्ट* कहता है, 'आविष्कार और प्रसार' के बीच समय अंतराल होता है, और इस दौरान प्रौद्योगिकी को अपनाने से होने वाले प्रभाव को समाहित करने के लिए कठोर कदम उठाए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, बड़ी संख्या में नौकरी चाहने वालों और रोजगार के व्यापक अवसरों की जरूरत के मद्देनजर भारत को तैयार रहना होगा:

– यह सुनिश्चित करना कि विकसित देशों के विपरीत, भारत को उन युवाओं के लिए *विभिन्न प्रकार* के रोजगार सृजित करने की जरूरत है, जो उच्च प्राथमिक, माध्यमिक या उच्च माध्यमिक स्तर पर स्कूल छोड़ सकते हैं;

– उच्च माध्यमिक स्तर पर छात्रों को योग्यता और क्षमता के आधार पर शैक्षणिक तथा गैर-शैक्षणिक श्रेणी में अलग करना;

– गैर-विज्ञान विषयों के अनेक पाठ्यक्रमों को बंद कर विद्यार्थियों को स्नातकोत्तर, 'स्टेम' या कौशल पाठ्यक्रमों की ओर मोड़ना;

– शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण प्रबंधन में बड़े पैमाने पर निवेश करना;

– स्थानीय या क्षेत्रीय बाजारों को विकसित करना, जो क्षेत्रीय बैंकों के सहयोग से गुणवत्तापूर्ण वस्तुएं एवं सेवाएं प्रदान कर खपत बढ़ाएं, और केवल बड़े व्यवसाय, बड़े बाजार, बड़ी शृंखलाओं और बड़े बैंकों पर केंद्रित न रहें;

– यह स्वीकार करना कि वर्तमान में एमएसएमई भारत में सबसे बड़े रोजगार-सृजक हैं। यदि एआइ इन उद्यमों की मदद करे, जैसा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री ने आश्वासन दिया है, तो ये अधिक रोजगार पैदा कर सकते हैं। मुख्य आर्थिक सलाहकार ने कहा है कि भारत को 'कम से कम अस्सी लाख नौकरियां हर वर्ष' पैदा करनी होंगी। वास्तविक संख्या इससे भी अधिक होगी;

– एआइ को अपनाने और इसके परिणामस्वरूप रोजगार खत्म करने वालों से यह अपेक्षा करना कि वे इसी *समान* संख्या में रोजगार सृजित करेंगे। हमें जेमी डिमन (सीईओ, जेपी मार्गन चेस) से सहमत होने और 'छंटनी' पर प्रतिबंध लगाने की आवश्यकता नहीं है। निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व ने व्यवसायों में सामाजिक उत्तरदायित्व का एक स्तर स्थापित किया है; जिसमें रोजगार सृजन की जिम्मेदारी को भी शामिल किया जाना चाहिए।

भविष्य की आशंका

रोजगार के बिना या कम रोजगार वाली दुनिया एक कष्टकारी भविष्य की ओर अग्रसर होगी। 'काम' ही मनुष्य की पहचान है। भोजन की तलाश के अलावा कोई भी अन्य प्राणी स्वेच्छा से काम नहीं करता। यदि कृत्रिम मेधा हमारा सारा काम कर दे और *सभी* के लिए समृद्धि लाए, तो मनुष्य क्या करेगा? आने वाले कुछ वर्षों में कृत्रिम मेधा का प्रभाव स्पष्ट रूप से सामने आएगा, तब तक इस प्रश्न पर विचार करने का समय है।

सुनहरा सपना और यथार्थ

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

जब देखती हूं मुंबई और दिल्ली में होते इस तरह के सम्मेलनों को, तो वास्तव में ऐसा लगता है जैसे किसी दूसरे ग्रह के नजारे देख रही हूं। इसलिए उम्मीद करती हूं कि एआइ जल्दी से जल्दी भारत के देहातों में फैले, ताकि हम बुनियादी समस्याओं का समाधान ढूंढ़ पाएं। बदहाल शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं की समस्याएं। बिजली, पानी की समस्याएं। गरीबी, गंदगी की समस्याएं। क्या एआइ इन सारी समस्याओं के समाधान ढूंढ़ सकेगा?

यह लेख एक गांव में बैठकर लिख रही हूं। यहां से देखा मैंने पिछले सप्ताह दिल्ली में हो रहे एआइ समिट का तामझाम। सच पूछिए तो अजीब-सा लगा। यहां बैठकर जब समाचार चैनलों पर सुने मैंने एआइ के महारथियों के भाषण, तो लगा जैसे ये लोग किसी दूसरे ग्रह से बातें कर रहे थे। ऐसा लगा जैसे इन महारथियों को जानकारी नहीं है कि भारत के सरकारी स्कूलों का हाल क्या है। जानते नहीं हैं कि अभी तक इन स्कूलों में कंप्यूटर भी इतने थोड़े आए हैं कि इंटरनेट से वास्ता जोड़ना हो, तो सेलफोन से होता है।

यह गांव महाराष्ट्र में है। यहां एक बड़ा निजी स्कूल ऐसा है, जिसको सरकारी स्कूलों के हिसाब से देखा जाए, तो काफी अच्छा है। यहां थोड़ी बहुत फीस लगती है, लेकिन अध्यापक आते हैं रोज और बच्चों को वाणिज्य और विज्ञान से लेकर साहित्य तथा अंग्रेजी भाषा तक पढ़ाने का इंतजाम है। बच्चे अच्छी-सी वर्दी पहन कर आते हैं साइकिलों पर। लड़कियों की वर्दी है नीली कमीज, सफेद सलवार और बालों में लाल रंग के फीते। लड़कों की वर्दियां विदेशी पैंट-शर्ट हैं, वही नीले सफेद रंगों में।

मैं इस गांव में आती रही हूं पिछले कोई तीन दशकों से, इसलिए जानती हूं कई लोगों को, जिनकी पढ़ाई इस स्कूल में हुई है। लिख-पढ़ लेते हैं सब, लेकिन इतना नहीं कि कोई अच्छी नौकरी हासिल कर सकें। इसलिए मुंबई से यहां बसे धनवानों के घरों में नौकर बनते हैं। कोई ड्राइवर है, कोई सुरक्षा गार्ड का काम करता है और बहुत तरक्की जो करते हैं, उनको मैनेजर या 'हाउसकीपर' की नौकरी मिलती है। इनमें से एक भी नहीं मिला है मुझे जो अंग्रेजी बोल सकता हो या बुनियादी गणित से आगे बढ़ चुका हो। कंप्यूटर की समझ है, लेकिन एआइ के बारे में कोई नहीं जानता है।

यहां गरीबों की बस्ती में एक दूसरा स्कूल है, जहां बच्चे नंगे पांव आते हैं स्कूल में घिसे, पुराने कपड़ों में। स्कूल को एक पुराने किस्म के सरकारी बंगले में बनाया गया है, जिसकी छत में से बरसात के मौसम में पानी इतना गिरता है कि स्कूल को बंद किया जाता है इस मौसम में। यहां दो अध्यापकों के आने का इंतजाम है, लेकिन वे आती हैं इस गांव से कई किलोमीटर दूर एक छोटे शहर से। देहात के हिसाब से इनका वेतन अच्छा है, लेकिन पढ़ाने तभी आती हैं, जब आना जरूरी हो। जब चुनाव होते हैं, तो इनकी ड्यूटी कहीं और लग जाती है। बच्चों की पढ़ाई में जो नुकसान होता है, इसकी कोई परवाह नहीं करता है। यहां जो बच्चे पढ़ने आते हैं, उनके माता-पिता इतने गरीब हैं कि इनके झुग्गीनुमा घरों में कोई सुविधा नहीं होती है बिजली-पानी की।

समंदर किनारे इस गांव की तस्वीर को मैंने आपके लिए विस्तार से खींचा है, इसलिए कि ऐसे गांव भारत के हर राज्य में आपको मिलेंगे। महाराष्ट्र भारत के विकसित राज्यों में गिना जाता है, तो आप कल्पना कीजिए कि बिहार और उत्तर प्रदेश में क्या हाल होता होगा गांवों के सरकारी स्कूलों का। स्वास्थ्य सेवाएं इस गांव में न होने के बराबर है। एक कस्बा है कुछ दूरी पर जहां मरीजों को ले जाया जाता है, लेकिन बीमारी गंभीर हो तो कम से कम तीस किलोमीटर दूर जाना पड़ता है। बहुत गंभीर हो तो मुंबई जाना पड़ता है, जो इस गांव से सौ किलोमीटर दूर है। एआइ के विशेषज्ञ कहते हैं कि शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में एआइ बहुत काम आएगा। यह बात सच भी है। पिछले सप्ताह मेरे घुटने में थोड़ी तकलीफ थी, तो मैंने चैटजीपीटी से सलाह ली और बड़े ध्यान से उसने मेरी तकलीफ के बारे में जानकारी ली तथा इलाज बताया। घुटना ठीक हो गया है मेरा बिना डाक्टर से सलाह लेने के। मेरी जानकारी के कई लोग हैं, जो छोटा-मोटा इलाज करवाना हो, तो चैटजीपीटी से करवा लेते हैं। यानी एआइ वास्तव में अपने देश के देहातों में कई लाभ ला सकता है। समस्या यह है कि एआइ को चलाने के लिए बिजली बहुत चाहिए होती है और अपने देहातों में बिजली आती-जाती है अपनी मर्जी से।

इसलिए इस गांव में बैठकर जब मैंने देखे एआइ इम्पैक्ट समिट के दृश्य, जिनमें अपने प्रधानमंत्री को देखा दुनिया के सबसे बड़े राजनेताओं से गले मिलते हुए, तो बहुत अच्छा लगा। और भी अच्छा लगा जब देश के सबसे प्रसिद्ध पत्रकार भी इस सम्मेलन में दिखे। वे न होते, तो शायद गलगोटिया विश्वविद्यालय का वह झूठ न पकड़ा जाता, जिसमें एक चीन में बनाए हुए रोबोट कुत्ते को विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने अपने छात्रों का बनाया हुआ बताने की कोशिश की। इन पत्रकारों में से कुछ ऐसे भी हैं, जो चुनावों के मौसम में देश के ग्रामीण क्षेत्रों में घूमने आते हैं, लेकिन अजीब समस्या हमारी यह है कि हम जब वापस दिल्ली और मुंबई जाते हैं, तो भूल जाते हैं कि जब तक शहरी इंडिया और ग्रामीण भारत के तार जोड़ने का काम नहीं होता है, तब तक एआइ बेमतलब रहेगा, बिल्कुल वैसे जैसे 2047 तक भारत का विकसित होना बेमतलब लगता है।

सुनहरा सपना है, लेकिन देश के यथार्थ से बहुत दूर लगता है इस गांव से। जब देखती हूं मुंबई और दिल्ली में होते इस तरह के सम्मेलनों को, तो वास्तव में ऐसा लगता है जैसे किसी दूसरे ग्रह के नजारे देख रही हूं। इसलिए दिल से उम्मीद करती हूं कि एआइ जल्दी से जल्दी भारत के देहातों में फैले, ताकि हम उन बुनियादी समस्याओं का समाधान ढूंढ़ पाएं, जो मानव बुद्धि से सुलझे नहीं हैं अभी तक। बदहाल शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाओं की समस्याएं। बिजली, पानी की समस्याएं। ग़रीबी, गंदगी की समस्याएं। क्या एआइ इन सारी समस्याओं के समाधान ढूंढ़ सकेगा? ऐसे सवाल मन में आते रहे एआइ सम्मेलन को दूर से देखते समय।

हमने क्या किया

संदर्भ

राकेश सिन्हा

सामाजिक प्रश्नों पर राजनीति का वर्चस्व अब एकाधिकार तक पहुंच गया है। परिणामत: विवेक और तर्क तथा दीर्घकालिक सोच का उपयोग समाप्त हो गया है। सामाजिक बुराइयों को सामाजिक संघर्ष का रूप देना राजनीति में उपयोगी हो गया। बाबा साहब आंबेडकर ने प्रश्न किया था कि कांग्रेस, हिंदू महासभा, साम्यवादियों और साधु-संतों ने अस्पृश्यता समाप्त करने के लिए क्या किया है? अब इस प्रश्न का दायरा बढ़ गया है- 'हम सबने अस्पृश्यता और जातिवाद को मिटाने के लिए क्या किया है?'

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के एक निर्देश से लोग रातोरात दो खेमों में बंट गए। अचानक सैकड़ों 'परीक्षक' सामने आ गए, जो हर किसी पर इस या उस पार होने के विकल्प के साथ प्रश्न खड़ा करने लगे। यों यह समस्या पानी के बुलबुले की तरह है, पर ऐसे परेशान करने वाले सवाल आगे नहीं आएंगे, इसकी गारंटी कोई नहीं दे सकता है। मूल समस्या तात्कालिकता में नहीं है। सामाजिक बदलाव के अधूरे सपने और आधे मन से प्रयास के कारण हम अपेक्षित सामाजिक रचना के लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाए हैं। न अस्पृश्यता समाप्त हुई, न जातीय चेतना की जड़ें हिल पाईं। ऐसा क्यों हुआ, इसका उत्तर ही समाधान की राह बताता है। प्रत्येक समाज की अपनी यात्रा में कभी न कभी कठिन और कठोर प्रश्नों का सामना करना पड़ता है। तब उसके दो विकल्प होते हैं। पहला, उसे टालना और भविष्य पर छोड़ देना तथा उसका प्रत्यक्ष सामना करने से बच निकलना। यह अधिक प्रचलित रास्ता है। दूसरा, स्वतंत्रता और समानता के बुनियादी उसूलों को सामने रखकर उसका सामना करना। इतिहास ने साबित किया है कि दूसरा रास्ता ही फलदायी रहा है।

यहां अमेरिका की एक ऐतिहासिक घटना का उल्लेख उपयोगी है। वहां राजनीतिक रूप से प्रभावशाली, सामाजिक रूप से 'प्रतिष्ठित', आर्थिक रूप से संपन्न- सभी दास प्रथा से लाभान्वित थे। अमेरिका के तेरहवें राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने जब इसे समाप्त करने का संकल्प लिया, तब उनके सामने विलक्षण स्थिति थी। उनके मंत्रिमंडल में एक भी अपवाद नहीं था, जिसके पास पचास-सौ दास नहीं हो। यहां तक कि अमेरिका के तीसरे राष्ट्रपति थामस जैफरसन जो 'सभी मनुष्य बराबर है' के प्रवचनकर्ता थे, वे भी इस गैरबराबरी के पोषक थे। भले ही तब लिंकन को पता नहीं था, पर इतिहास ने इस कड़वे सच से भी पर्दा उठा दिया। दोहरे चरित्र का यह चरम था। लिंकन के सामने राजनीतिक विद्रोह और राष्ट्र के विघटन की चुनौती थी। आखिर गृहयुद्ध हुआ। दास प्रथा मिटी, राष्ट्र की एकता भी बची रही। गेटिसबर्ग में गृह युद्ध में मारे गए, लापता हुए लोगों के लिए बने स्मारक के उद्घाटन भाषण में 19 नवंबर 1863 को लिंकन ने इस सफलता का जो कारण बताया, वह लोकतंत्र की सर्वमान्य परिभाषा बन गई, 'जो सरकार जनता की, जनता द्वारा और जनता के लिए होती है, वह पृथ्वी से कभी नहीं मिट सकती है।'

इसका साफ संदेश था सामाजिक बदलाव के लिए संकल्प ही नहीं, मन को दृढ़ करने की आवश्यकता होती है। अमेरिकी सामाजिक संरचना में परिवर्तन स्वतंत्रता, समानता के उद्घोषक जैफरसन के भाषणों से नहीं, लिंकन के साहस से हो पाया। भारत की सामाजिक परिस्थितियां और बुराइयां अमेरिका से भिन्न हैं। इसलिए यहां अमेरिका की तरह बदलाव राजनीतिक हस्तक्षेप से नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति से ही संभव है। पिछली शताब्दी के पचास-साठ के दशकों में राजनीतिक दलों ने जातिवाद को मिटाने का संकल्प दिखाया था। भारतीय जनसंघ के दीनदयाल उपाध्याय, सोशलिस्ट राममनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण इसके बड़े नायकों में थे। दीनदयाल तो 1963 में जातिवाद के विरुद्ध अपने उद्गारों से जौनपुर की जीती हुई सीट हार गए।

तब और अब में एक चिंताजनक बदलाव हुआ है। उस काल में अस्पृश्यता और जातीय पहचान को राजनीति में नफा-नुकसान के अंदाज से कम देखा जाता था। इसलिए उस काल के राजनीतिक कार्यकर्ताओं में सर्वसमावेशी चरित्र की मात्रा अधिक थी। पर समकालीन भारत में गजब का विरोधाभास है। एक ओर आधुनिक संपन्नता और बहुत सारी जगहों पर विश्वविद्यालयों की चमचमाती बहुमंजिला इमारतें हैं, वहीं लोग 'जातीय चेतना' में गोलबंद हो रहे हैं। आखिर चूक कहां हुई? स्वतंत्रता के बाद अस्पृश्यता और जातिवाद का हल संवैधानिक रास्ते से करने का प्रयास हुआ। इसने सामाजिक रास्ते से परिवर्तन के प्रयास का अर्ध-राजनीतिकरण कर दिया। परिणाम सामने है- 'नौ दिन चले, ढाई कोस'। कानून और अवसर की समानता की गारंटी सामाजिक सोच नहीं बदल पाती है, न ही शुद्ध सांस्कृतिक पहचान की स्थापना के द्वारा इसे बदला जा सकता है।

समस्या की जड़ में सामंती मानसिकता है, जो संविधान में घोषित समानता और भ्रातृत्व को जमीन पर उतरने नहीं देती है। स्वतंत्रता से पूर्व सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिकोण ने निदान की राह खोली। आर्य समाज, प्रार्थना समाज, ब्रह्म समाज, सत्यशोधक समाज आदि सामाजिक समानता की चेतना जागृत करते रहे। चाल धीमी, पर प्रभावी थी। उन सबके द्वारा सामाजिक उन्नति को सुधार और सांस्कृतिक चेतना, दोनों के द्वारा सुनिश्चित किया जा रहा था। महादेव गोविंद रानाडे का सामाजिक सुधार सम्मलेन शिक्षित और संपन्न लोगों को उस दलदल से निकाल रहा था। संत एकनाथ, तुकाराम, नामदेव ज्ञानदेव, पुरंदरदास, कनकदास, अन्नामाचार्य, चैतन्य महाप्रभु जैसे संत आध्यात्मिक भजन कीर्तन के द्वारा सामान्य लोगों को विषमतामूलक सोच से बाहर निकाल रहे थे।

इस क्रम में एक और ऐतिहासिक घटना उल्लेखनीय है। महात्मा गांधी ने 1933 में वर्धा के राम मंदिर से अस्पृश्यता के विरुद्ध अभियान शुरू किया, जो नौ महीने चला। गांधी को लगातार विरोध, प्रश्नों और कुतर्क पर आधारित विवादों का सामना करना पड़ा था। पर वे लक्ष्य के प्रति संकल्पित रहे। वह अंतिम सुनियोजित, सुविचारित और गैर-राजनीतिक प्रयास साबित हुआ।

सामाजिक प्रश्नों पर राजनीति का वर्चस्व अब एकाधिकार तक पहुंच गया है। परिणामत: विवेक और तर्क तथा दीर्घकालिक सोच का उपयोग समाप्त हो गया है। सामाजिक बुराइयों को सामाजिक संघर्ष का रूप देना राजनीति में उपयोगी हो गया। इसमें हर पक्ष की अपनी दलील और अपना स्वार्थ होता है। बाबा साहब आंबेडकर ने प्रश्न खड़ा किया था कि कांग्रेस, हिंदू महासभा, साम्यवादियों और साधु-संतों ने अस्पृश्यता समाप्त करने के लिए क्या किया है? अब इस प्रश्न की प्रासंगिकता और इसका दायरा, दोनों बढ़ गए हैं- 'हम सबने अस्पृश्यता और जातिवाद को मिटाने के लिए क्या किया है?'

विवाद और प्रतिवाद के सुर

बाखबर

सुधीश पचौरी

'एआइ इंपैक्ट सम्मेलन' में 'विश्वगुरु' की भद जिस तरह से 'गलगोटिया' ने पिटवाई, वैसी किसी ने न पिटवाई। कुत्ता था 'मेड इन चाइना', लेकिन 'गलगोटिया' ने चीनी चेपी हटाकर अपना बना लिया और सम्मेलन में प्रदर्शित कर दिया तथा इस धतकर्म के लपेटे में मंत्री को भी ले लिया।

एक बार फिर वही 'राग' कि 'मनुवाद से आजादी... जातिवाद से आजादी..।' एक चैनल में एक किशोर 'बटुक' क्षोभ प्रकट करता रहा कि पूरी सृष्टि उथल-पुथल हो जाएगी। ऐसा 'सतयुगी क्षोभ' सुनकर दया आती रही कि बटुक महाराज किस युग के मिथक में रह रहे हैं! एक पल 'अपमानित', लेकिन दूसरे पल ही 'अभिमानित'! एक उपमुख्यमंत्री 101 बटुकों का सम्मान करते हैं। भोजन कराते हैं। पुष्प वर्षा करते हैं। 'बटुक' वेदमंत्रों का उच्चारण करते दिखते हैं। एक एंकर कटाक्ष करता है- वाह! पहले शिखा खींचो, फिर नुकसान की भरपाई करने की कोशिश करो, भोजन कराओ।

इसे देख कर एक ओर विपक्ष मस्त, दूसरी और बाबा और बाबा के बीच टकराव जारी। एक बाबा दुर्दमनीय, तो दूसरे बाबा और भी दुर्दमनीय। असली सवाल यह कि कौन बाबा असली, कौन नकली! ऐसे सवाल से आहत एक बाबा इतने क्षुब्ध दिखे कि उन्होंने बड़े उपदेशक बाबा के उपदेश कि 'हिंदू तीन बच्चे पैदा करें' पर यह कह दिया कि पहले शादी कर बच्चे पैदा कर लो, फिर दूसरों से कहना कि इतने बच्चे पैदा करो।

फिर एक दिन जैसे ही बड़े बाबा ने 'घर वापसी का काम तेज करने' की लाइन दी, वैसे ही एक बड़े अल्पसंख्यक संगठन के मुखिया ने बहस को एक झटके में और भी 'गरम' कर दिया कि ये नफरत फैलाने वाला बयान है। बहरहाल, 'वंदे मातरम्' से लौटते हुए बाबाओं के बाबा की ट्रेन पर पत्थर मारे जाते हैं। किसने किया, यह साफ नहीं।

दरअसल, इन दिनों 'सनातन' ही 'सनातन' से नाराज है। यह सब विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के 'समान नियमों' का फलागम है। विश्वविद्यालयों में टकराव जैसा सुलग रहा है। परिसरों और सोशल मीडिया में 'जाति घृणा' बरसती है। एक चर्चक कहता है कि कुछ राजनीतिक बाबाओं ने सोचा होगा कि 'सवर्ण वोट बैंक' तो अपना है... वह कहां जाएगा! आकर्षित करना है तो नया वोट बैंक बनाओ और जीतो। सनातनवादियों की इस 'पलटी' से 'सवर्ण मतदाता' इतने क्षुब्ध और क्रुद्ध दिखे कि बड़े बाबा तक की सभाओं का बहिष्कार करने लगे। हालत यह है कि बड़े बाबा की सभाओं में अधिकतर कुर्सियां खाली दिखती हैं। जैसे ही 'सनातन' में कलह बढ़ी, वैसे ही कुछ लोग 'टीपू-टीपू' करने लगे कि टीपू अंग्रेजों के खिलाफ लड़ा... शहादत दी..!

दूसरी ओर, 'एपस्टीन फाइलों' की चर्चा ने पीछा न छोड़ा। विपक्ष ने अमेरिका से हुए समझौते को एपस्टीन फाइलों के दबाव का परिणाम बताया। सत्ता प्रवक्ता आरोपों का प्रतिवाद करते हुए समझौते के फायदे बताते रहे, जबकि विपक्ष का गाना वही रहा कि देश को बेच डाला... किसानों को बेच डाला..!

फिर एक दिन अचानक विपक्षी दल के एक नामी नेता ने ऐसा विवादी सुर लगाया कि सत्ता पक्ष को भी कुछ आनंद मिला और विपक्ष के प्रवक्ताओं को लेने के देने पड़ते दिखे। नेता ने कहा कि मैं नेहरूवादी, इंदिरावादी, राजीववादी हूं.. राहुलवादी नहीं हूं..! फिर उन्होंने केरल में वामपंथी मुख्यमंत्री की वापसी की कामना भी कर डाली। उनके दल के प्रवक्ता ने 'ये उनके निजी विचार हैं' कहकर अपना पिंड छुड़ाया। इसी क्रम में असम के विपक्ष के बड़े नेता ने अपने दल से इस्तीफा देकर विपक्षी दल को हिला दिया। एक विशेषज्ञ कहिन कि यह विपक्षी दल का संकट है... उनके नेता के काम करने का तरीका अपने आप में एक समस्या है! इस बीच एक बार फिर 'घृणा भाषण' चर्चा में आया। एक राज्य के मुख्यमंत्री ने कहा था 'मिया' शब्द और उनका बंदूक चलाने का चित्र। यह कुछ चैनलों में चर्चा के केंद्र में रहा। एक चर्चा में विपक्षी प्रवक्ता कहिन कि 'घृणा भाषण' को लेकर बड़ी अदालत में दो जनहित याचिका दाखिल की गई हैं। एंकर बताता रहा कि किस वर्ष कितने घृणा भाषण हुए। किस दल के नेता ने अब तक कितने घृणा भाषण दिए हैं..! इसके बाद वही हुआ, जो ऐसी चर्चा में दर्जनों बार हुआ है कि एक आरोप लगाता कि 'पचास करोड़ की गर्लफ्रेंड' किसने कहा, तो दूसरा प्रत्यारोप लगाता कि 'मौत का सौदागर' किसने कहा। ये किसने कहा कि वह किसने कहा... घृणा अनंत, घृणा कथा अनंता..!

बहरहाल, 'एआइ इंपैक्ट सम्मेलन' में 'विश्वगुरु' की भद जिस तरह से 'गलगोटिया' ने पिटवाई, वैसी किसी ने न पिटवाई। कुत्ता था 'मेड इन चाइना', लेकिन 'गलगोटिया' ने चीनी चेपी हटाकर अपना बना लिया और सम्मेलन में प्रदर्शित कर दिया तथा इस धत्कर्म के लपेटे में मंत्री को भी ले लिया। पोल खुलते ही तुरंत कार्रवाई हुई। 'गलगोटिया' को तुरंत बाहर करने की खबर आई। फिर भी विपक्ष ने मौका न छोड़ा। विश्वगुरु की जैसी 'भद' पिटी, वैसी न देखी, न सुनी।

शुक्रवार की दोपहर विपक्षी दल के कुछ युवा कार्यकताओं ने एआइ सम्मेलन के परिसर में अचानक अपनी बनियानें उतारकर और अमेरिका के साथ हुए व्यापार समझौते के विरोध में नारे लगाकर सम्मेलन की छवि बिगाड़ने की कोशिश की।

लहसुन बड़ा गुणकारी दूर रखे बीमारी

अधिकतर रसोई में लहसुन का इस्तेमाल होता है। भोजन तैयार करते समय इसका उपयोग स्वास्थ्य के लिए गुणकारी माना गया है। मगर इसके औषधीय गुणों के बारे में भी जानना चाहिए। लहसुन में एंटीआक्सीडेंट तो है ही, वहीं इसमें 'एलिसिन' के साथ सल्फर यौगिक पाए जाने से इसका महत्त्व बढ़ जाता है। लहसुन रोगाणुरोधी है। यह प्रतिरक्षा तंत्र को मजबूत करता है। सबसे बड़ी बात यह कि लहसुन में मौजूद तत्त्व कोशिकाओं की क्षति नहीं होने देते। आम तौर पर इसका इस्तेमाल खाना बनाते समय किया जाता है। मगर इसे कच्चा या कुचल कर खाया जाए, तो इसका तुरंत असर होता है। अगर लहसुन को बतौर नुस्खा आजमाया जाए, तो कई रोगों को काबू में किया जा सकता है।

संक्रमण से बचाव

अगर कोई व्यक्ति सामान्य संक्रमण की चपेट में है, तो उसे लहसुन का उपयोग प्रचुर मात्रा में करना चाहिए। इसके नियमित सेवन से संक्रमण से लड़ने में मदद मिलती है। इसके इस्तेमाल से न केवल मौसमी संक्रमणों से, बल्कि सर्दी और जुकाम से भी बचाव होता है। यह शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली के लिए एक तरह से प्राकृतिक कवच का काम करता है। लहसुन में मौजूद तत्त्व श्वेत रक्त कोशिकाओं को सक्रिय करते हैं और शरीर को संक्रमण से लड़ने में मदद करते हैं। सर्दी-जुकाम जैसे संक्रमण के दौरान लहसुन को नुस्खे के रूप में जरूर आजमाएं। साधारण सा नुस्खा है। कई सब्जियों को मिला कर सूप बनाते समय उसमें धनिया-टमाटर के साथ लहसुन की दस-बारह कलियां मिलाएं। और इसे गरमा-गरम पियें। दाल में लहसुन का तड़का भी फायदेमंद है। लहसुन को टमाटर और अदरक के साथ पका कर खाने से भी सर्दी-जुकाम में फायदा करता है।

यकृत की सेहत

लहसुन यकृत को प्राकृतिक रूप से स्वस्थ रखता है। यह विषाक्त पदार्थों को यकृत में जमा होने से रोकता है। फैटी लिवर या अन्य यकृत रोग से पीड़ित व्यक्ति को उपचार के साथ-साथ लहसुन का उपयोग अवश्य करना चाहिए। सलाद में इसके छोटे-छोटे टुकड़े कर डाल कर खाया जा सकता है। हरी धनिया की चटनी बनाते समय लहसुन की तीन चार कलियां भी साथ पीस लें। यह ऐसा नुस्खा है जिससे यकृत ही नहीं, पाचन तंत्र भी दुरुस्त हो जाता है। भोजन बनाते समय अगर लहसुन का नियमित इस्तेमाल करते रहे हैं, तो पेट फूलने की समस्या भी दूर हो जाती है। आंत संबंधी सामान्य परेशानियां भी कम हो जाती हैं।

ऐसे करें इस्तेमाल

लहसुन को नुस्खे के तौर पर इस्तेमाल करना कोई मुश्किल नहीं। आप इसे जैसे चाहें ले सकते हैं, यह फायदा ही करता है। प्रतिदिन इसकी एक कली खाने से प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है। यह सच है कि लहसुन किसी दवा का विकल्प नहीं हो सकता। मगर यह पूरे

नुस्खे

स्वास्थ्य को बेहतर बना सकता है। इससे आम तौर पर कई बीमारियां पास नहीं फटकतीं। लहसुन का इस्तेमाल सब्जियां और दाल बनाते समय तो कर ही सकते हैं। चाहें तो इसमें बाद में भी इसके छोटे टुकड़े काट कर डाल सकते हैं। सलाद और चटनी बनाते समय इसकी कुछ कलियां डाल दें। यह सेहत के लिए अच्छा है। शहद के साथ लहसुन की एक कली खाने से रक्त साफ होता है। इससे कोलेस्ट्राल भी नियंत्रित होता है।

पढ़ने का परिवेश

साहित्य के भविष्य पर लगातार प्रश्न किए जाते रहे हैं! साहित्य की अलग-अलग विधाओं की मृत्यु की घोषणा भी समय-समय पर होती रही है। वैश्वीकरण के दौर में साहित्य पिछले दशकों में लगातार प्रश्नों के घेरे में रहा है। ये घेरे साहित्य की जगह घेरने की कोशिश करने वाले अनेक माध्यमों की तरफ से आए हैं। साथ ही साहित्य के भीतर की आलोचकीय मानसिकता से भी उत्पन्न हुए हैं। मानव जीवन में साहित्य की जरूरत और उसके स्थान को लेकर सवाल उठाया जाता रहा है। कहा जा रहा है कि आपाधापी के इस युग में जब मनोरंजन के असीमित साधन हों, तो साहित्य की अहमियत क्या है और पुस्तकें क्यों पढ़ी जानी चाहिए! यह पूछा जाना आज की पीढ़ी के लिए भी जरूरी हो गया है, क्योंकि साहित्य में हर पीढ़ी स्वयं को अलग तरह से दर्ज करती है। आज जब मनोरंजन के साधनों के बीच इतनी प्रतिस्पर्द्धा है, तभी साहित्य की असली परीक्षा होगी।

पुस्तक-संस्कृति

मोनिका भाम्भू कलाना

साहित्य का शाब्दिक अर्थ ही सहभाव है। साहित्य मनुष्य के आत्म का विस्तार करके उसे मनुष्य मात्र के प्रति सहानुभूतिमय और संवेदनशील बनाता है। यह सदैव से मनुष्य को दूसरों की भावना समझाने की चेष्टा करते हुए मानवीय अनुभवों और भावनाओं को मानव मात्र के समझाने लायक बनाता रहा है। वह भाषा और संस्कृति के संरक्षण के साथ-साथ मानवीय मूल्यों के परिष्कार का कार्य करता रहा है। मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाने में साहित्य की गौरवपूर्ण ऐतिहासिक भूमिका रही है। वह सदैव से मानवीय मूल्यों को पोषित करते हुए संस्कृति का संवाहक बना रहा है। सामाजिक विसंगतियों को उजागर करते हुए मानवीय चेतना को आलोचनात्मक पक्ष देता रहा है।

समकालीन प्रश्न

साहित्य को 'वंचितों का इतिहास' ऐसे ही नहीं कहा गया है। उसने हर काल में समाज और संस्कृति से जरूरी प्रश्न किए हैं। उन प्रश्नों को जनमानस से जोड़ते हुए जीवन के गहरे अर्थ ढूंढ़ने की कोशिश की है। साहित्य मनुष्य की यात्रा में सदैव सहभागी रहा है, अब तक पुस्तकों से ही मनुष्य ने अपने इतिहास को समझा है, अपने पूर्वजों को जाना है और भविष्य का नक्शा खींचा है। मनुष्य जैसा है, उसके बनने में उसके द्वारा पढ़ी गई और जी गई पुस्तकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। अन्य विषय, जहां मनुष्य में 'मनुष्यत्व' को जन्मजात मानकर चलते हैं, वहीं साहित्य उसके मनुष्यत्व को प्रश्नांकित करता रहा है। साहित्य ने मनुष्य से लगातार प्रश्न किए हैं और मनुष्यत्व को एक अर्जित मूल्य बनाया है, जिसके लिए हर व्यक्ति को स्वयं प्रयास करना पड़ता है। वह समाज का दर्पण ही नहीं, मनुष्य के लिए भी ऐसा अक्स रहा है, जहां वह अपना प्रतिबिंब साफ-साफ देख सकता है। वह हमें हमारे परिवेश, संस्कृति और अन्य संस्कृतियों को देखने-समझने की संवेदनशील दृष्टि देता रहा है।

साहित्य मनुष्य के सरोकारों और भावावेगों से संबंधित होता है, लेकिन साहित्यिक छवि मनुष्य की एकायामी छवि नहीं होती। साहित्य की प्रत्येक कृति अपना निजी 'मनुष्य' रचती है, जिसके स्वभाव की विशिष्टता उसे सामान्य मनुष्य से 'व्यक्ति' में परिणत करती है। साहित्य में हम लेखक के अनुभव को इस तरह जीते हैं, मानो वह अपना ही अनुभव हो। इस अर्थ में साहित्य के द्वारा व्यक्ति ऐसे विविध बहुल अनुभवों को जी सकता है, जो अपने व्यक्तिगत जीवन में उसने नहीं भोगे हैं। इसलिए साहित्य हमारे जीवन को समृद्ध, बहुआयामी, सघन बनाने में योगदान देता है। इसी तरह, साहित्य और संस्कृति का भी गहरा संबंध है। संस्कृति की अमूर्त चेतना की अभिव्यक्ति विभिन्न साहित्यिक विधाओं में संभव होती है।

मनोरंजन से आगे

वर्तमान समय में साहित्य की जरूरत बढ़ी ही है। सूचनाओं और जानकारियों को प्राप्त करने के साधन और गति जैसे-जैसे बढ़ी है, मनुष्य में सहानुभूति और संवेदना उसी अनुपात में कम होती गई है। मनोरंजन के तमाम साधन समय काटने के माध्यम से ज्यादा कुछ नहीं बन पाए हैं। क्या साहित्य मनुष्य के लिए केवल मनोरंजन का कार्य ही करता रहा है या इससे ज्यादा उसकी कोई भूमिका है, इसे स्पष्ट रूप से समझा जाना चाहिए। साहित्य के स्वरूप को समझे बिना हम उसके भीतर निहित प्रयोजन को नहीं समझ सकते। साहित्य अपने होने मात्र से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक व्यवस्था पर प्रश्नचिह्न लगाता रहा है, जबकि अन्य सभी माध्यम मानवीय पूर्वाग्रहों और सामाजिक यथास्थितिवाद का समर्थन करते हुए उसे भुनाने की चेष्टा करते रहे हैं। संचार के साधनों की अधिकता और आम आदमी तक उनके फैलाव के बावजूद मनुष्य दूसरे तक पहुंचने में स्वयं को संप्रेषित करने में सक्षम क्यों नहीं हो पा रहा है। लिखे हुए शब्द की गरिमा तक मनोरंजन के ये साधन नहीं पहुंच सके। जब तक दूसरे को समझने-जानने और सत्य तक पहुंचने की ललक रहेगी, पुस्तकें हमेशा रहेगी और साहित्य भी। इसलिए साहित्य के अस्तित्व और भविष्य पर कोई संकट नहीं है।

संचार के साधनों की अधिकता और आम आदमी तक उनके फैलाव के बावजूद मनुष्य दूसरे तक पहुंचने में स्वयं को संप्रेषित करने में सक्षम क्यों नहीं हो पा रहा है। लिखे हुए शब्द की गरिमा तक मनोरंजन के ये साधन नहीं पहुंच सके। जब तक दूसरे को समझने-जानने और सत्य तक पहुंचने की ललक रहेगी, पुस्तकें हमेशा रहेगी और साहित्य भी।

बदलाव का असर

तकनीक ने साहित्य के बाजार को फैलाया है और इसे अधिक लोगों तक पहुंचाया है, लेकिन इस यात्रा में साहित्य के रूप में आने वाले बदलावों का स्वयं साहित्य और उसकी प्रकृति पर क्या असर हुआ, यह जरूर एक अलग विषय विषय है। आज की स्मार्ट दुनिया में पुस्तक पढ़ने का समय, धैर्य और स्थान धीरे-धीरे कम होते गए हैं, पढ़ने के लिए प्रेरित करने वाला परिवेश व्यक्ति से दूर होता गया है और खुद से अकेले कुछ भी करने के लिए जिस समर्पण और अनुशासन की जरूरत मनुष्य को होती है, उसे 'डिजिटल सोच' ने सोख लिया है। ऐसे में साहित्य के लिए यह दोहरी लड़ाई है। उसे न केवल अपने लिए जगह बनाए रखनी है, बल्कि ऐसे परिवेश को भी बनाना है, जहां साहित्य पढ़ा जा सके। साहित्य उसी समाज में विकसित हो सकता है, जिसमें 'लिखने के समय' को 'पढ़ने के समय' में संचरित किया जा सके। यह चुनौती अकेले साहित्यकार की नहीं होकर समाज के सदस्य के रूप में हम सब पर है।

दायित्व बोध का सिकुड़ता दायरा

आज एकल परिवारों, व्यस्त जीवनशैली और तकनीकी निर्भरता के कारण व्यक्तिगत जिम्मेदारी या दायित्व का एहसास भी कम होता जा रहा है। पारिवारिक सदस्य अब पारस्परिक कम जुड़ाव महसूस करते हैं और भावनात्मक सहयोग के अभाव से रिश्तों में तनाव, अलगाव एवं स्वार्थ की भावना बढ़ रही है। अब एक-दूसरे के प्रति जवाबदेह रहने के बजाय अपनी व्यक्तिगत आजादी और निजता को महत्त्व देना ज्यादा जरूरी समझा जाता है। बच्चों को बिना जिम्मेदारी के अधिक स्वायत्तता देने से उनमें भी समय के साथ दायित्व की समझ विकसित नहीं हो पा रही है। अब परिवारों में अक्सर यह देखा जाता है कि जिम्मेदारियां बंटने के बजाय किसी एक व्यक्ति पर बोझ बन जाती हैं, जिससे उस व्यक्ति में निराशा की भावना पनपने लगती है।

जीवन शैली

आत्म-अनुशासन

जिम्मेदारी के एहसास का मतलब है कि किसी स्थिति में अपनी भूमिका, कार्यों और उनके परिणामों को स्वीकार करने की परिपक्वता। इस क्षमता का विकास आत्म-अनुशासन से ही आता है। जिम्मेदारी का दायरा सिर्फ जवाबदेही तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे आत्मविश्वास भी मजबूत होता है, जो चुनौतियों का सामना करने की क्षमता विकसित करता है। यानी व्यक्तिगत विकास और संबंधों में भरोसा कायम रखने के लिए दायित्व बोध का होना अत्यंत आवश्यक है।

आत्मनिर्भरता

किसी भी दायित्व को संभालना और उसके अच्छे-बुरे परिणामों को स्वीकार कर आगे की राह तय करना वास्तव में आत्मनिर्भर होने की शक्ति प्रदान करता है। इससे व्यक्ति अपनी गलती से सीख लेकर सही निर्णय लेने की क्षमता हासिल कर सकता है। एक जिम्मेदार व्यक्ति परिवार और समाज में विश्वास का पात्र बन जाता है, जिससे न केवल रिश्तों की डोर मजबूत होती है, बल्कि वह आसपास के लोगों में सम्मान का भी हकदार हो जाता है। जीवन में किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए दायित्व बोध का होना अनिवार्य है। इसी से सफलता का मार्ग भी प्रशस्त होता है। जिम्मेदारी से भागने की बजाय उसे स्वीकार करना ही सच्ची स्वतंत्रता है।

समाधान के रास्ते

जिम्मेदारी लेना खुद को संकट में डालना नहीं, बल्कि अपने विकल्पों, व्यवहार और प्रतिबद्धताओं के लिए जवाबदेह होना है। इससे प्रयासों में ईमानदारी आती है और भविष्य में होने वाली समस्याओं को रोकने के लिए समाधान के रास्ते खुलते हैं। जब कोई व्यक्ति दायित्व लेता है, तो वह केवल समस्याओं की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता, बल्कि उनके निराकरण के उपाय खोजने और सुधार करने के लिए सक्रिय रूप से काम करता है। वह साझा लक्ष्यों की दिशा में काम करने के लिए दूसरों को प्रेरित और प्रोत्साहित करने की क्षमता भी रखता है। किसी भी प्रतिक्रिया के प्रति खुला रहना और आवश्यकता पड़ने पर अपने दृष्टिकोण को बदलने के लिए तैयार रहना, यह जिम्मेदारी लेने का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है। यानी चुनौतियों का सामना करने और डटे रहने के लिए लचीलापन भी आवश्यक है।

***जिम्मेदारी** लेना खुद को संकट में डालना नहीं, बल्कि अपने विकल्पों, व्यवहार और प्रतिबद्धताओं के लिए जवाबदेह होना है। इससे प्रयासों में ईमानदारी आती है।*

कैंसर का जोखिम सजगता ही उपाय

पूरी दुनिया में यह सवाल उठ रहा है कि कैंसर के मामले क्यों बढ़ रहे हैं। आखिर इसकी वजह क्या है? चिंता की बात यह है कि पूरी दुनिया में पचास साल से कम उम्र के लोगों में कैंसर के मामले बढ़ रहे हैं। वहीं इसी आयुवर्ग में मरने वालों की संख्या भी बढ़ी है। अमेरिका में सभी आयुवर्ग में कैंसर के मामलों में बढ़ोतरी हुई है। वहीं दूसरी ओर भारत सहित कई देशों में कैंसर के मामले बढ़ रहे हैं। इससे बचने के लिए न केवल आहार और जीवनशैली में बदलाव लाने की जरूरत है, बल्कि पानी और हवा में बढ़ते प्रदूषण से भी सचेत होने का समय आ गया है।

सेहत

खतरे का दायरा

युवाओं में भी कैंसर के मामले सामने आ रहे हैं। उनमें कैंसर के मामले बढ़ रहे हैं, तो इसकी वजह यह है कि समय पर उनकी जांच नहीं होती। यों कैंसर के मामले स्त्री-पुरुष दोनों में समान रूप से बढ़े हैं। 'अमेरिकन कैंसर सोसाइटी' की अध्ययन रपट में बताया गया है कि वर्ष 2012 से 2021 के बीच पचास साल से कम उम्र की महिलाओं में स्तन कैंसर के मामले बढ़े हैं। जबकि इससे अधिक उम्र की महिलाओं में भी ऐसे मामलों में बढ़ोतरी पाई गई है। दूसरी ओर कुछ समय पहले ब्रिटिश पत्रिका आन्कालोलाजी की रपट में कहा गया कि युवाओं में पेट और आंत के कैंसर बढ़ रहे हैं। यह भयावह स्थिति है। वहीं इसके नए रूप भी सामने आ रहे हैं। इसे गंभीरता से लेना होगा।

क्या है वजह

विशेषज्ञों का कहना है कि खान-पान में लापरवाही और मोटापे की वजह से यह खतरा बढ़ा है। दरअसल, मोटापे के कारण हार्मोन में बदलाव के साथ सूजन की समस्या बढ़ती है। एक अध्ययन में कहा गया है कि अमेरिका में युवाओं में होने वाले सत्रह प्रकार के कैंसर में दस तरह के कैंसर तो मोटापे की वजह से होते हैं। इनमें पित्ताशय, गुर्दा, यकृत, प्रैंक्रियाज और गर्भाशय कैंसर भी शामिल हैं। एक शोध में यह भी कहा गया कि देर रात तक रोशनी में रहने से मेलाटेनिन का स्तर कम होता जाता है। यह कैंसर बढ़ाता है। इससे हमें सचेत रहना होगा। डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ भी खतरनाक हैं। दरअसल, इसमें मिलाए जाने वाले रसायन आंत को नुकसान पहुंचाते हैं। दूसरी ओर एंटीबायोटिक के बढ़ते इस्तेमाल ने भी समस्या बढ़ाई है।

क्या हो निदान

चिकित्सकीय जांच में कैंसर का पता चलते ही इसका उपचार यथासंभव जल्द शुरू होना चाहिए। अगर ऐसा हो. तो कैंसर से होने वाली मौत को कम किया जा सकता है। चिकित्सकों के मुताबिक इस रोग से संबंधित टीके लगवा कर कैंसर से जुड़े कुछ वायरस से बचा जा सकता है। इसमें एक वायरस 'एचपीवी' है। कायदे से इससे संबंधित टीके बच्चों से लेकर युवाओं को पहले ही लगा दिया जाएं, तो उनमें जोखिम कम हो जाएगा। दूसरी ओर यकृत कैंसर के मामले भी सामने आने लगे हैं। हैपेटाइटिस-बी का टीका देश में उपलब्ध है। इससे यकृत कैंसर का बचाव किया जा सकता है। ये टीके उनसठ साल तक के सभी लोगों को लगाए जा सकते हैं। चिकित्सक आम तौर पर इसकी अनुशंसा करते हैं।

प्रकृति के साथ

प्रकृति के करीब रह कर मनुष्य कैंसर से मुकाबला कर सकता है। खूब सारे फल और हरी सब्जियां तथा मोटे अनाज का सेवन कर कैंसर के जोखिम को कम किया जा सकता है। शराब नहीं पीने वाला व्यक्ति काफी हद तक कैंसर से बचा रहता है। इसके अलावा लोगों को सिगरेट और तंबाकू से भी बचना चाहिए। क्योंकि इससे मुंह, ग्रासनली, गले और फेफड़े का कैंसर होने का जोखिम रहता है। सभी को मोटापे से भी बचना चाहिए। इसके लिए ज्यादा चलना और कम बैठना चाहिए। त्वचा कैंसर तो अब आम हो चला है। ऐसे में चिकित्सक सलाह देते हैं कि अपनी त्वचा को तेज धूप से बचाएं। सतर्कता और सजगता से ही कैंसर जैसे जटिल और जानलेवा रोग से बचा जा सकता है।

(यह लेख सिर्फ सामान्य जानकारी और जागरूकता के लिए है। उपचार या स्वास्थ्य संबंधी सलाह के लिए विशेषज्ञ की मदद लें।)

पौष्टिकता के साथ स्वाद लाजवाब

जिमीकंद का कोफ्ता

जिमीकंद की सब्जी तो घरों में अक्सर बनाई जाती है, लेकिन इसके कोफ्ते का स्वाद अलग ही होता है। इसे बनाने में थोड़ा वक्त लगता है, लेकिन इसका जायका मन को संतुष्ट कर देता है। इसमें फाइबर भरपूर मात्रा में होता है, जिस कारण यह पाचन तंत्र के लिए फायदेमंद होता है। मधुमेह रोगियों के लिए भी इसे उपयुक्त माना जाता है। कच्चे जिमीकंद को करीब एक सप्ताह तक घर में रखा जा सकता है, यह दूसरी सब्जियों की तरह जल्दी खराब नहीं होता है।

सामग्री

जिमीकंद : 300-400 ग्राम, बेसनः आधा कप, हरी मिर्च दो-तीन, अदरकः दो इंच, टमाटरः तीन, पुदीने की पत्तियांः दो-तीन चम्मच, गरम मसाला पाउडरः एक चम्मच, जीरा पाउडरः आधा चम्मच, नमकः स्वादानुसार

विधि

जिमीकंद को धोकर छील लें और छोटे-छोटे टुकड़ों में काटकर कुकर में उबालें। इसके बाद इसे कुछ देर ठंडा होने दें और फिर हाथ की मदद से अच्छी तरह मसल दें। अब इसमें थोड़ा सा बेसन, हरी मिर्च, अदरक और नमक डालकर अच्छी तरह मिलाएं। इसके उपरांत टमाटर, अदरक, हरी मिर्च और पुदीने के पत्तों को मिक्सी में पीसकर पेस्ट बना लें। फिर एक कड़ाही में तेल गरम करके उसमें जीरा हल्का सा भूनें और उसमें टमाटर के मिश्रण का पेस्ट तथा जरूरत के अनुसार पानी डालकर कुछ देर चम्मच से चलाते रहें। इसमें गरम मसाला पाउडर, नमक और एक चुटकी चीनी मिला दें। इसे धीमी आंच पर तब तक पकाएं, जब तरी गाढ़ी हो जाए। इसके बाद कोफ्ते बनाने के लिए मसले हुए जिमीकंद के छोटे-छोटे गोले बनाकर उन्हें तेल में अच्छी तरह तल लें। ध्यान रहे कि इन गोलों को सुनहरा रंग आने तक तलें, ज्यादा देर तक तलने से उनका स्वाद बिगड़ जाता है। अब इन कोफ्तों को टमाटर की तरी में डालकर पांच-छह मिनट तक धीमी आंच पर पकाएं। इसके बाद इसमें बारीक कटा हुआ हरा धनिया मिलाकर थोड़ी देर ठंडा होने दें और फिर चपाती या चावल के साथ परोसें।

रसोई

खोया पनीर

यह व्यंजन घरों में मुख्य रूप से विशेष अवसरों और उत्सवों पर तैयार किया जाता है। पनीर के सामान्य व्यंजन की अपेक्षा इसके बनाने की विधि थोड़ी अलग होती है। इसमें खोया, मक्खन और विभिन्न मसलों का मिश्रण स्वाद को लाजवाब बना देता है। उत्तर भारत में यह काफी लोकप्रिय है। इसे घर पर भी आसानी से बनाया जा सकता है। यह सबको पसंद आता है।

सामग्री

पनीरः 300-350 ग्राम, खोयाः 50 ग्राम, प्याजः एक, जीराः एक चम्मच, दालचीनीः डेढ़ इंच, कसूरी मेथीः एक चम्मच, टमाटरः तीन, अदरकः एक इंच, लहसुनः चार-पांच कलियां, हल्दीः एक चम्मच, कश्मीरी लाल मिर्च पाउडरः एक चम्मच, नमकः स्वादानुसार।

विधि

सबसे पहले पनीर को छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें। फिर एक कड़ाही में मक्खन डालकर उसमें पनीर के टुकडे डाल दें और तब तक भूनें, जब तक कि वे सुनहरे भूरे रंग के न हो जाएं। भुना हुआ पनीर एक थाली में निकालकर रख लें। अब कड़ाही में फिर से मक्खन डालकर उसमें जीरा, दालचीनी, इलायची, लौंग और कसूरी मेथी भून लें। इसके बाद अदरक-लहसुन का पेस्ट और कटा हुआ प्याज इसमें डाल दें। हल्का लाल लाल रंग आने पर इसमें बारीक कटे हुए टमाटर डालें और थोड़ा सा पानी भी मिला दें। इसे ढक्कन लगाकर आठ-दस मिनट तक पकाएं और फिर इसमें मिर्च पाउडर, हल्दी, गरम मसला, धनिया पाउडर मिलाएं। टमाटर को चम्मच से अच्छी तरह मसल दें, ताकि गाढ़ी तरी बन जाए। फिर इसमें खोया डालें और टमाटर की तरी के साथ अच्छी तरह मिलाएं। जब खोया किनारों से तेल छोड़ना शुरू कर दें, तो इसमें भूना हुआ पनीर डालें और नमक के साथ थोड़ा सा पानी भी मिला दें। इसे धीमी आंच पर आठ-दस मिनट तक पकाएं। थोड़ा ठंडा होने पर इसे रोटी, नान या चावल के साथ परोसें।

तळपत्या उन्हात परीक्षा सुरू; विद्यार्थ्यांनो, आरोग्य सांभाळा!

वाढत्या तापमानाचा फटका; उष्ण, कोरड्या वाऱ्यांचा होतोय परिणाम

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : दिवसेंदिवस उन्हाचा पारा वाढत आहे. त्याचा थेट परिणाम नागरिकांच्या आरोग्यावर होताना दिसत आहे. वाढते तापमान, उष्ण व कोरडे वारे आणि दुपारच्या वेळेत जाणवणारा तीव्र उकाडा यामुळे लहान मुले, ज्येष्ठ नागरिकांसह विशेषतः विद्यार्थी त्रस्त आहेत. सध्या दहावी आणि बारावीच्या बोर्ड परीक्षा सुरू असल्याने विद्यार्थ्यांना कडक उन्हात परीक्षा केंद्रावर जावे लागते. अशा परिस्थितीत आरोग्याची विशेष काळजी घेणे अत्यावश्यक ठरत आहे.

उलट्या, पोटदुखी, अशक्तपणाने त्रस्त

उन्हामुळे शरीरातील पाण्याची कमतरता निर्माण होते. दूषित किंवा उघड्यावर ठेवलेले अन्न-पाणी सेवन केल्यास पोटाचे विकार वाढतात. उष्णतेमुळे अन्न लवकर खराब होते. त्यामुळे फूड पॉयझनिंगचा धोका वाढतो. यामुळे उलट्या, अतिसार, पोटदुखी आणि अशक्तपणा जाणवू शकतो..

पालकांनो, तुमची जबाबदारी काय?

मुलांना पौष्टिक आणि ताजे अन्न द्या.

पुरेसे पाणी, ताक, लिंबूपाणी द्यावे.

मुलांना वेळेवर परीक्षा केंद्रावर पोहोचवा.

तब्येत बिघडल्यास तत्काळ डॉक्टरांचा सल्ला घ्या.

मुलांवर अभ्यासाचा अतिरिक्त ताण टाकू नका.

तज्ज्ञांचा महत्त्वपूर्ण सल्ला

वारंवार पाणी प्या, जंक फूड टाळा; फळे, घरचे अन्न खा, पुरेशी झोप घ्या, अभ्यास करताना हवेशीर जागा निवडा, तब्येत ठीक नसल्यास दुर्लक्ष करू नका.

कशी घ्याल काळजी?

दुपारच्या वेळेस घरातून निघताना पुरेसे पाणी प्या.

पाण्याची बाटली सोबत ठेवा.

डोक्यावर टोपी/स्कार्फ वापरा.

वाढत्या तापमानामुळे हलके, सुती आणि सैल कपडे परिधान करा.

उपाशीपोटी घराबाहेर पडू नका. लिंबूपाणी पिणे उपयुक्त.

शक्यतो दुपारच्या उन्हात अनावश्यक फिरणे टाळा.

बदलते वातावरण ठरतेय धोकादायक

तापमानात अचानक वाढ, उष्ण वारे, शरीरातील पाण्याचे होणारे बाष्पीभवन यामुळे डिहायड्रेशन, उष्माघात, चक्कर येणे, अशक्तपणा यांसारख्या तक्रारी वाढतात. दुपारी सूर्यकिरणांची तीव्रता जास्त असल्याने बाहेर जाणे धोकादायक ठरू शकते.

#क्विक Update

'चित्रपट अभिनय' कार्यशाळा संपन्न

मुंबई : महाराष्ट्र चित्रपट रंगभूमी आणि सांस्कृतिक विकास महामंडळ आणि एफटीआयआय, पुणे यांच्या सहकार्याने आयोजित केलेला 'चित्रपट अभिनय अभ्यासक्रम' ही कार्यशाळा नुकतीच संपन्न झाली. विद्यार्थ्यांना अभिनय म्हणजे नेमके काय? या विषयांवर अभिनेते डॉ. मिलिंद शिंदे यांनी मार्गदर्शन केले. ही कार्यशाळा १० ते १९ फेब्रुवारी या कालावधीत पार पडली. या कार्यशाळेत अभिनयासह संवाद कौशल्य, संहिता लेखन, लघुपट कसा तयार केला जातो याविषयी सखोल मार्गदर्शन करण्यात आले.

विज्ञान केंद्राद्वारे विद्यार्थ्यांना धडे

मुंबई : विद्यार्थ्यांना अनुभवात्मक विज्ञान शिक्षण सहज उपलब्ध करून देण्याच्या उद्देशाने, टाटा पॉवरने भिवपुरी, गौलवाडी शाळेत विज्ञान केंद्राची स्थापना केली आहे. केंद्राच्या माध्यमातून आतापर्यंत ५५० हून अधिक विद्यार्थ्यांना फायदा झाला आहे. इयत्ता ६ वी ते १० वीतील विद्यार्थ्यांसाठी केंद्र असून येथे विज्ञान मॉडेल्स, प्रयोग किट्स, प्रात्यक्षिक साधने तसेच संवादात्मक शिकण्याची संसाधने उपलब्ध आहेत.

९० अनधिकृत बांधकामे जमीनदोस्त

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : कांदिवली पश्चिम, बोरिवलीत अनधिकृत बांधकामांवर मुंबई महापालिकेच्या विभागीय पथकांनी कारवाई केली. या दोन्ही कारवायांमध्ये ९० अनधिकृत बांधकामे जमीनदोस्त करण्यात आली आहेत.

कांदिवलीतील महावीर नगरात अनधिकृत बांधकामांमुळे वाहतुकीस आणि पादचाऱ्यांना मार्गक्रमण करण्यात अडथळा येत होता. ही बाब लक्षात घेत ६५ अनधिकृत बांधकामे आणि अनधिकृत फेरीवाल्यांवर कारवाई करण्यात आली. ही कारवाई उपायुक्त संध्या नांदेडकर यांच्या मार्गदर्शनाखाली सहायक आयुक्त आरती गोळेकर यांच्या नेतृत्वाखाली 'आर दक्षिण' विभागाने केली. याशिवाय आर-मध्य विभागाने सहाय्यक आयुक्त डॉ. प्रफुल तांबे यांच्या नेतृत्वात बोरीवली आणि कांदिवलीत २५ अनधिकृत बांधकामे आणि ३५ अनधिकृत स्टॉल्सवर कारवाई केली. या कारवाया ३ जेसीबी, ५ डम्पर व ५० अधिकारी व कर्मचाऱ्यांच्या पथकांनी पोलिस बंदोबस्त केल्या.

'डायबेटिक रेटिनोपॅथी' झाल्यास वेळीच काळजी घ्या

तज्ज्ञांचा मोलाचा सल्ला; अवयवांवर होतोय परिणाम

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : डायबेटीस हा केवळ साखरेचा आजार नाही, तर तो शरीरातील अनेक अवयवांवर परिणाम करतो. त्यातील सर्वात गंभीर परिणाम म्हणजे डोळ्यांच्या पडद्यावर होणारी हानी म्हणजे डायबेटिक रेटिनोपॅथी. हा विकार हळूहळू वाढत जातो आणि वेळेवर निदान न झाल्यास अंधत्वालाही कारणीभूत ठरू शकतो. या आजाराबद्दल जागरुकता असणे आणि वेळीच काळजी घेणे महत्त्वाचे असल्याचा सल्ला तज्ज्ञ देत आहेत.

रक्तातील साखरेची पातळी दीर्घकाळ वाढलेली राहिल्यास डोळ्यांच्या पडद्यामधील सूक्ष्म रक्तवाहिन्या कमकुवत होतात. त्या सुजतात, गळती होऊ लागते किंवा फुटू शकतात. परिणामी पडद्यावर सूज येते आणि दृष्टी धूसर होते. साखरेवर नियंत्रण नसल्यास ही हानी अधिक वेगाने वाढते.

डायबेटीस असलेल्या प्रत्येक रुग्णाने वर्षातून किमान एकदा नेत्रतज्ज्ञांकडून डोळ्यांच्या पडद्याची तपासणी करून घ्यावी. विशेष लेन्स व फंडस तपासणीद्वारे सुरुवातीच्या अवस्थेतच बदल ओळखता येतात.

लवकर निदान झाल्यास लेझर उपचार किंवा औषधांनी दृष्टी वाचवता येते.

काळे ठिपके; नजर कमी होण्याची लक्षणे

डोळ्यांसमोर काळे ठिपके दिसणे, अक्षरे धूसर दिसणे, अचानक दृष्टी कमी होणे किंवा सरळ रेषा वाकड्या दिसणे ही या आजाराची लक्षणे आहेत. काही वेळा सुरुवातीला कोणतीही लक्षणे जाणवत नाहीत, त्यामुळे नियमित तपासणी अत्यावश्यक ठरते.

कोणाला सर्वाधिक धोका?

ज्यांना अनेक वर्षांपासून डायबेटीस आहे, रक्तदाब जास्त आहे, कोलेस्टेरॉल वाढलेले आहे किंवा गर्भावस्थेत साखर वाढलेली आहे अशांना अधिक धोका असतो. साखरेवर नियंत्रण नसलेले रुग्ण विशेष धोक्यात असतात.

...नाहीतर डोळ्यांत घ्यावे लागणार इंजेक्शन

उशिरा निदान झाल्यास डोळ्यांत औषधांचे इंजेक्शन द्यावे लागते किंवा लेझर शस्त्रक्रिया करावी लागते. त्यामुळे संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, साखरेचे नियंत्रण आणि वेळेवर नेत्रतपासणी हेच डोळ्यांचे संरक्षण करण्याचे प्रभावी उपाय आहेत.

'तिचे' विवाहाचे स्वप्न भंगले; लाखोंचे दागिने घेऊन भामटा पसार

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : ४५ वर्षीय महिलेचा विवाहाच्या आमिषाने विश्वास संपादन करून तिचे ४ लाख ५८ हजारांचे दागिने, १० हजार, मोबाइल लंपास केल्याची घटना गुरुवारी घडली. वनराई पोलिसांनी जतिन चौहान या भामट्यावर गुन्हा नोंदवला.

एकता व्ही. यांनी तीन महिन्यांपूर्वी त्यांनी विवाहासाठी मॅट्रिमोनियल संकेतस्थळावर प्रोफाइल तयार केला. त्यावेळी जतिन नावाची व्यक्ती संकेतस्थळाचा पेड मेंबर असल्याने त्याने एकताचा संपर्क क्रमांक मिळवून संवाद सुरू केला आणि त्यांना विवाहाचा प्रस्ताव पाठवला. दोन्ही कुटुंबांची भेट २१ फेब्रुवारी रोजी ठरविण्यात येणार असल्याचेही सांगितले.

....अशी झाली फसवणूक

१९ फेब्रुवारी रोजी आरोपीने एकता यांना दागिने पॉलिश करण्यासाठी सोबत आणण्याचा आग्रह धरला. त्यावेळी त्यांनी अंदाजे ४ लाख ५८ हजार रुपयांचे दागिने आणि १० हजार रुपये रोख रक्कम सोबत घेतली. आरोपीने त्यांना क्रॉफर्ड मार्केट येथे नेले.

दागिने असलेली बॅग स्वतःकडे ठेवली. मंगलदास मार्केट येथे कपड्यांची खरेदी केल्यानंतर दादर पश्चिमच्या मॉलमध्ये एकताला घेऊन गेला.

दुपारी साडेतीनच्या सुमारास आरोपीने काही कपडे निवडून ट्रायल रूममध्ये जाऊन तिला बदलण्यास सांगितले. ती ट्रायल रूममधून बाहेर आल्यानंतर तो बॅगसह फरार झाल्याचे लक्षात आले.

योजनांची कागदोपत्रीच पूर्तता, प्रत्यक्षात लाभार्थी प्रतीक्षेत

अर्ज प्रक्रियेतील अडथळे; निधी वितरणात विलंब

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : केंद्र, राज्य सरकारांकडून अनेक योजना जाहीर होतात. घरकुल, शिष्यवृत्ती, आरोग्य विमा, शेतकरी सहाय्य, स्वयंरोजगारसारख्या योजनांसाठी कोट्यवधींचा निधी वितरित झाल्याचे व लाभार्थ्यांपर्यंत योजना पोहोचल्याचे चित्र अहवालांत रंगवले जाते. प्रत्यक्षात अर्ज प्रक्रियेतील अडथळे, माहितीचा अभाव, निधी वितरणातील विलंबामुळे पात्र लाभार्थी अजूनही प्रतीक्षेत असल्याचे समोर आले आहे. त्यामुळे सरकारी योजनांच्या कागदोपत्री यशाची जमिनीवरील पडताळणी करणे अत्यावश्यक ठरत आहे.

ऑनलाइन नोंदणीतील तांत्रिक अडचणी

सरकारी योजनांचा लाभ घेण्यासाठी नागरिकांना सरकारी कार्यालयात खेपा माराव्या लागू नयेत यासाठीही ऑनलाइन नोंदणीचा पर्याय उपलब्ध करून देण्यात आला आहे. मात्र, अर्ज प्रक्रियेतील गुंतागुंत, कागदपत्रांची किचकट अट, ऑनलाइन नोंदणीत येणाऱ्या तांत्रिक अडचणी व माहितीचा अभाव यामुळे अनेकांना अर्जच करता आले नाहीत.

नियमित परीक्षण आवश्यक

योजना जाहीर करणे हा पहिला टप्पा आहे; मात्र त्यांची प्रभावी व पारदर्शक अंमलबजावणी करणे हे प्रशासनाची खरी कसोटी आहे. लाभार्थ्यांची खुली व पडताळणी योग्य यादी, सामाजिक लेखापरीक्षण, स्थानिक पातळीवरील मार्गदर्शन शिबिरे, सक्षम तक्रार निवारण यंत्रणा उभारल्यास होणाऱ्या गैरप्रकारांना आळा बसू शकतो. त्याचप्रमाणे निधीचा वापर व प्रत्यक्ष परिणामाचे नियमित परीक्षण होणेही गरजेचे आहे.

आरोग्य विम्यासाठी अनेक अडथळे

१ शिष्यवृत्ती योजनांसाठी अर्ज केलेल्या विद्यार्थ्यांना निधी वेळेत मिळत नाही. आरोग्य विमा योजनांमध्ये नोंदणीकृत रुग्णालयांची मर्यादित संख्या व प्रक्रियेतील विलंबामुळे लाभार्थ्यांना तातडीची सेवा मिळण्यात अडथळे निर्माण होत आहेत. "

२ शासकीय योजना या नागरिकांच्या जीवनमानाशी थेट संबंधित आहेत. त्यामुळे 'घोषणा' आणि 'जमिनीवरील वास्तव' यातील दरी कमी होण्याची आवश्यकता आहे.

३ योजनांचा खरा उद्देश साध्य होईल. अन्यथा कागदोपत्री आकड्यांमध्ये वाढ दिसेल; पण गरजूंना प्रत्यक्ष दिलासा मिळणार नाही.

वाढत्या उन्हात ई-वाहनांची लागणार कसोटी

३५ ते ४५ अंश तापमानात बॅटरीवर थेट परिणाम

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : तापमानाचा पारा दिवसेंदिवस चढत असताना इलेक्ट्रिक वाहनांची खरी परीक्षा सुरू झाली आहे. पेट्रोल-डिझेल वाहनांच्या तुलनेत ई-वाहने पर्यावरणपूरक आणि किफायतशीर असली तरी ती पूर्णपणे बॅटरीवर अवलंबून असल्याने उष्णतेचा त्यांच्यावर थेट परिणाम होतो. विशेषतः ३५ ते ४५ अंश सेल्सिअस तापमानात बॅटरी ओव्हरहिट होणे, रेंज कमी होणे आणि चार्जिंग कार्यक्षमतेत घट येणे अशा समस्या जाणवू शकतात. योग्य काळजी घेतल्यास मात्र ई-वाहन सुरक्षित आणि सुरळीत वापरता येऊ शकते. मात्र, दुर्लक्ष केल्यास दुर्घटनेला होण्याची शक्यता नाकारता येणार नाही.

वाहनाची रेंज होते कमी

उच्च तापमानात बॅटरी कार्यक्षमता ५ ते १५ टक्क्यांपर्यंत घटू शकते. एसीचा जास्त वापर, ट्रॅफिकमधील सतत ब्रेक-ॲक्सेलरेशन आणि गरम रस्त्यांवरील ड्रायव्हिंग यामुळे रेंज आणखी कमी होऊ शकते.

उन्हाचा ई-वाहनांवर परिणाम काय

उच्च तापमानामुळे लिथियम-आयन बॅटरीचे तापमान झपाट्याने वाढत असल्याने बॅटरी मॅनेजमेंट सिस्टिम बॅटरीचे संरक्षण करण्यासाठी आउटपुट कमी करते. त्यामुळे वाहनाची पिकअप आणि रेंज कमी होऊ शकते. सतत उष्णतेत पार्किंग केल्यास बॅटरीच्या सेल्सवर ताण वाढतो. इलेक्ट्रॉनिक घटकांवरही उष्णतेचा परिणाम होऊ शकतो. शक्यतो वाहन सावलीत, कव्हर पार्किंगमध्ये ठेवा. दुपारच्या कडक उन्हात दीर्घकाळ वाहन उभे ठेवणे टाळा. बॅटरी २०% खाली जाऊ देऊ नका.

बॅटरीची लाइफ होतेय कमी

दीर्घकाळ उष्णतेच्या संपर्कात राहिल्यास बॅटरीचे केमिकल स्ट्रक्चर हळूहळू कमजोर होऊ शकते. त्यामुळे बॅटरीची एकूण आयुष्यकाळ कमी होण्याची शक्यता असते. योग्य चार्जिंग सवयी आणि सावलीत पार्किंग यामुळे ही समस्या टाळता येऊ शकते.

असे झाल्यास सतर्क व्हा

वाहन वारंवार ओव्हरहिटिंग अलर्ट दाखवत असेल, चार्जिंग अचानक थांबत असेल, रेंज अनपेक्षितपणे झपाट्याने कमी होत असेल, बॅटरीकडून अनोळखी वास येत असेल अशा वेळी तातडीने अधिकृत सर्व्हिस सेंटरशी संपर्क साधा, असा सल्ला तज्ज्ञांकडून देण्यात येत आहे.

अभियंते म्हणतात...

उन्हाळ्यात लिथियम-आयन बॅटरीवर सर्वाधिक ताण येतो. तापमान ४० अंशांच्या पुढे गेल्यावर बॅटरी मॅनेजमेंट सिस्टिम स्वतःच वाहनाची कार्यक्षमता कमी करते. त्यामुळे रेंज घटल्याचे चालकांना जाणवते. योग्य चार्जिंग पद्धती आणि सावलीत पार्किंग हीच मुख्य उपाययोजना आहे,' असे ऑटोमोबाइल अभियंता निरंजन सिताप सांगतात.

दादर, वरळी, नरीमन पॉइंटमधून जाताना सावधान! उघड्या तारांमुळे बसेल शॉक

१ मुंबई शहर, उपनगरांतील रस्त्यांवर दिव्यांच्या खांबांवरील जंक्शन बॉक्सची दुरवस्था कायम असल्याचे वारंवार समोर येत आहे. अनेक ठिकाणी जंक्शन बॉक्सची झाकणे चोरीला जात असल्याने ते उघडे पडले आहेत. बाहेर आलेल्या विद्युत तारांमुळे पादचारी नागरिकांच्या सुरक्षिततेला गंभीर धोका निर्माण होत आहे.

२ बेस्ट प्रशासनाकडून शिवडी, वडाळा परिसरातील जंक्शन बॉक्सची झाकणे वारंवार नव्याने बसवली जात असल्याची माहिती यापूर्वी देण्यात आली होती. मात्र, ती पुन्हा चोरीला जाण्याचे प्रकार सुरूच असल्याने समस्या कायम आहे. उपाययोजना करूनही या प्रकाराला आळा घालण्यात यश आलेले नाही.

३ नरीमन पॉइंट, महालक्ष्मी परिसर, वरळी येथील काही ठिकाणीही उघडे जंक्शन बॉक्स आहेत. त्यामुळे नागरिकांचा धोका वाढला आहे. विशेषतः पावसाळ्यात किंवा आर्द्र हवामानात या उघड्या तारांमुळे विजेचा धक्का बसण्याचा धोका अधिक गंभीर ठरू शकतो. (छाया : दत्ता खेडेकर)

मस्ट READ

तुम्हाला माहीत आहे का; केश प्रत्यारोपण कितपत सुरक्षित

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : केश प्रत्यारोपण ही एक विशेष तज्ज्ञता आहे. जरी हे सुरक्षित असले, तरी ते 'बोर्ड सर्टिफाइड' डॉक्टरांच्या हातामध्येच सुरक्षित आहे. काही गुंतागुंत झाली तर ती तज्ज्ञ डॉक्टरांनाच कळू शकते की ती कशी हाताळायची, कुठे थांबायचे याचा निर्णयही तेच घेतात, असा सल्ला तज्ज्ञ डॉक्टरांनी दिला आहे. केशरोपण करताना मृत्यूच्या काही घटना घडल्या आहेत; जिथे डॉक्टर पात्र नव्हते. शस्त्रक्रिया असल्यावर सुरक्षा नियम आणि निर्जंतुकीकरण महत्त्वाचे असते, हाही महत्त्वाचा मुद्दा आहे.

अशी होते शस्त्रक्रिया

फक्त डोक्याच्या भागाला भूल दिली जाते. योग्य तपासणी करून आणि पेशंटला इतर आजार नसल्यास गुंतागुंतीची शक्यता कमी होते. शस्त्रक्रियेनंतर रुग्ण एका दिवसात बरा होतो, पण कपाळावर सूज येऊ शकते म्हणून डॉक्टर विश्रांतीचा सल्ला देतात.

केस गळण्याचे प्रमाण वाढले आहे. कोविडनंतर हे प्रमाण वाढल्याचे तज्ज्ञांचे निरीक्षण आहे. अनुवांशिकसह जीवनशैली, खाण्यापिण्याच्या सवयी, झोप यांचाही परिणाम होतो. विशेषत: २० वर्षांच्या मुलांमध्येही वेगाने टक्कल पडताना दिसते.

> केस गळतीची लक्षणे दिसतील, तेव्हाच तज्ज्ञ डॉक्टरांचा सल्ला घ्या. जर तुम्ही केस गळतीच थांबवली नाही, तर टक्कल पडणारच. जर तुमचे केस फक्त अंघोळीच्या वेळीच गळत असतील तर ती सामान्य प्रक्रिया आहे. जर तुमची टाळू दिसत नसेल तर काळजीचे कारण नाही. दिवसभरात कधीही केसांतून हात फिरविल्यावर जर जास्त केस हातात आले, तर ती केस गळती समजावी.
>
> **डॉ. रुचिता धुरत,**
> **डर्मिटोलॉजिस्ट**

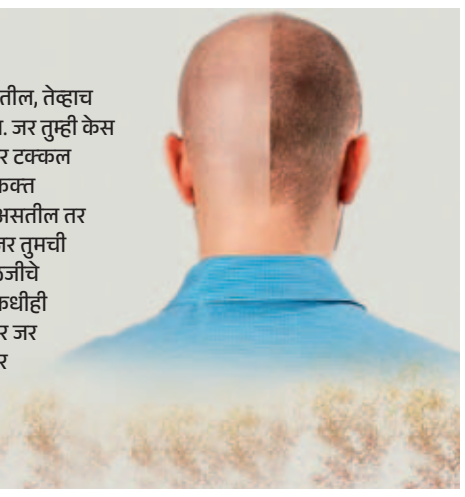

कोणत्या वयोगटात टक्कल पडते जास्त?

१८ वर्षांपासून पुढे कोणालाही टक्कल पडू शकते. मात्र, वयाच्या २५ वर्षांनंतर केश प्रत्यारोपणाचा सल्ला डॉक्टर देतात, कारण तोपर्यंत केस गळतीमध्ये थोडी स्थिरता येते. कमी वयातील मुलांमध्ये केसगळतीमुळे न्यूनगंड निर्माण होतो.

किती वेळ, खर्च येतो?

केश प्रत्यारोपणास साधारण तीन ते पाच तास लागतात. यासाठी लाखोंचा खर्च असून, किती केस गेले आहेत यावर खर्च अवलंबून असतो.

गॅस बिल अपडेटच्या बहाण्याने पावणेआठ लाखांची फसवणूक

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : डोंबिवली येथील नंदा गजानन वैद्य (५५) या महिलेची गॅस बिल अपडेट करण्याच्या बहाण्याने ७ लाख ७४ हजार ५७६ रुपयांची ऑनलाइन फसवणूक झाल्याची घटना समोर आली. याप्रकरणी संबंधित महिलेने सिटिझन पोर्टलवर तक्रार नोंदवली असून, पार्कसाइट पोलिस ठाण्यात गुन्हा दाखल करण्यात आला.

तक्रारदार वैद्य या विक्रोळी पश्चिमच्या कंपनीमध्ये काम करतात. १८ फेब्रुवारी रोजी सकाळी सुमारे ९ वाजता त्यांच्या मोबाइलवर व्हॉट्सॲपद्वारे संदेश आला. त्यामध्ये त्यांचे एमजीएल गॅस कनेक्शन बंद होणार असल्याचे सांगून ते सुरू ठेवण्यासाठी एका मोबाइल क्रमांकावर संपर्क साधण्यास सांगण्यात आले. १९ फेब्रुवारी रोजी संपर्क साधूनही प्रतिसाद न मिळाल्याने त्यांनी २० फेब्रुवारी रोजी पुन्हा कॉल केला. त्या व्यक्तीने एमजीएल कंपनीचा प्रतिनिधी असल्याचे सांगून माहिती अपडेट करण्यासाठी पैसे भरण्यास सांगितले. त्यानंतर गॅस बिल अपडेटची फाइल पाठवून ती डाउनलोड करण्यास व डेबिट कार्डची माहिती भरण्यास सांगून संधी साधली.

१३ रुपये भरण्यास सांगून भामट्याने साधली संधी

एक्स से

किसी इंसान को सिर्फ जान से मारना ही हत्या नहीं होती और उसे बचाना काफी नहीं है। जुबान से मारना और इज्जत न करना भी एक किस्म की हत्या ही है-
पोप लिओ XIV/ईसाई धर्मगुरु

एआई मजबूती का महायज्ञ

जो लोग इस महासम्मेलन को बेजा बता रहे हैं, वे जान लें। पिछले दिनों अमेरिका के प्रतिष्ठित स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय ने एक शोध में भारत को एआई के मामले में तीसरी सबसे बड़ी शक्ति के तौर पर आंका है। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि दुनिया के कुल एआई विशेषज्ञों में से 16 फीसदी भारत में रहते हैं और जनरेटिव एआई प्रोजेक्ट्स के मामले में हम संसार में दूसरे स्थान पर हैं।

आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

शशि शेखर

आजकल

क्या आप बता सकते हैं कि 18-24 अप्रैल, 1955 और 16-21 फरवरी, 2026 के बीच कोई तारतम्य है? ये तिथियां भारतीय इतिहास में हमेशा खास मुकाम रखेंगी।

पहले अतीत की बात। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की वह पहली दहाई उपनिवेशवाद के खात्मे को समर्पित थी। एक-एक कर तमाम एफ्रो-एशियाई देश यूरोपीय आकाओं के चंगुल से मुक्त हो रहे थे। सदियों तक उनके संसाधनों को जमकर दुहा गया था, लिहाजा दुनिया की इस बड़ी आबादी पर भुखमरी और दरिद्रता की गहरी मार थी।

दुनिया उस समय दो खेमों में बंट गई थी- अमेरिका और सोवियत संघ। ये दोनों महाशक्तियां अपने-अपने तरीके से नव-स्वतंत्र देशों को अपने पाले में करने की जुगत में थीं। जवाहरलाल नेहरू, मार्शल टीटो और सुकर्णो जैसे नेता चिंतित थे कि किसी एक शिविर में जाना नई मिली इस संप्रभुता से समझौता हो सकता है। नतीजतन, इंडोनेशिया के नगर बांडुंग में एक सम्मेलन आयोजित किया गया। इसमें शामिल नेताओं ने गुटनिरपेक्षता की नीति को अपनाने का फैसला किया। वे मानते थे कि दोनों गुटों की अधीनता स्वीकार किए बिना भी उनके साथ सह-अस्तित्व कायम रखा जा सकता है।

उन दिनों संसार की अर्थव्यवस्थाओं में भारत 10वें नंबर पर था और हमारी प्रति-व्यक्ति आय 250 से 270 रुपये के बीच थी।

इस गुटनिरपेक्ष आंदोलन का क्या लाभ हुआ? हम वाकई अपनी तटस्थता की रक्षा कर सके? इन प्रश्नों पर कई बार तीखी बहस हो चुकी है, लिहाजा वर्तमान की बात। आज भारत संसार की चौथे नंबर की अर्थव्यवस्था है और तीसरे स्थान पर पहुंचने को बेताब है। हमारी प्रति-व्यक्ति आय भी तीन हजार डॉलर को पार कर गई है। पिछले एक दशक में हमने तमाम क्षेत्रों में आशातीत बढ़ोतरी हासिल की है। यही वजह है कि हम अब तीसरी दुनिया रचने के नहीं, अपने दम पर अपनी बात रखने के आकांक्षी हैं।

अगर बांडुंग सम्मेलन भूखे पेटों का आत्मालाप था, तो नई दिल्ली में 16 से 21 फरवरी के बीच आयोजित 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट-2026' तेजी से बढ़ते भारत की हुंकार है।

जो लोग इस महासम्मेलन को बेजा बता रहे हैं, वे जान लें। पिछले दिनों अमेरिका के प्रतिष्ठित स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय ने एक शोध में भारत को एआई के मामले में तीसरी सबसे बड़ी शक्ति के तौर पर आंका है। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि दुनिया के कुल एआई विशेषज्ञों में से 16 फीसदी भारत में रहते हैं और जनरेटिव एआई प्रोजेक्ट्स के मामले में हम संसार में दूसरे स्थान पर हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सत्ता सम्हालते ही जो सुधार किए, उनमें बेहद महत्वपूर्ण इनोवेशन और स्टार्टअप्स को बढ़ावा देना है। आंकड़े बताते हैं कि भारत के 89 फीसदी नए स्टार्टअप्स एआई का प्रयोग करते हैं। यही नहीं, जून 2025 में लॉन्च हुआ 'भारतजेन' एआई संसार का पहला सरकार पोषित मल्टीमॉडल 'लार्ज लैंग्वेज मॉडल' है। भारत को आगे बढ़ना है, तो हमें देश की विभिन्न भाषाओं में एआई सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराने ही होंगे। सरकार इसी दिशा में आगे बढ़ रही है।

प्रधानमंत्री मोदी की अगुवाई में एक लाख करोड़ रुपये का एक ऐसा कोष भी तैयार किया गया है, जो नवोन्मेषी शोध के इच्छुक नौजवानों को ब्याज-मुक्त धन उपलब्ध करा रहा है। ऐसी पहल पहले कभी नहीं हुई।

बताने की जरूरत नहीं कि एआई को एक ऐसा ब्रह्मास्त्र माना जा रहा है, जिसके जरिये सबल महादेश कमजोर मुल्कों पर प्रभुत्व स्थापित कर सकते हैं। इस मामले में अमेरिका की नीयत सामने आ चुकी है। राष्ट्रपति ट्रंप ने जिस तरह टैरिफ युद्ध के जरिये समूचे विश्व को अपने काबू में करना चाहा, वह दूसरे महायुद्ध के बाद स्थापित सभी लोकतांत्रिक मूल्यों के विपरीत था। एआई तेज दौड़ती ऐसी बस है, जिस पर अगर तत्काल सवारी नहीं की गई, तो आप बीच राह में अटक जाने को अभिशप्त होंगे।

भारत ने इस सम्मेलन के जरिये कई लक्ष्य एक साथ साधने का प्रयास किया है। सबसे पहला है- इस क्षेत्र के प्रति रुचिशील नौजवानों को यह भरोसा देना कि आपका देश आपकी महत्वाकांक्षाओं को पंख देने का सामर्थ्य रखता है। मोदी सरकार को विश्वास है कि इस सम्मेलन के बल पर भारत एआई के लोकतंत्रीकरण, डीपफेक, साइबर सुरक्षा और नई उपजी चुनौतियों से जूझने के लिए नैतिक मानदंड स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकता है। मोदी का 'मानव' फॉर्मूला इसी से प्रेरित है।

सम्मेलन में फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों, ब्राजीलियाई राष्ट्रपति लुइज इनासियो लूला डी सिल्वा, संयुक्त राष्ट्र संघ के महासचिव एंटोनियो गुटेरस सहित करीब 20 देशों के शासनाध्यक्ष शामिल थे। यही नहीं, गूगल, ओपनएआई, माइक्रोसॉफ्ट, एन्थ्रोपिक, एक्सेन्चर, एडोब, मेटा के शीर्षस्थ अधिकारियों के साथ 600 से अधिक विषय विशेषज्ञों ने नई दिल्ली सम्मेलन में हिस्सा लिया। महाकाय कंपनियों के ये संचालक अब किसी राष्ट्राध्यक्ष या बड़े नेता से कम हैसियत नहीं रखते। यह जमावड़ा भारत की एआई कूटनीति की दिशा में उठाया गया पहला सबल कदम है।

ऐसा नहीं है कि भारत के रास्ते में चुनौतियां नहीं हैं। हमें कंप्यूटिंग शक्ति (जीपीओ) और महंगे क्लाउडिंग इंफ्रास्ट्रक्चर हासिल करने होंगे। यही नहीं, मंझोले और छोटे शहरों के साथ दूरदराज के गांवों में एआई संस्कृति को तेजी से विस्तार देना होगा। इसके लिए सरकार और निजी क्षेत्र मिलकर काम करना शुरू कर चुके हैं। हो सकता है कि अगले साल के अंत तक हम पांच ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था के साथ इनमें से कई लक्ष्य हासिल करने में कामयाब हो जाएं। इस सम्मेलन के जरिये भारत को दो वर्ष में 200 बिलियन डॉलर से अधिक का विदेशी निवेश मिलने की उम्मीद है। अगर ऐसा होता है, तो यह हमारी छलांग की गति और शक्ति, दोनों बढ़ाने में मददगार होगा।

यहां मैं आपको अपने एक बेहतरीन अनुभव से रूबरू कराना चाहूंगा। इस महीने की शुरुआत में हम कुछ साथी जोधपुर गए थे। शाम को हमें शहर से 90 किलोमीटर दूर ओसियां में धूहों के बीच डूबते सूरज का दीदार करने ले जाया गया। रास्ते में हमारी आंखें यह देखकर फटी रह गईं कि रेतीली धरती पर राई के साथ कुछ अन्य उपज हरिया रही थी।

इसे 'ड्रिप हार्वेस्टिंग' और एआई से उपजी जानकारियों के जरिये साकार किया गया है। वहां के किसान कुछ स्वयंसेवी संस्थाओं की मदद से एआई उपकरणों के जरिये आसानी से जान लेते हैं कि खेत के किस हिस्से को पानी की जरूरत है, कहां कीड़ा लग रहा है या कहां खाद की कमी है? उन्हें कीड़ों के हमले की चेतावनी भी पहले से मिल जाती है। एआई उपकरण उन्हें यह भी बता देते हैं कि किस फसल को बोने में उनका सर्वाधिक लाभ है और मुनाफा बढ़ाने के लिए उचित बाजार कहां है?

यह रेतीली धरती को शस्य श्यामला भूमि में बदलने की अनोखी दास्तान है। मुझे और मेरे साथियों को उन हरियाले खेतों में ढलती शाम में भी उम्मीदों की किरणें उपजती नजर आई थीं। हमें उन्हें नए क्षितिज देने होंगे।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

रजिया शेख
सामाजिक उद्यमी

बस्तर को उसकी पहचान लौटाने में जुटी एक बेटी

अमेरिका से लौटने के बाद रजिया का आत्मविश्वास आसमान पर था। अब वह अपने पिता से पैसे मांग सकती थीं। पापा ने खुशी-खुशी दिए भी और 2020 के अंत तक रजिया की उत्पादन इकाई शुरू हो गई। उनकी कंपनी बस्तर फूड्स का पहला उत्पाद (महुआ लड्डू) ही सुपरहिट हो गया।

हिन्दुस्तान की सबसे खूबसूरत जगहों में से एक 'बस्तर' दशकों तक नक्सली आतंक के साये में घिरा रहा। अब जब नक्सलवाद का अंत अनकरीब दिख रहा है, तब यह उम्मीद जगी है कि वहां बसे आदिवासियों की जिंदगी में सचमुच खुशहाली लौट सकेगी। हालांकि, सरकारी प्रयासों से इतर भी कई लोग अपने तौर पर बस्तर को उसकी असली पहचान दिलाने के लिए अनथक उद्यम करते रहे हैं। रजिया शेख उनमें से एक हैं। रजिया के पिता शेख मस्तान मलिक मूलतः आंध्र प्रदेश के हैं। आंध्र के गुंटूर जिले से काम की तलाश में वह दशकों पहले मध्य प्रदेश के जगदलपुर (अब छत्तीसगढ़) में आ गए थे। शहर में बनने वाले नए घरों-होटलों में इलेक्ट्रिशियन व प्लंबर का काम करके वह परिवार का भरण-पोषण करते थे। शेख मस्तान व उनकी बेगम अमीना की जिंदगी में पहली संतान बनकर रजिया आईं और उनके बाद दो बेटों का जन्म हुआ।

मस्तान मलिक चूंकि खुद दसवीं से आगे न पढ़ सके थे, इसलिए उनकी बड़ी इच्छा थी कि बच्चे मनचाही तालीम हासिल करें। संयुक्त परिवार था। भाई की भी दो बेटियां थीं। निजी स्कूल की फीस भरना उनके लिए तब मुमकिन न था, लिहाजा मुहल्ले के सरकारी स्कूल में ही पांचों बच्चों का दाखिला करा दिया गया। रजिया शुरू से पढ़ने में काफी होशियार थीं। स्कूली तालीम पूरी करने के बाद जगदलपुर के ही क्राइस्ट कॉलेज से उन्होंने विज्ञान स्नातक की डिग्री हासिल कर ली। शानदार रिजल्ट और आगे पढ़ने की चाह को देखते हुए पिता उन्हें आंध्र की नागार्जुन यूनिवर्सिटी ले गए, जहां से वह माइक्रोबायोलॉजी में मास्टर्स करके जगदलपुर लौटीं।

रजिया के पास एक ऐसी डिग्री थी, जिसके आधार पर उन्हें महानगरों में नौकरी मिल सकती थी, मगर अपने परिवार और बस्तर के परिवेश से उन्हें इस कदर मोहब्बत थी कि उन्होंने ठान लिया, जो कुछ भी करना है, यहीं करना है। उन्हें इस बात का भी रंज था कि कुदरत ने बस्तर को इतनी नेमतों से नवाजा है, मगर उसकी पहचान नक्सलियों से होती है। वह इस 'टैग' को बदलना चाहती थीं। संयोग से जगदलपुर के ही एक गैर-सरकारी संगठन 'रामकृष्ण शारदा सेवाश्रम' में बतौर शोधार्थी उन्हें काम मिल गया।

रजिया बहुत खुश थीं कि उन्हें अपने पैरों पर खड़े होने का मौका उसी इलाके में मिल गया है, जो उन्हें अजीज है। सेवाश्रम के जिस प्रोजेक्ट पर वह काम कर रही थीं, उसे करते हुए उन्हें आदिवासी औरतों व युवाओं की समस्याओं और अपेक्षाओं को करीब से जानने-समझने का मौका मिला। उन दिनों वह बस्तर के गांवों में घूम-घूमकर गर्भवती महिलाओं को अपनी सेहत और पौष्टिक खान-पान के बारे में जागरूक करती थीं। इसी क्रम में बीजापुर के एक हताश नौजवान की बात ने उन्हें झकझोरकर रख दिया। उसने कहा, दीदी, यहां नौकरी पाने का

सबसे आसान तरीका है- नक्सली समूह में शामिल हो जाओ, 20 हजार रुपये की मासिक तनख्वाह तय।

उस दिन रजिया को एहसास हुआ कि इन युवाओं को आय का स्रोत मुहैया कराने के साथ-साथ सही मार्गदर्शन करने की जरूरत है। उन्होंने उद्यमिता, जनजातीय विकास, आदिवासियों के अधिकारों और संस्कृति के अलावा उनसे जुड़ी सरकारी योजनाओं का गहन अध्ययन किया। इसी क्रम में रजिया ने पाया कि शराब बनाने के लिए जिस महुए के फूल को आदिवासी महिलाएं चुनती हैं, उसमें बहुत ज्यादा पोषक तत्व हैं, जो बच्चों-माओं के खून में हीमोग्लोबिन का स्तर बढ़ा सकते हैं। चूंकि वह माइक्रोबायोलॉजी की विद्यार्थी थीं, उन्हें यह समझने में देर नहीं लगी कि बस्तर में खाने-पीने की चीजों पर आधारित कारोबार के लिए भरपूर अवसर है। इससे नौजवानों को पलायन करने या गुमराह होने से भी रोका जा सकता है। इसको ध्यान में रखते हुए ही उन्होंने 2017 में 'बस्तर फूड्स फर्म ऐंड कंसल्टेंसी सर्विसेज' की शुरुआत की।

जाहिर है, यह कदम आसान न था। एक पिछड़े इलाके में कोई लड़की उद्यमी बनने की हिमाकत कर रही थी! किसी ने तंजिया मुस्कान के साथ नसीहत दी कि इकलौती बेटी हो, शादी करो-घर बसाओ, तो कोई महानगर में अच्छी नौकरी तलाशने की सलाह देकर टरका देता, पर पापा ने कभी उन्हें हतोत्साहित नहीं किया। अपना उद्यम शुरू करने के लिए उनके पास पूंजी नहीं थी और वह पिता से आर्थिक मदद भी नहीं लेना चाहती थीं, क्योंकि उन्होंने काफी मुश्किलें उठाकर अपना काम जमाया था। बहरहाल, अगले दो साल तक रजिया ने 'रिसर्च ऐंड डेवलपमेंट', बाजार की पहचान आदि पर काम किया। इस दौरान वह दीगर कंपनियों में प्रशिक्षण देने का काम करती रहीं।

साल 2019 में रजिया एक स्कॉलरशिप के तहत महीने भर के लिए अमेरिका गईं। वहां उन्होंने स्टार्टअप संस्कृति की बारीकियों को जाना। अमेरिका से लौटने के बाद उनका आत्मविश्वास आसमान पर था। अब वह अपने पिता से पैसे मांग सकती थीं। पापा ने खुशी-खुशी दिए भी और 2020 के अंत तक रजिया की उत्पादन इकाई शुरू हो गई। उनकी कंपनी बस्तर फूड्स का पहला उत्पाद (महुआ लड्डू) ही सुपरहिट साबित हुआ। दिल्ली, मुंबई, हैदराबाद, कोलकाता, रायपुर आदि बड़े शहरों से उसकी मांग आने लगी।

आज 'बस्तर फूड्स' बीस से अधिक उत्पादों का उत्पादन कर रही है और बस्तर की करीब 700 महिलाएं उनसे जुड़ी हैं।

बस्तर के परिवेश से उन्हें इस कदर लगाव था कि उन्होंने ठान लिया, जो कुछ भी करना है, यहीं करना है। उन्हें इस बात का भी रंज था कि कुदरत ने उनके इलाके को इतनी नेमतों से नवाजा है, मगर उसकी पहचान नक्सलियों से चिपक गई है। वह इस 'टैग' को बदलना चाहती थीं।

2,000 से अधिक किसान उन्हें कच्चा माल मुहैया करा रहे हैं। जो बैंक कर्ज देने से कतराते थे, वे अब न्योता देते हैं। लंदन की एक कंपनी के साथ उनकी साझेदारी है। पापा के एक स्टोररूम से कंपनी शुरू करने वाली रजिया के पास अपनी फैक्टरी है। फूड प्लांट पर 20 छात्रों के लिए इंटर्नशिप की सुविधाएं हैं। वह अब अपने उत्पादों के निर्यात की तैयारी कर रही हैं। नीति आयोग उन्हें देश के शीर्ष एंटरप्रेन्योर में शामिल कर चुका है। आप बताएं, बस्तर अपनी इस बेटी को कभी भूलेगा?

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

मेहर बाबा
आध्यात्मिक गुरु

बस एक बोसा और कंकड़ का कमाल

फकीरों की फकीर थीं हजरत बाबाजान। पुणे में एक नीम तले डेरा था, धूप हो, बारिश हो या सर्दी, कंबल ओढ़े रहती थीं। मजहब से मुस्लिम थीं, पर उनके गुरुओं में हिंदू संत भी थे। वह एकाधिक बार हज करने के बाद नीम के पेड़ तले आ बसी थीं। न कोई झोंपड़ी, न कोई आश्रम।

आज कोई कहता है- ईद मुबारक न कहना, तो कोई पूछता है, हम होली क्यों मनाएं? किसी को अजान से नफरत हो गई है, तो किसी को आरती से। बेशक, आज जो दूरियां बढ़ आई हैं, पहले नहीं थीं। संतों और फकीरों के बीच गजब यारी थी। तमाम मजहबी भेद मिट जाते थे। ऐसी ही फकीर या फकीरों की फकीर थीं हजरत बाबाजान। पुणे में एक नीम तले डेरा था, धूप हो, बारिश या सर्दी, कंबल ओढ़े रहती थीं। मजहब से मुस्लिम थीं, पर उनके गुरुओं में हिंदू संत भी थे। वह एकाधिक बार हज करने के बाद नीम के पेड़ तले आ बसी थीं। न कोई झोंपड़ी, न कोई आश्रम। सड़क किनारे मगन बैठी रहती थीं। कुछ मुरीद उनके पास बैठे रहते थे और बहुत सारे लोग उन्हें नजरंदाज कर आते-जाते रहते थे।

एक उन्नीस वर्षीय पारसी नौजवान थे। उनका भी कॉलेज आने-जाने का वही रास्ता था। रोज उधर से गुजरते थे, पर एक दिन न जाने मन में क्या आया कि उतरकर बाबाजान के पास जा बैठे। शांत बैठे रहे, अच्छा लगा। फिर तो आदत पड़ गई। दिन ढलते आकर बैठने लगे। अचानक एक दिन सब देखते रह गए, बाबाजान ने उस नौजवान को पास बुलाया और ललाट पर एक बोसा ले लिया। बाबाजान की उम्र सौ के पार थी और उनके बारे में सब जानते थे कि वह शायद ही किसी का स्पर्श करती हैं, पर उन्होंने नौजवान पर खास सूफी मेहरबानी की थी। उस एक बोसे से नौजवान की जिंदगी बदल गई। उन्हें न प्यास रही, न तमन्ना। वह घंटों शून्य में निहारने लगे थे। उनकी परेशान माताजी एक दिन शिकायत लेकर बाबाजान के पास पहुंच गई थीं कि आपने मेरे बेटे को न जाने क्या कर दिया, मेरा लाड़ला मानो सो गया है। तब बाबाजान ने मुस्कराते हुए कहा था, उसे गलत मत समझना, वह सोया नहीं है। देखना, वह सो रहे लोगों को जगाएगा।

खैर, नौ महीने मदहोशी बनी रही। फिर एक दिन नौजवान की भेंट हिंदू संत उपासनी महाराज से हुई। कहते हैं, महाराज ने ठीक उसी जगह कंकड़ मारा, जहां बाबाजान ने बोसा लिया था। शिरडी के साईं बाबा के करीबी उपासनी महाराज के सान्निध्य में नौजवान को एक नई पहचान मिली, एक नया नाम मिला- मेहर बाबा।

सदा मुस्कराने वाले मेहर बाबा धर्म से पारसी थे, पर जितने मुस्लिम थे, उतने ही हिंदू। उन्होंने बार-बार समझाया कि मजहब अनेक हैं, पर ईश्वर एक है। मजहब को भले छोड़ दो, पर ईश्वर को न छोड़ो। ईश्वर को जब हम छोड़ते हैं, तब मजहब में उलझनें लगते हैं। ईश्वर के पास जाने के लिए तुम्हें 'मैं', 'मेरा' और 'मेरे' से दूर जाना होगा। वह बताते थे कि बाबाजान ने मुझे एक रुपया थमाया और उपासनी महाराज ने उस रुपये का मूल्य समझाया।

करीब सौ साल पहले साल 1925 में मात्र 31 की उम्र में उन्होंने मौन धारण कर लिया। वह मानने लगे थे कि ज्यादा बोलने से समस्याएं होती हैं। ज्यादा बोलना अज्ञानता है और वह दुनिया में अज्ञानता बढ़ाना नहीं चाहते हैं। कुछ वर्ष वह लिखकर संवाद करते रहे, पर बाद में सिर्फ इशारों से काम लिया। उनकी जिंदगी के 43 वर्ष बिन बोले बीते, पर काम उन्होंने अनगिनत किए।

उन्होंने बॉम्बे में मंजिल-ए-मीम अर्थात गुरु का घर की स्थापना की, जहां वह शिष्यों के साथ अति कठोर आध्यात्मिक अनुशासन में रहते थे। इसके बाद आश्रम अहमदनगर के बाहरी इलाके अरंगांव के पास स्थानांतरित हो गया। यह स्थान बाद में मेहराबाद के नाम से जाना गया। वहां कुष्ठ रोगियों की सेवा के लिए एक आश्रम और अस्पताल की स्थापना की।

दुनिया में जब हिप्पी कल्चर ने अपना शिकंजा कसा, तब मेहर बाबा पश्चिमी देशों में युवाओं को समझाने में लगे हुए थे कि मादक पदार्थ शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से हानिकारक हैं। वह अपने मौन उद्बोधन की शुरुआत इस संदेश से करते थे- डॉन्ट वरी, बी हैप्पी, मतलब चिंता मत करो, खुश रहो। उनका यह जुमला दुनिया में बहुत लोकप्रिय हुआ। इस पर बना एक खुशनुमा गीत पूरे पश्चिम में प्रसिद्ध है।

25 फरवरी को जन्मे मेहर बाबा (1894-1969) ने एक विद्यालय की स्थापना की, जहां सभी धर्मों-जातियों के लड़कों को धर्मनिरपेक्ष आध्यात्मिक शिक्षा दी जाती थी। वह लड़कों के मन-मस्तिष्क को ऐसे स्थिर कर देते थे कि लड़के खुशी से रोने लगते थे। दुनिया की नामी हस्तियां उनकी मुरीद थीं और सबको उन्होंने यही उपदेश दिया कि सत्य का साथ न छोड़ो और बुराइयों से बचने का एकमात्र उपाय है स्वार्थ का त्याग। विनम्रता, पवित्रता और सत्य पर चलो, तभी घृणा, लोभ और हिंसा से बचोगे।

वह हर धर्म के शिष्यों से घिरे रहते थे और उन्हें उनके शिष्यों ने बहुत सद्भाव से हर धार्मिक रीति-रिवाज का पालन करते हुए संसार से विदा किया। आज दुनिया में कहीं दुख होता है, तो मेहर बाबा से प्रेरित गीत की याद आती है- *डॉन्ट वरी, बी हैप्पी।*

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

नए युग के नायकों का रीतिकाव्य

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

जब से एपस्टीन फाइलें सार्वजनिक हुई हैं, तभी से सोच रहा हूं कि अब तक मिले सभी सम्मानों को लौटा दूं। यूं भी बड़ा सम्मान कोई मिला नहीं। जो मिले, वे छोटे-छोटे। उनमें भी कुछ खोटे और कुछ इतने छोटे कि कूड़े में फेंकना चाहूं, तो डरूं कि कहीं चुंगी वाले केस न कर दें कि ये कूड़ा क्यों फेंक रहा बे? फौरन हटा, नहीं तो जुर्माना भर।

जब से पता चला है कि एपस्टीन भाई 'नोबेल शांति सम्मान' का झुनझुना जिस-तिस को दिखाते रहते थे, जिसे देखते ही दुनिया का एक से एक नामी नेता, उद्योगपति अपनी लार टपकाता उसके विलास द्वीप की ओर दौड़ा चला आता था, जहां वे अपने नए 'रीतिकाव्य' को रचते थे और जो अब एपस्टीन-कथा के रूप में उपलब्ध है, तब से मेरा मन साहित्य के नोबेल सम्मानों का नाम तक लेना पाप समझता है।

याद आता है कि कुछ बरस पहले साहित्य का नोबेल सम्मान देने वाली कमेटी को ही रद्द कर दिया गया था, क्योंकि उसके कुछ सदस्यों के नाम एक 'स्कैंडल' में आए थे। मुझे तो तभी साफ हो गया था कि बेटा लेना ही हो, तो छोटे-मोटे पुरस्कार ले लेना, बड़ा हरगिज न लेना। बड़े के पीछे पता नहीं कौन सा बड़ा कांड छिपा हो। मैं भी क्या करूं, पुराना छिद्रान्वेषी हूं, एपस्टीन फाइलों की एक-एक लाइन देख रहा हूं। क्या पता, मेरा भी नाम कहीं लिखा नजर आए और मैं अन्य नायकों की तरह दुनिया भर में छा जाऊं। अफसोस! ऐसा न हुआ!

ये फाइलें नहीं हैं, बल्कि नए युग के नायकों द्वारा रचा गया नया रीति साहित्य है, जिसमें नए नायिका भेदों और उनकी लीलाओं का वर्णन है। यह एपस्टीन काव्य हिंदी के समूचे रीतिकाल से बहुत आगे के 'सीन' रचता है। एपस्टीन काव्य के नायक रीतिकाल के सारे नायिका-भेदी कवियों, सभी रीति-बद्ध, रीति-सिद्ध और रीति-मुक्त कवियों के नायक हैं। वे केशव, देव, बिहारी, पद्माकर, घनानंद आदि के नायकों से मीलों आगे के नायक हैं।

अपने रीति कवि कितने भी श्रृंगारवादी क्यों न हों, उनका भी एक 'नैतिक आदर्श' था, तभी तो बिहारी अपने आश्रयदाता को एक दोहे के जरिये ताना मारते हैं- *नहिं पराग, नहिं मधुर मधु, नहिं बिकास इह काल!/ अली कली ही सों बिंध्यो, आगे कौन हवाल!!* यानी इस कली में न अभी पराग है, न मधु है, न उसका विकास हुआ है, जब तू अभी से इतना बिंधा हुआ है, तो आगे क्या हाल होगा? अर्थात हे राजा, तू जो कर रहा है, वह ठीक नहीं। एपस्टीन के रीतिकाल में कोई बरजने वाला नहीं, बस वीडियो बनाने वाले हैं।

रीति काल में तरह-तरह के नायक हैं, लेकिन निंफोमेनियक यानी कामासक्त एक भी नहीं, पर एपस्टीन काव्य के ज्यादातर हीरो निंफोमेनियक हैं, जो अली कली के ही आखेटक हैं। इस मानी में रीतिकाल इस एपस्टीन काव्य की अपेक्षा अधिक नैतिक व प्रगतिशील दिखता है।

जरा सोचिए, गोरे भारत को कब्जाए, तो साथ में रेनेसां (पुनर्जागरण) लाए और रीतिकाल को पतित काल बताए। आज उन्हीं के सहगोत्री एपस्टीन अपने ग्लोबल रीतिकाव्य में सबको 'डुबकी' लगवाते दिखते हैं और 'ब्लैकमेल' भी करते दिखते हैं। हिंदी वाले किसी को ब्लैकमेल नहीं करते, क्योंकि यहां हर लेखक अपनी छोड़ दूसरे की फाइलें रखता है। हालांकि, ये फाइलें लिखित नहीं होतीं, उनकी स्मृतियों में रहती हैं।

अंग्रेज हरेक चीज का रिकॉर्ड रखते हैं, जबकि अपने यहां सब कुछ दिमाग में रहता है। यकीन न हो, तो कुछ नामचीन साहित्यकारों की शामों में 'चीयर्स' करके देख लीजिए। लेखकों की एक से एक लंतरानियां सुनने को मिलेंगी। लगेगा, हिंदी का हर लेखक या तो 'कैसानोवा' है या 'जैक द रिपर'। कोई इतनी लेखिकाएं बना चुका है, तो कोई इतनी...। इनमें से एक बात भी रिकॉर्ड में नहीं होती। यही 'कल्चर-कल्चर' का फर्क है। इधर दानव भी देवता नजर आते हैं, जबकि उधर वाले मारे जाते हैं! बताइए, हम हिंदी वाले आगे हुए कि अंग्रेज?

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

एक खुशहाल देश की यात्रा

जीवन का आधार मार्क्सवादी दर्शन। अपनी कविता में जनसाधारण की संवेदना को मुखर आवाज देने वाले। प्रगतिशील चेतना के जनकवि के रूप में प्रतिष्ठित। कविता के अलावा निबंध, उपन्यास, यात्रा वृत्तांत सहित कई विधाओं में लेखन। साहित्य अकादेमी और सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से सम्मानित प्रसिद्ध कवि केदारनाथ अग्रवाल के यात्रा-संस्मरण 'मेरी रूस यात्रा : एक संस्मरण' से संपादित अंश...

अद्भुत यात्रा संस्मरण-45

केदारनाथ अग्रवाल

जन्म : 01 अप्रैल, 1911, निधन : 22 जून, 2000

इलस्ट्रेशन : यशवंत नामदेव

11 मई को पालम एयरपोर्ट से लगभग 09.15 बजे, सवेरे मैं अपने अन्य साथियों के साथ एयरोफ्लोट से सोवियत संघ की राजधानी मास्को के लिए उड़ा। यह मेरी पहली हवाई-यात्रा थी। एक हल्की-सी परेशानी और घबराहट महसूस कर रहा था। ऐसा न हो कि कोई दुर्घटना हो जाए और मैं अपनी भारत-भूमि को न लौट सकूं। वर्षों की मनोकामना पूरी हो रही थी। मेरे अंदर उमंग और उत्साह उछाल ले रहा था। उस उछाल में शंका की एक हल्की-सी छाया झलमला जाती थी।

यान उड़ने को हुआ, तो उसका शरीर चालू हुए इंजन की धकधकाहट से हल्का-सा थरथराने लगा। हल्की-सी आवाज यान के अंदर पहुंचने लगी। हम सब यात्रियों को वह आवाज सुनाई देने लगी, लेकिन वह ऐसी नहीं थी कि उसके सुनते रहने से कोई कष्ट हो या कान सुन्न हो जाएं।

यान को सीधे मास्को पहुंचना था। बीच-बीच में, कभी कहीं नीचे होकर जब वह उड़ता था, तब जमीन दिखाई दे जाती थी। कई बार तो ऐसा लगा कि जमीन में हरे-हरे खेत बिछे हैं। मकान तो ऐसे दिखे कि जैसे किसी ने जमीन पर पटिया रख दी है। नदियां, नालियों की लकीरों-सी लगीं। रास्ते कमरबंद की तरह पतले दिखे। मुझे मार्ग में कहीं कोई जानवर या आदमी नीचे चलता हुआ दिखाई नहीं दिया।

यान में हमें यान परिचारिका ने पहले मिनरल वाटर व शर्बत दिया, जिसे हम लोगों ने बड़े चाव और रुचि से पिया। फिर वह दोपहर का भोजन, ट्राली में भरकर लाई और सबको दिया। हम लोगों ने अपने आगे सीट की पीठ में लगी छोटी-छोटी मेजों को अपनी तरफ खोला। उन्हीं पर अपने भोजन की ट्रे रखी। मैं निरामिष भोजी था, इसलिए मैंने मांस नहीं लिया। मुझे खाने में गोल डबल रोटी, ब्राउन ब्रेड के कतरे, मक्खन, पनीर, खीरा और हरी पतली सब्जी का डंठल, नमक व मिर्च के छोटे पैकेट्स, शर्बत का छोटा गिलास, मिनरल वाटर की बोतल और पैकेटबंद छुरी-कांटे मिले।

मैंने मजे से खाया और खाते-खाते बाहर के दृश्य भी देखता रहा। मेरी बगल में हरिदत्त शर्मा बैठे थे। वे भी निरामिष भोजी थे। उन्होंने भी यही किया। उनके बगल में गुलाम रब्बानी ताबां बैठे थे। वे मांसाहारी थे। उन्होंने अपना भोजन स्वाद से किया। हम लोगों के साथ दिल्ली की कु. शांता गांधी, मद्रास के चोखलिंगम, केरल के उपन्यासकार शंकर पिल्लई, हिंदी के लेखक-कवि उपेंद्रनाथ अश्क, कलकत्ता के चिन्मोहन सेहानबीस व कु. चारु सक्सेना थीं। उन लोगों ने भी अपनी-अपनी पसंद का भोजन किया। मैं नहीं जानता कि इन लोगों के मन में क्या हो रहा था।

यान की गति तेज थी। दूरी छोटी होती जा रही थी। मास्को नजदीक आनेवाला था। दोपहर के तीन या साढ़े तीन बजे के लगभग हमारा यान मास्को उतरा। अब एयरपोर्ट पर पांच बजे शाम तक हम लोगों के कागज-पत्तर की जांच-परख होती रही। मैं अब पिछले दृश्य को भूलकर मास्को एयरपोर्ट पर सोवियत संघ के बारे में सोचने लगा। उसकी अक्तूबर-क्रांति याद आई। मुझे महान लेनिन याद आए। उनकी प्राणलेवा संकट की घड़ियां याद आईं, जब वहां के निवासी जार के खिलाफ, स्थान-स्थान पर लड़ाई लड़ रहे थे। पुरानी भू-दासता व सामंतवाद को धूलधूसरित करके समाजवाद की स्थापना के लिए प्राण दे रहे थे।

मैं अंदर से रोमांचित हो गया था। उस दिन वहां पहुंचकर अपने को बड़ा धन्य समझने लगा था। वहां से हम कार द्वारा रूसिया होटल ले जाए गए। यहीं हमें ठहराया गया। मैं उसके कमरा नंबर 2254 में ठहरा। कमरे में टेलीविजन सेट, रेडियो लगा था। वह साफ-सुथरा व सुसज्जित था। साथ में बाथरूम था, जहां ठंडे व गर्म पानी का प्रबंध था। हम लोगों ने चाय-काफी आदि पी। फिर रात का भोजन किया। हम लोग मास्को शहर शाम को देखने गए थे। मास्को और लुमुम्बा विश्वविद्यालय बाहर से देखा। नगर की सड़कों पर इधर-उधर कई जगह घूमे। नगर की सफाई व व्यवस्था देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। सड़कों के इधर-उधर वृक्षावली लगी थी। वृक्षावलियों के बीच से आदमियों के चलने का पथ बना था। बेंचें पड़ी थीं। कहीं कोई गंदगी नहीं थी। जो लोग आते-जाते दिखे, वे संतुष्ट और प्रसन्न दिखे। नगर में, कहीं कोई तनाव या उदासी नहीं दिखी।

मुझे वहां की इमारतें तक सहृदय लगीं। ऐसा लगा जैसे बड़ी शान से कह रही हों कि हम दूसरे असमाजवादी देश के नगरों की ऊंची इमारतें नहीं हैं कि अपने यहां के आदमियों को निगल जाएं। वे यह भी कह रही थीं कि हम अपने नगरवासियों का स्वागत करती हैं। उन्हें सुख-सुविधा व आराम देती हैं। उन्हें अपनी छाया में लेकर उनके दुख-दर्द मेटती हैं। उन्हें रोज कर्मण्य जीवन जीने के लिए अपने से बाहर खेतों, फैक्टरियों, मदरसों, अनुसंधान शालाओं, दुकानों और कामकाज के विभिन्न स्थलों को भेजती हैं कि उन्हें युद्ध की विभीषिका फिर से न देखनी पड़े। वे संसार में रहकर शांति से समानता के आधार पर जीवनयापन कर सकें। मास्को राजनीतिक चेतना का महानगर है। लेनिनग्राद सांस्कृतिक चेतना का कलात्मक महानगर है। दोनों अपने-अपने ढंग के महत्वपूर्ण महानगर हैं।

फिर रात को होटल आया और वहां से ईरीवान जाने के लिए अर्धरात्रि के बाद लेनिनग्राद से हवाई अड्डे पहुंचा। बड़ा सुंदर हवाई अड्डा है। रात को ही हवाई जहाज से उड़े। दूसरे दिन सवेरे छह बजे के लगभग ईरीवान के हवाई अड्डे पर उतरे। वहां से ऐनी होटल गए। वहां फ्लैट नंबर 7 के कमरा नंबर 618 में, मैं और हरिदत्त शर्मा एक साथ ठहरे। इस होटल का नामकरण वहां के प्रसिद्ध साहित्यकार सदरुद्दीन ऐनी के नाम पर हुआ जान पड़ता है।

दोपहर को मार्टिरोस सारियान म्यूजियम देखने गया। यह इसी नाम से प्रसिद्ध चित्रकार की याद में बनाया गया, इन्हीं के चित्रों का संग्रहालय है। चित्रों को देखता रहा। चित्रों में व्यक्त चित्रकार के दिल और दिमाग से निकले रंग-रूप में अंकित वहां के परिवेश और इसमें जीनेवाले आदमियों को अपने इंद्रियबोध से पकड़ता रहा। मैं तन्मय और तल्लीन रहा। कलाकार अदृश्य से जैसे बोलता रहा और मैं उसे सुनता रहा। यह म्यूजियम तिमंजिला है। इसमें सारियान की 150 तस्वीरें और ग्राफिक्स हमेशा देखी जा सकती हैं। पेरिस में सन् '37 में उनकी चित्रों की अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी हुई थी। सन् 1960 में उन्हें सोवियत संघ का जन-कलाकार होने का पुरस्कार मिला।

म्यूजियम से लौटकर होटल आया। लंच लिया। उसके बाद ईरीवान से बस द्वारा हम लोग 70 किलोमीटर का रास्ता तय करके वहां पहुंचे, जहां सेवान झील थी। इसे सागर भी कहा जाता है। इसके एक तरफ रेलवे स्टेशन है। स्टेशन कुछ ऊंचाई पर है। वहां के लोगों ने हम लोगों को अपने स्नेह से भाव-विभोर किया। पानी बरसा, बादलों की फुहार को हम लोगों ने अपने ऊपर लिया। उन्हीं लोगों ने हमें स्वादिष्ट भोजन खिलाया। पेय भी पिलाया। उनके आतिथ्य-सत्कार की याद आज भी ताजा है। झील के दूसरी तरफ ऊंची पहाड़ी है। जल में उठती लहरियां अनंतकाल की सूक्ष्म-से-सूक्ष्म संवेद्य चेतना का नाद-नृत्य कर रही थीं। मैं काल के अंतर्मन में डूबा अपनी धरती का सौंदर्य निहार रहा था। आकाश के आक्रोश में भी वह धीरज नहीं छोड़ती। मैं खड़ा तो तट पर रहा बड़ी देर तक, परंतु खड़े-खड़े ही जल के वल्कल वसन पहनकर नाच-नाच उठता रहा। देर हो रही थी। फिर हम लोग वापस चल दिए। मैंने दिन को विदा दी। उसने हमें विदा दी। हम फिर उसी रास्ते से अपने होटल आए। रात होटल में बिताई। मैं उस झील के सपने देखता रहा। उसकी मछलियों की कहानी सुनता रहा।

दूसरे दिन सुबह होटल से बाहर निकल आस-पास की सड़कों में टहला-घूमा। दुकानें देखता रहा। दुकानों में भरा माल-मत्ता देखता रहा। आते-जाते लोगों की चाल-चलन देखता रहा। जिसे देखता, उसी के मन में बैठने का प्रयास करता। कुछ-न-कुछ गुपचुप जान लेने का उपक्रम करता। मैं भाषा की सामर्थ्य छोड़कर, भाषा से परे पहुंचकर, केवल भाव-भंगिमाओं से हाव-भाव से, नाक-नक्शे से, गति-गमन और शरीर-संतुलन से उस नगर के निवासियों की चित्त-वृत्तियों को जानता-पहचानता रहा और यह निष्कर्ष निकाल सका कि यहां के लोग-बाग तन और मन से खुशहाल हैं। दीन-हीन मनोदशाओं के शिकार नहीं हैं। उन लोगों को देखकर मुझे प्रसन्नता हुई। मैं आश्वस्त हुआ कि मनुष्य यहां भी अपनी गरिमा तो पा रहा है।

(साभार : 'बस्ती खिले गुलाबों की', साहित्य भंडार, इलाहाबाद से संपादित अंश)

पुस्तक अंश

स्वाधीनता आंदोलन और पत्रकारिता का साझा संघर्ष

'समग्र भारतीय पत्रकारिता' भारत में पत्रकारिता की सन् 1780 से सन् 1948 तक की एक सौ अड़सठ वर्ष की यात्रा-कथा है। 1857 की क्रांति की विफलता और फिरंगी हुकूमत के दमन से टूटे भारतीयों के मनोबल को झकझोरने का काम स्वतंत्रता सेनानियों के साथ-साथ पत्रकारिता ने भी किया। पत्रकारिता के इस गौरवशाली इतिहास को रेखांकित करती शोधपरक पुस्तक 'समग्र भारतीय पत्रकारिता' से प्रस्तुत है एक अंश...

समग्र भारतीय पत्रकारिता
(तीन खंड)
लेखक : विजयदत्त श्रीधर
प्रकाशक : वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : ₹5500 (तीन भाग)

भारत में पत्रकारिता और राष्ट्रीय नवजागरण साथ-साथ चले हैं। उनके संकल्प और संघर्ष साझा रहे हैं। राष्ट्रीय नवजागरण के चार आयाम हैं। एक, राजनीतिक स्वाधीनता आंदोलन; दो, समाज सुधार आंदोलन, तीन, स्वदेशी और स्वावलंबन तथा चार, सर्वसाधारण तक शिक्षा की पहुंच। इन आंदोलनों का नेतृत्व जो महापुरुष कर रहे थे, जनजागरण और जनसंवाद के लिए उन्होंने पत्रकारिता को माध्यम बनाया।

राजा राममोहन राय और ईश्वरचंद्र विद्यासागर प्रभृति समाज सुधारकों का महनीय कृतित्व भारत के इतिहास का उजला अध्याय है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक और महात्मा गांधी सहित अन्यान्य महानायकों ने स्वाधीनता आंदोलन के निहितार्थ और फलितार्थ के भाव-बोध से जनमानस को प्रेरित करने के लिए स्वतः समाचारपत्र-पत्रिकाओं का संपादन-प्रकाशन किया अथवा अन्य प्रकाशनों में अपना मंतव्य प्रकट किया।

भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता में यह सर्वाधिक मुखर हुआ है। तभी तो सन् 1878 में भारतीय भाषाओं के पत्र-पत्रिकाओं पर अंकुश लगाने के लिए वायसराय लार्ड लिटन ने वर्नाकुलर प्रेस एक्ट लागू किया था। स्वदेशी और स्वावलंबन अनुष्ठान स्वाधीनता आंदोलन का ही अंग था। विदेशी वस्त्रों की होली और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार फिरंगी हुकूमत की चूलें हिलाने वाला सिद्ध हुआ। भारत में पत्रकारिता का यही कर्मपथ है।

गांधी-युग में भारत की सभी भाषाओं और प्रांतों में पत्र-पत्रिकाएं निकाले जा रहे थे। धारवाड़, कर्नाटक से 1921 में कन्नड़ साप्ताहिक 'कर्मवीर' का प्रकाशन लोकमान्य तिलक की विचारधारा को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से हुआ। नए युग की मांग के अनुरूप महात्मा गांधी की राह का राही बन गया।

इस युग के पत्रों का उल्लेखनीय पक्ष उनकी प्रसार संख्या में बढ़ोतरी का होना भी है। जन आंदोलनों से जुड़ाव के कारण जेल-जब्ती-जुर्माना का सिलसिला भी बढ़ता गया।

1922 में कोलकाता से बांग्ला दैनिक 'आनंद बाजार पत्रिका' के साथ एक नया अनुभव भारतीय पत्रकारिता ने किया। इसे विशेषांकों के प्रकाशन की परिपाटी और विषयों की विविधता के रूप में याद किया जा सकता है।

प्रयागराज से 'चांद' के प्रकाशन ने अद्भुत प्रयोग किए। 'चांद' का फांसी अंक पत्रकारिता के इतिहास का विलक्षण अध्याय बन गया। महीयसी महादेवी वर्मा ने 'चांद' के विदुषी अंक का संपादन किया। लखनऊ से उत्कृष्ट साहित्यिक पत्रिका 'माधुरी' प्रकाशित हुई। मुंबई से लोकरंजन की मराठी पत्रिका 'मौज' निकली।

केरल के कोझिकोड से मलयालम 'मातृभूमि' ने पाठकों को सुरुचिपूर्ण सामग्री का आस्वाद कराया। मुद्रण की आधुनिक यांत्रिकी अपनाई। इसी समय दिल्ली को हिंदी पत्रकारिता का नया गढ़ बनाने का काम 'वीर अर्जुन' ने किया। इंद्र विद्यावाचस्पति को इसका श्रेय जाता है।

सन् 1923 में ही सागर से मध्य प्रदेश का पहला दैनिक पत्र 'प्रकाश' निकला। इसी से पता चला कि तब पत्रों में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष को राष्ट्रपति और प्रदेश के अध्यक्ष को गवर्नर लिखा जाता था। इसी साल कोलकाता से अनूठा साप्ताहिक 'मतवाला' प्रकाशित हुआ। सन् 1924 में दिल्ली से अंग्रेजी का 'हिन्दुस्तान टाइम्स' आरंभ हुआ।

पुस्तकें आई हैं

उसने कहा कि...धत्!!
(हास्य-व्यंग्य गजल-संग्रह)
लेखक : अशोक 'अंजुम'
प्रकाशक : श्वेतवर्णा प्रकाशन, नोएडा
मूल्य : ₹249

'जिस तरफ होगी चमक ये चल पड़ेंगी। हो गई हैं मनचली अब आस्थाएं।' बाजारवाद के इस युग में चमकने वाली चीज की ही पूछ है। ऐसे में आस्था पीछे कैसे रह सकती है। जहां प्रदर्शन और चमत्कार ज्यादा होगा, आस्था भी उसके साथ चलेगी। इस बदलते हुए समय के बदले हुए मिजाज को रेखांकित करती हैं हास्य-व्यंग्य गजल-संग्रह 'उसने कहा कि...धत्!!' की गजलें।

समझावनपुर
(कहानी-संग्रह)
लेखक : डॉ. उदित नारायण पाण्डेय
प्रकाशक : शतरंग प्रकाशन, लखनऊ
मूल्य : ₹400

विश्वभर में सड़क दुर्घटना में मारे गए लोगों की संख्या किसी अन्य प्रकार से मारे गए लोगों की तुलना में अधिक होती है। इसके बावजूद हम सड़क सुरक्षा के विषय को लेकर कभी गंभीर नहीं हुए, विशेषकर अपने देश में। 'समझावनपुर' कहानी-संग्रह की कहानियां इस पर गहन चिंतन करती हुई नजर आती हैं। 'रफ्तार', 'नशा', 'मृगतृष्णा', 'अपराजिता' सहित सभी कहानियों के केंद्र में सड़क दुर्घटना है।

सागर से अंतरिक्ष तक भारत की रक्षा क्रांति
लेखक : योगेश कुमार गोयल
प्रकाशक : मीडिया केयर नेटवर्क, दिल्ली
मूल्य : ₹695

पिछले दो दशकों में भारत ने रक्षा क्षेत्र में खासी तरक्की की है। इस क्षेत्र में तेजी से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ते हुए हमने सैन्य साजो-समान के निर्यात के क्षेत्र में भी कदम रख दिए हैं। हमारी इस मौजूदगी को वैश्विक पटल पर नोटिस किया जा रहा है। भारत की रक्षा क्षेत्र में आई इस क्रांति का लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है पुस्तक 'सागर से अंतरिक्ष तक : भारत की रक्षा क्रांति।'

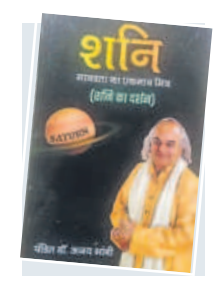

शनि : मानवता का एकमात्र मित्र
(ज्योतिष)
लेखक : पंडित डॉ. अजय भांबी
मुद्रक : सजग प्रकाशन, दिल्ली
मूल्य : ₹500

शनि और उसकी साढ़े साती तथा ढैय्या को लेकर लोगों में एक अजीब-सा भय रहता है। ऐसी धारणा बनी हुई है कि शनि सब कुछ छीन लेता है, लेकिन सिर्फ ऐसा नहीं है। न्यायाधीश शनि मारता नहीं है, सुधरने का अवसर देता है। योगकारक होने पर भरपूर सफलता भी देता है। शनि को लेकर जन सामान्य में अनेक भ्रांतियां हैं। इन्हीं को दूर करने का प्रयास है 'शनि : मानवता का एकमात्र मित्र।'

रोजनामचा

साप्ताहिक भविष्यफल

(22 फरवरी से 28 फरवरी 2026)

पं. राघवेन्द्र शर्मा
ज्योतिषाचार्य

स्कैन करें
भविष्यफल और व्रत-त्योहार जानने के लिए

मेष (21 मार्च-20 अप्रैल)
सप्ताह के प्रारंभ में मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा। माता की सेहत में सुधार होगा, परंतु पिता की सेहत का ध्यान रखें। 24 फरवरी से मन परेशान हो सकता है। खर्चों की अधिकता रहेगी।

वृष (21 अप्रैल-20 मई)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। सप्ताह के प्रारंभ में परिवार के साथ किसी धार्मिक स्थान पर जा सकते हैं। मित्रों का सहयोग मिलेगा। नौकरी में कार्यक्षेत्र में बदलाव हो सकता है।

मिथुन (21 मई-21 जून)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। सेहत का ध्यान रखें। बातचीत में संतुलित रहें। नौकरी में अफसरों का सहयोग मिलेगा। परिश्रम अधिक रहेगा। परिवार का साथ मिलेगा। लाभ के अवसर भी मिलेंगे।

कर्क (22 जून-23 जुलाई)
सप्ताह के प्रारंभ में आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान भी हो सकता है। आत्मसंयत रहें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। 24 फरवरी से मन परेशान हो सकता है।

सिंह (24 जुलाई-22 अगस्त)
सप्ताह के प्रारंभ में मन परेशान तो रहेगा, परंतु आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। सेहत का ध्यान रखें। धैर्यशीलता बनाए रखने का प्रयास करें। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। आय में वृद्धि होगी।

कन्या (23 अगस्त-22 सितंबर)
मन परेशान रहेगा। आत्मविश्वास में कमी रहेगी। आत्मसंयत रहें। क्रोध के अतिरेक से बचें। 24 फरवरी के बाद कारोबार में बदलाव की संभावना बन रही है। परिवार या किसी मित्र का सहयोग मिल सकता है।

तुला (23 सितंबर-23 अक्तूबर)
मन प्रसन्न रहेगा। आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा। कला व संगीत के प्रति रुझान बढ़ सकता है। पठन-पाठन में रुचि बढ़ेगी। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी। रहन-सहन अव्यवस्थित रहेगा।

वृश्चिक (24 अक्तूबर-21 नवंबर)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा। 24 फरवरी के बाद नौकरी में तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। अफसरों का सहयोग मिलेगा। कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी। आय में भी वृद्धि होगी। परिवार का साथ मिलेगा।

धनु (22 नवंबर-21 दिसंबर)
आत्मविश्वास भरपूर रहेगा, परंतु मन में उतार-चढ़ाव हो सकते हैं। नौकरी में बदलाव के योग बन रहे हैं। तरक्की के अवसर मिल सकते हैं। कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी। परिश्रम अधिक रहेगा।

मकर (22 दिसंबर-19 जनवरी)
आत्मविश्वास तो भरपूर रहेगा, परंतु मन परेशान हो सकता है। कारोबार में विस्तार के लिए पिता तथा परिवार के किसी बुजुर्ग से धन मिल सकता है। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य हो सकते हैं।

कुंभ (20 जनवरी-18 फरवरी)
मन परेशान रहेगा। आत्मसंयत रहें। अपनी भावनाओं को वश में रखें। 24 फरवरी से पिता की सेहत में सुधार होगा। नौकरी में अफसरों के सहयोग से तरक्की के अवसर मिल सकते हैं।

मीन (19 फरवरी-20 मार्च)
वाणी में मधुरता रहेगी। आत्मविश्वास भी भरपूर रहेगा। 24 फरवरी के बाद कारोबार में बदलाव हो सकता है। भागदौड़ अधिक रहेगी। पिता का साथ मिलेगा। शैक्षिक कार्यों में सफलता मिलेगी।

वर्ग पहेली : 8248

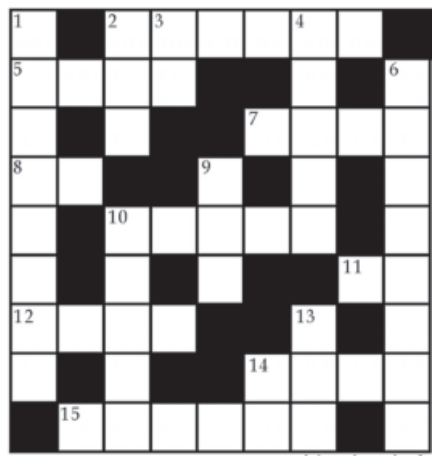

ऊपर से नीचे

1. छीन लेना; हर लेना (5,3)
2. झगड़ा; मनमुटाव (3)
3. अतिकाल; विलंब (2)
4. अस्वीकार करना; निषिद्ध करना; रोकना; वर्जित करना (2,3)
6. जर्जर कर देना; बहुत स्थानों पर छेद कर देना (3,2,3)
9. तह; पपड़ी; सतह; स्तर (3)
10. देना; चुकाना; भुगतान करना; मंचित करना (2,3)
13. दग्ध होना; आग लगना; ईर्ष्या करना (3)
14. स्थान; दरवाजा; द्वार; भाव (2)

बाएं से दाएं

2. परदेश जाना; विदेश को प्रस्थान (3,3)
5. चप्पू; सुकर्ण; नाव खेने की डांड (4)
7. भयानक; भीषण (4)
8. लिप्त; लीन; मग्न; अनुरक्त; आसक्त (2)
10. गुण आना; छाप पड़ना; प्रभाव होना (3,2)
11. अंगुली की गांठ; अंगुली का भाग; ईख/बांस की गांठों के बीच का भाग (2)
12. हिंडोले पर पेंग मारना; झूमते-इतराते हुए चलना (4)
14. वह जमीन जिस पर चलने से पैर धंस जाएं (4)
15. खराबी करना; तबाही करना; नष्ट करना; हानि करना (3,3)

हरीश चन्द्र सन्सी, विविधा विधा, दिल्ली
(उत्तर अगले अंक में)

वर्ग पहेली 8247 का उत्तर

1स	र	2क	जा	ना	■	3नि	4वि	दा
म	■	ल	■	■	5मौ	■	भा	■
झ	■	ई	■	6डं	का	ब	ज	ना
7दा	ग	दा	8र	■	चू	■	न	■
र	■	9र	ज	नी	क	10रे	■	11त
■	12आ	■	ता	■	13ना	ट	की	य
1गि	र	ह	क	ट	■	ल	■	क
■	शि	■	र	■	■	गा	■	र
15स	त	ह	■	16सा	म	ना	हो	ना

सुडोकू : 8230

* आसान

	4			8			2	
3			5		2			4
1			4		9			6
		8		2		1		
		5	8		1	9		
		1		5		4		
8			6		5			7
6			2		4			8
	9			3			5	

खेलने का तरीका : दिमागी खेल और नंबरों की पहेली है यह। तर्क से इसे हल कर सकते हैं। ऊपर नौ-नौ खानों के नौ खाने दिए गए हैं। आपको 1 से 9 की संख्याएं इस तरह लिखनी हैं कि खड़ी और पड़ी लाइनों के हरेक खाने में 1 से 9 की सभी संख्याएं आएं। साथ ही 3x3 के हरेक बक्से में भी 1 से 9 तक की संख्याएं हों। पहेली का हल हम कल देंगे।

हल : सुडोकू नं. 8229

6	5	1	4	3	2	8	9	7
7	4	8	9	5	6	1	3	2
9	2	3	1	8	7	5	6	4
3	6	2	8	9	1	4	7	5
8	9	7	2	4	5	3	1	6
4	1	5	7	6	3	9	2	8
5	3	9	6	2	4	7	8	1
2	7	4	3	1	8	6	5	9
1	8	6	5	7	9	2	4	3

व्रत और त्योहार | पंचांग | पं. ऋभुकांत गोस्वामी

22 फरवरी, रविवार, **शक संवत्** : 03 फाल्गुन (सौर) 1947, **पंजाब पंचांग** : 11 फाल्गुन मास प्रविष्टे 2082, **इस्लाम** : 04 रमजान, 1447, **विक्रमी संवत्** : फाल्गुन शुक्ल पंचमी तिथि प्रातः 11.10 मिनट तक। भरणी नक्षत्र, शुक्ल योग दोपहर 01.09 मिनट तक पश्चात ब्रह्म योग, बालव करण। चंद्रमा मेष राशि में (दिन-रात)।

सूर्य उत्तरायण। सूर्य दक्षिण गोल। शिशिर ऋतु। सायं 04.30 मिनट से सायं 06 बजे तक राहुकालम्। याज्ञवल्क्य जयंती। गंडमूल सायं 05.55 मिनट तक।

वास्तु सलाह | आचार्य मुकुल रस्तोगी

मैंने इस घर में आकर प्रॉपर्टी तो खूब बनाई है, लेकिन पैसा रुकता नहीं है। बच्चे भी बिगड़ रहे हैं।
-दौलतराम कनौजिया, गोरखपुर

- आपका एक टॉयलेट नीले रंग का है। उसमें दर्पण भी दक्षिण की दीवार पर लगा है। टॉयलेट वैसे भी राहु का स्थान होता है, ऊपर से नीला रंग बिल्कुल भी ठीक नहीं है।
- दर्पण दक्षिण दिशा में बिल्कुल भी नहीं होने चाहिए। ये नकारात्मक प्रभाव देते हैं। इसको हटाकर उत्तर या पूर्व दिशा में करें। बच्चों के कमरे से लाल रंग के पर्दे, छत का लाल रंग सब हटा दें। ये बच्चों में उग्रता बहुत बढ़ा देते हैं। किसी भी समय किसी बल्ब के नीचे खड़े होकर अपनी परछाई थोड़ी देर देखें। दिन में एक बार उत्तर दिशा में खड़े होकर फोन कॉल जरूर करें।

किताब ही एकमात्र ऐसी वस्तु है, जिसमें खोकर आप अपने नाजुक विचार को बिना तोड़े परख सकते हैं। -एडवर्ड पी मॉर्गन

मैं हमेशा ऐसी किताब पसंद करूंगी, जिसे अपने हाथ से पकड़ सकूं, जिसमें कागज व गोंद की महक हो। क्या आपने कभी किसी नई किताब के पृष्ठों की खुशबू को महसूस किया है? मेरे लिए ऐसा करना किसी नई किताब के साथ अपने रिश्ते की शुरुआत करने जैसा है।

किताबें बोलती भी हैं

जब आप टॉल्स्टॉय, खलील जिब्रान या मोपांसा जैसे कालजयी लेखकों को पढ़ते हैं, तो आप दरअसल उनके विचारों से खुद को भर रहे होते हैं। उन पलों में आप महान लेखकों से जुड़ रहे होते हैं, जिसका अन्यथा अवसर आपको शायद ही कभी मिल पाता।

मार्गरिट रेनकल
द न्यूयॉर्क टाइम्स

मेरे पति हेवुड, जो एक स्कूल में पढ़ाते थे, इस गर्मी में सेवानिवृत्त हो गए। अब वह घर पर रहते हैं और कभी-कभी बच्चों को पढ़ाते हैं। मैं घर के काम करती हूं और ज्यादातर एक शांत घर में अकेली ही पाई जाती हूं। मुझे इस बात की खुशी है कि अब मेरे पति हर वक्त मेरे पास होते हैं, लेकिन एक समस्या है। अपनी 37 वर्ष की नौकरी में उन्होंने जितनी भी किताबें इकट्ठा कीं, जो अब तक स्कूल में रखी रहती थीं, मेरे पति वे सब की सब घर पर ले आए हैं। हमारे माता-पिता की मौत के बाद विरासत में मिली चीजों से पहले ही घर भरा पड़ा है।

अब सवाल है कि इन किताबों को मैं रखूंगी कहां। ऐसा नहीं कि हमारे घर में किताबों की अलमारियों की कोई कमी है। लेकिन हर अलमारी पहले से ही इतनी भरी हुई है कि अब उनमें जगह बना पाना तो तकरीबन असंभव ही है। दरअसल, हमारा घर पढ़ने वालों के लिए स्वर्ग है। मेरा एक बेटा और उसकी एक दोस्त कुछ ही दिन पहले तीन बड़े कार्टन भरकर किताबें ले गए। मेरे बच्चों की स्कूल के दिनों की किताबें अब तक बक्सों में भरी इंतजार कर रही हैं कि उनके बारे में हम कोई फैसला ले सकें, जो अब तक हो नहीं सका है।

मेरे पति के अध्यापन कॅरिअर के तकरीबन आधे समय से अधिक से लोग कहते आए हैं कि प्रिंटेड किताबों का जमाना जा चुका है, या निकट भविष्य में जाने वाला है। लेकिन, हमारे घर में इन किताबों का जमाना न खत्म हुआ है, और न ही आने वाले समय में खत्म होने के कोई आसार हैं। हम किताबों में जीते हैं। किताबों से बात करते हैं और मानो वे भी हमसे दिल खोलकर बातें करती हैं।

हम किताबों के यादगार पन्नों को थोड़ा मोड़कर रखते हैं, कुछ हिस्सों को पेंसिल से रेखांकित भी करते हैं। मेरे पति जिन किताबों को पढ़ चुके हैं, जब उन्हें मैं उठाती हूं, तो उनमें पति के बनाए चिह्न भी दिखते हैं। मैं किताबों के साथ उन चिह्नों को भी पढ़ती हूं, ताकि यह अनुमान लगा सकूं कि अमुक पंक्तियां पढ़ते वक्त उनके दिमाग में आखिर चल क्या रहा था।

लोग मुझसे पूछते हैं कि मुझे प्रिंटेड या ई-बुक्स में कौन-सी अधिक पसंद हैं। आपको शायद यह बात अजीब लगे, लेकिन मैं हर तरह की पढ़ाई के पक्ष में हूं, फिर चाहे वह ई-बुक हो, ऑडियोबुक्स हों, ब्रेल लिपि में लिखी किताबें हों, ग्राफिक आधारित किताबें हों या कोई और। मैं दरअसल किताबें पढ़ने की हिमायती हूं, चाहे वे कैसी भी हों।

हमारा घर भी एक सार्वजनिक पुस्तकालय की तरह है। मेरे पति और हमारे तीनों बच्चे यहां आते हैं और सैकड़ों ऑडियो और ई-बुक्स ले जाते हैं, जिन्हें वे अलग-अलग इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस पर पढ़ते हैं।

ई-बुक्स को संभालना प्रिंटेड किताबों की तुलना में आसान होता है। उनके साथ प्रिंट किताबों वाली यह दिक्कत नहीं आती कि कोई ले गया और फिर वापस लौटाया नहीं। ई-बुक्स खोने का भी डर नहीं रहता। एयरपोर्ट पर मैंने जाने कितनी किताबें खोई हैं। एक बार तो मैंने रिचर्ड पॉवर्स के पुलित्जर पुरस्कार विजेता उपन्यास द *ओवरस्टोरी* की दो प्रतियां एक ही यात्रा के दौरान खो दी थीं।

मेरा मानना है जीवन में कहानियां और कविताएं हर ओर से आनी चाहिए। ये चाहे आपकी उंगलियों और आंखों (प्रिंट या ई-बुक्स) के या चाहे आपके कानों के माध्यम से (ऑडियो बुक) आएं, इनके रस में कभी कोई कमी नहीं होती। जब आप कोई किताब पढ़ते हैं, तो आपका दिल और दिमाग लेखक के दिल-दिमाग से जुड़ता है। क्या यह कमाल की बात नहीं है? जब आप टॉल्स्टॉय, खलील जिब्रान या मोपांसा जैसे कालजयी लेखकों को पढ़ते हैं, तो आप दरअसल उनके विचारों से खुद को भर रहे होते हैं। उन पलों में आप महान लेखकों से जुड़ रहे होते हैं, जिसका अन्यथा अवसर आपको शायद ही कभी मिल पाता।

व्यक्तिगत तौर पर बात करें, तो मैं हमेशा ऐसी किताब पसंद करूंगी, जिसे मैं अपने हाथ से पकड़ सकूं, जिसमें कागज व गोंद की महक हो। क्या आपने कभी किसी नई किताब के पृष्ठों की खुशबू को महसूस किया है? मेरे लिए ऐसा करना किसी नई किताब के साथ अपने रिश्ते की शुरुआत करने जैसा है। हालांकि, जब मैं अकेली कहीं यात्रा कर रही होती हूं, तो अमूमन ऑडियो बुक भी सुनती हूं। लेकिन घर पर आते ही, मैं प्रिंट किताबों की दुनिया में लौट आती हूं। डिजिटल प्रारूप के बजाय कागज पर पढ़ना मुझे शांत और स्थिर बनाता है। इससे एक आत्मीय एहसास होता है।

किताबें आपकी जिंदगी में समय-यात्रा की तरह का एहसास देती हैं। मैं अपनी किताबों की एक अलमारी के पास से गुजरते हुए आपको ठीक-ठीक बता सकती हूं कि कोई खास किताब अब भी वहां क्यों है, जगह कम होने पर भी उसे कभी हटाया क्यों नहीं गया, भले ही अब मुझे दोबारा उसे पढ़ने का कोई मौका न मिले। जब मैं कोई किताब दोबारा पढ़ती हूं, तो अपने बीते हुए दिनों में लौट जाती हूं। बचपन में अंडरलाइन की गई पंक्तियों को जब मैं आज पढ़ती हूं, तो पुराने दिनों की याद आ जाती है। कई बार पुरानी पंक्तियां आज नए अर्थों का एहसास कराती दिखती हैं। मैं कह सकती हूं कि मैंने आज तक जो खाया है, उससे कहीं ज्यादा मैं वह हूं, जो मैंने पढ़ा है।

अपनी किताबों की अलमारियों को देखकर, मुझे अपने पति की जिंदगी के विभिन्न दौर याद आते हैं। एक युवक, जो हमारे हनीमून पर *ए ब्रीफ हिस्ट्री ऑफ टाइम* पढ़ता था। एक युवा शिक्षक, जिसने *ऑक्सफोर्ड बुक ऑफ चिल्ड्रेंस वर्स इन अमेरिका* की एक प्रति के भीतर मेरे द्वारा छिपाए गए नोट को पढ़कर जाना था कि वह पिता बनने वाला है। एक शानदार बेटा, जिसने अपने बूढ़े पिता को खुश करने के लिए ढेरों कविताएं याद कर ली थीं।

अब, जब हेवुड अपने स्कूल से किताबों का ढेर घर ले ही आए हैं, तो हमें शायद कुछ और अलमारियां बनवानी पड़ें। अब हमारी जो उम्र है, उसे देखते हुए शायद ये नई अलमारियां हमारी अंतिम अलमारियां हों। लेकिन यह तय है कि अब इसके बाद इस घर में किताबों के लिए जगह नहीं बचेगी।

ये किताबें मेरे भी उन सभी रूपों की याद दिलाती हैं, जो मैं कभी हुआ करती थी। वह कविता-संग्रह मैंने अपने पति को तब दिया था, जब हमारा सबसे बड़ा बेटा इस दुनिया में आने वाला था, ताकि वह जोर-जोर से कविताएं पढ़कर मुझे सुना सकें। यह वही किताब थी, जिसकी कविताएं मेरे पिता बचपन में मुझे पढ़कर सुनाते थे। ऐसी दर्जनों किताबें हैं, जो मुझे समय में पीछे ले जाती हैं।

अब से बहुत समय बाद किसी दिन कोई बच्ची कविताओं की कोई किताब खोलेगी और उसमें दर्ज वे नोट पढ़ेगी, जो मैंने उसके दादाजी के लिए लिखे थे। शायद वह भी इन्हें सहेज कर रखे।

©The New York Times 2026

जानना जरूरी है
संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

बाणासुर की तपस्या से प्रसन्न होकर भोलेनाथ ने उसे वर मांगने को कहा। उसने मांगा कि महादेव स्वयं उसके नगर-द्वार की रक्षा करें, फिर श्रीकृष्ण व भोलेनाथ के बीच युद्ध छिड़ गया, पर किसी की विजय नहीं हो पाई।

असुर के लिए शिव का कृष्ण से युद्ध

एक समय की बात है। बाणासुर की कन्या ऊषा ने स्वप्न में एक अत्यंत सुंदर व तेजस्वी पुरुष को देखा। उसे स्वप्न में ही उस युवक से प्रेम हो गया। जब ऊषा की नींद खुली और उसने अपने सामने युवक को नहीं पाया, तो वह व्याकुल हो उठी। वह विरह से व्याकुल होकर विलाप करने लगी। ऊषा ने जिस युवक को स्वप्न में देखा था, वह प्रद्युम्न का पुत्र था। उसका नाम अनिरुद्ध था।

धूप आने दो

ऊषा की एक सखी थी, जिसका नाम चित्रलेखा था। वह मायाविद्या में निपुण व अत्यंत बुद्धिमती थी। उसने ऊषा को व्याकुल देखा, तो कारण पूछा। ऊषा ने अपनी सखी के सामने स्वप्न वाली घटना कह सुनाई और बताया कि उसे युवक से प्रेम हो गया है। चित्रलेखा ने ऊषा की सहायता करने का निश्चय किया। उसने अपनी मायाशक्ति से देवताओं, दानवों और श्रेष्ठ पुरुषों के बहुत-से चित्र बनाकर ऊषा को दिखाए। ऊषा ने जैसे ही अनिरुद्ध का चित्र देखा, तो अपनी सखी को बताया कि यही युवक उसके स्वप्न में आया था।

● चित्रलेखा अनिरुद्ध को पहचानती थी। वह मायाविद्या के बल पर उसी रात द्वारका पहुंची। उस समय अनिरुद्ध अपने अंत:पुर में शयन कर रहा था। चित्रलेखा ने उसे निद्रा की अवस्था में ही उठाया और मायाशक्ति से बाणासुर के राजमहल में ले आई तथा ऊषा की शय्या पर सुला दिया।

अनिरुद्ध की नींद खुली, तो उसने अपने को एक रमणीय पर्वत प्रदेश में पाया। पास ही सुंदर आभूषणों से अलंकृत, कोमल केशों वाली, दिव्य सौंदर्य से युक्त ऊषा बैठी हुई थी। ऊषा की सहमति से अनिरुद्ध उसके साथ रहने लग गया। कुछ दिन बाद दोनों ने गुप्त रूप से विवाह भी कर लिया।

एक दिन ऊषा की कुछ दासियों ने उषा और अनिरुद्ध को साथ रहते हुए देख लिया। उन्होंने यह समाचार बाणासुर को दिया। यह सुनते ही बाणासुर क्रोध से भर उठा। उसने अपने सैनिकों को तुरंत उसे पकड़कर दरबार में लाने का आदेश दिया। सैनिक अनिरुद्ध को पकड़ने गए। सैनिकों को अपनी ओर बढ़ता देखकर अनिरुद्ध ने प्रासाद का एक विशाल स्तंभ उखाड़ लिया और उसी से प्रहार करके सभी सैनिकों को मारकर भगा दिया। भयभीत सैनिकों ने बाणासुर को यह बात बताई। अनिरुद्ध के अद्भुत पराक्रम की बात सुनकर बाणासुर को बड़ा कौतूहल हुआ। उसी समय देवर्षि नारद वहां पहुंचे और उन्होंने बाणासुर को बताया कि अनिरुद्ध कोई साधारण मनुष्य नहीं, बल्कि श्रीकृष्ण का पौत्र है। यह सुनकर बाणासुर स्वयं अनिरुद्ध से युद्ध करने पहुंच गया। आखिर, बाणासुर ने अनिरुद्ध को नागपाश से बांधकर कैद कर लिया।

दैवीय संकेत से यह समाचार श्रीकृष्ण तक पहुंचा। उन्होंने बाणासुर पर आक्रमण कर दिया। तब बाणासुर ने भगवान शंकर की घोर तपस्या की। प्रसन्न होकर भोलेनाथ ने उससे वर मांगने को कहा। उसने मांगा कि भगवान शंकर स्वयं उसके नगर-द्वार की रक्षा करें। महादेव ने तथास्तु कह दिया और बाणासुर के नगर-द्वार पर खड़े हो गए। श्रीकृष्ण ने देखा कि महादेव के नेतृत्व में शत्रु सेना युद्ध के लिए तत्पर खड़ी है। वह स्वयं बलराम तथा प्रद्युम्न के साथ युद्ध में उतर पड़े। दोनों सेनाओं के बीच घमासान युद्ध छिड़ गया। फिर वह क्षण आया, जब श्रीकृष्ण और शंकर आमने-सामने आ गए। दोनों के बीच युद्ध हुआ, पर दोनों में से किसी की विजय नहीं हो पाई। तब बाणासुर स्वयं युद्ध में आया। श्रीकृष्ण ने सुदर्शन चक्र से उसकी भुजाएं काट दीं। बाणासुर की यह दशा देखकर महादेव ने श्रीकृष्ण से प्रार्थना की कि वह उनके भक्त को क्षमा कर दें। श्रीकृष्ण ने बाणासुर को जीवनदान दे दिया।

बाणासुर ने श्रीकृष्ण और बलराम की स्तुति की, अनिरुद्ध को बंधन से मुक्त करके अपनी पुत्री ऊषा का विधिवत विवाह उसके साथ कर दिया। इसके बाद श्रीकृष्ण, बलराम और अनिरुद्ध अपने रथ से द्वारका लौट आए। द्वारका में अनिरुद्ध और ऊषा आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे।

अविनीतस्य या विद्या सा चिरं नैव तिष्ठति।
मर्कटस्य गले बद्धा मणीनां मालिका यथा॥

अशिष्ट (अविनीत) व्यक्ति का ज्ञान वास्तव में अधिक समय तक स्थिर नहीं रहता-जैसे बंदर के गले में बांधी गई रत्नों की माला।

सुभाषितार्णव
167 (संकलन-बोएट्लिंग्क)

प्रस्तुति : **शास्त्री कोसलेंद्रदास**

शोक मनाना भी आना चाहिए

डारनेल लैमॉट वॉकर

अक्सर शोक को काले रंगों व उदासी के रूप में चित्रित किया जाता है, पर यह सिर्फ गमगीन होने का नाम नहीं, बल्कि यह हमारी यादों को संजोए रखने का एक सलीका है।

लॉस एंजेलिस के एक हुक्का लाउंज में मार्कस मेरे पास आकर बैठा और पूछा कि क्या आप वही हैं, जो लोगों की मरने में मदद करते हैं? दरअसल, मैं पेशे से डेथ साइकोलॉजिस्ट हूं। यह एक ऐसा प्रशिक्षित और संवेदनशील व्यक्ति होता है, जो किसी इन्सान को जीवन के अंतिम पड़ाव पर भावनात्मक और मानवीय सहारा देता है। मैंने शांत स्वर में कहा, 'हां, पर मैं किसी की जान नहीं लेता, बल्कि अंतिम पलों में उसका साथ देता हूं।'

मार्कस की आंखों में एक अनकहा बोझ था, इसलिए हम शोर से दूर एक शांत बूथ में जा बैठे। उसने अपने पिता कीथ की कहानी सुनाई, जो दक्षिण कैरोलिना की मिट्टी से जुड़े, रिश्तों को सबसे ऊपर रखने वाले जिंदादिल इन्सान थे। वह हर व्यक्ति को नाम से जानते, हालचाल पूछते, पड़ोसियों के टमाटरों की तारीफ करते और यह सुनिश्चित करते कि उनके इलाके में कोई भूखा न सोए। कीथ के निधन के बाद मार्कस को अपराधबोध था कि वह उतना दुख क्यों नहीं महसूस कर पा रहा, जितना कि वह समझता है कि उसे होना चाहिए।

मैं यह सवाल अक्सर सुनता हूं। पर सच यह है कि शोक की कोई तय पटकथा नहीं होती। अपनी बात समझाने के लिए मैंने दो अनुभव उसके साथ साझा किए। पहला अलीशा का, जिसने अपनी प्रिय आंटी के निधन पर आंसू नहीं बहाए। आंटी की मौत के बाद अलीशा ने खुद को बागवानी के काम में डुबो दिया, जबकि उसे बागवानी का 'ब' भी नहीं मालूम था। अलीशा से मैंने सीखा कि शोक हमेशा आंसुओं में नहीं बहता, वह कभी-कभी बागवानी का रूप भी ले लेता है। दूसरी, कार्लटन की कहानी, जिसे अंतिम संस्कार से जुड़ा कोई संदेश मिलता या सोशल मीडिया पर 'शोक संवेदना' का संदेश दिखता, वह दौड़ने लगता। कार्लटन से मैंने सीखा कि शोक का एक चेहरा दौड़ना भी हो सकता है। तब मार्कस को एहसास हुआ कि वह अभी तक जो कुछ भी करता आया, वे सब भी शोक के ही रूप थे।

अक्सर शोक को गहरे काले रंगों और भारी-भरकम उदासी के रूप में चित्रित किया जाता है, पर यह सिर्फ गमगीन होने का नाम नहीं है, बल्कि यादों को संजोए रखने का एक सलीका है। यह शांत पलों में भी छिपा होता है। यह उस गाने को कार में तेज आवाज में गाते हुए महसूस होता है, जो आपको आपके प्रिय की याद दिलाता है। सच तो यह है कि शोक, प्रेम का ही एक हिस्सा है, और प्रेम सिर्फ उदासी का नाम नहीं है।

©The New York Times 2026

अध्ययन कक्ष

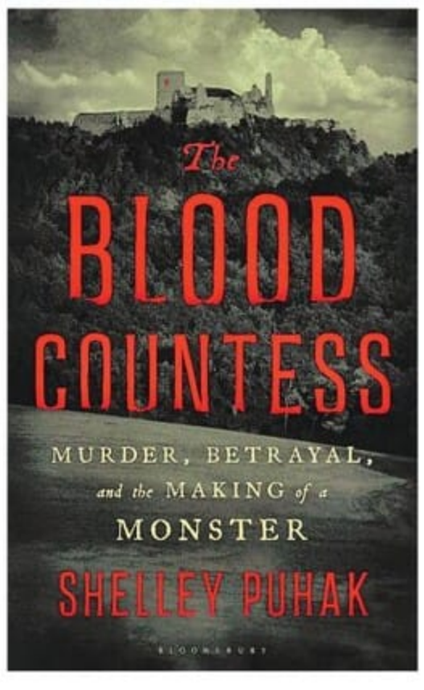

द ब्लड काउंटेस :
मर्डर, विट्रायल, एंड द मेकिंग ऑफ ए मॉन्स्टर

लेखिका : शेली पुहक

प्रकाशक : ब्लूम्सबरी प्रकाशन
मूल्य : 3,007.70 रुपये (हार्डकवर)

खूंखार हत्यारिन की असल कथा

इसी महीने प्रकाशित यह अंतरराष्ट्रीय बेस्टसेलर गिनीज बुक में सबसे खूंखार हत्यारिन के तौर पर दर्ज हंगरी की 'कातिल रानी' के रहस्यपूर्ण जीवन की पड़ताल करता है, जो हरदम जवां रहने के लिए युवतियों के खून से नहाती थी। पर क्या यह कहानी सच थी?

रुह कंपा देने वाली यह कहानी है हंगरी की एक कुलीन महिला की, जिसके बारे में कहा जाता है कि वह अपनी खूबसूरती बनाए रखने के लिए जवान लड़कियों के खून से नहाती थी। यह कहानी इतनी प्रामाणिक मानी गई कि 1960 के दशक में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स ने इस महिला को 610 हत्याओं के लिए जिम्मेदार मानते हुए 'दुनिया की सबसे खूंखार हत्यारिन' का तमगा तक दे डाला। लेकिन क्या यह कहानी सच थी?

शेली पुहक अपनी किताब द *ब्लड काउंटेस* (कातिल रानी) में दुनिया की सबसे खूंखार हत्यारिन मानी जाने वाली इस रानी की असल कथा जानने की कोशिश करती हैं। कुलीन महिला का नाम था एलिजाबेथ बाथरी और यह किताब उनके विषय में खुलासा करती है कि यह पूरी कहानी उनके दुश्मनों द्वारा गढ़ा गया एक प्रपंच था, जो तत्कालीन पितृसत्तात्मक समाज में उनकी कामयाबी से ईर्ष्या करते थे। एलिजाबेथ बाथरी के पास विशाल संपत्ति, राजनीतिक संबंध और क्षेत्र में काफी शक्ति व शोहरत थी। कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट के बीच संघर्ष के दौर में उनके पड़ोसी कुलीन और धार्मिक नेता उनकी ताकत से डरते थे।

किताब बताती है कि एलिजाबेथ के खिलाफ गवाही देने वाले अक्सर वही लोग थे, जो उसकी संपत्ति हड़पना चाहते थे या उससे लिया गया बकाया कर्ज देने से बचना चाहते थे। पुहक 16वीं और 17वीं सदी के हंगरी और यूरोप के जटिल राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक परिदृश्य को जीवंत ढंग से चित्रित करती हैं। लेखिका एलिजाबेथ की जिंदगी के विभिन्न पहलुओं को भी उजागर करती हैं और यह भी बताती हैं कि पति की मृत्यु के बाद उन्होंने कैसे अपनी संपत्ति का प्रबंधन किया और हर्बल उपचार के क्षेत्र में दखल के अपने शौक को कैसे उन्होंने अपने जीवन में स्थान दिया। किताब यह खुलासा भी करती है कि तत्कालीन समाज में स्त्री और विज्ञान विरोध इस कदर व्याप्त था कि उसने एलिजाबेथ जैसी नेकदिल महिला को भी राक्षस बना दिया। किताब का सबसे मजबूत पक्ष इस पर किया गया शोध है। पुरानी सभी धारणाओं पर सवाल उठाते हुए पुहक बताती हैं कि 610 हत्याओं का आंकड़ा बाद में जोड़ा गया, उन पर चले मूल मुकदमे में तो इसका जिक्र तक नहीं था। किताब खुलासा करती है कि एलिजाबेथ के खिलाफ एक भी सुबूत न होने पर भी उन्हें उनके ही महल में चुनवा दिया गया और यह अफवाह फैला दी गई कि उनका साया किले की खिड़कियों से झांकता है। हिस्टोरिकल टु क्राइम शैली में लिखी गई इस किताब में रहस्य, विश्वासघात व न्याय की खोज जैसे तत्व मिलते हैं, जबकि अंत में सच्चाई राजनीतिक साजिश और लैंगिक पूर्वाग्रह में छिपी मिलती है। हालांकि, कभी-कभी किताब राजनीतिक संदर्भों में इतनी गहराई में चली जाती है कि मुख्य विषय पीछे छूटता दिखता है।

लेखिका एलिजाबेथ को बेगुनाह साबित करने में कितनी कामयाब रहती हैं, यह तो किताब पढ़ने से ही मालूम होगा, पर यह यूरोपीय इतिहास, अपराध-कथा और नारीवाद प्रेमियों के लिए अवश्य ही पठनीय कृति है।

अभियान

जिस प्रकार पानी के बिना अच्छे खाद-मिट्टी बेकार हैं, उसी प्रकार मधुर वाणी के बिना अच्छे भाव भी व्यर्थ हो जाते हैं।
- स्वामी विवेकानंद

amarujala.com
अमर उजाला

Hindi@mithelesh
■ मिथिलेश बारिया

गोल चबूतरा

चावल जूठा थाली में छोड़ देते हो,
रिक्शे वाले से फिर दो रुपये के लिए क्यों झगड़ते हो...

कई शेर छुपे हैं उसकी आंखों में,
मैं ढूंढ कर कागजों को थमा देता हूं...

मैं बयां करता रहा अपना हाल शेरों में,
वो समझता रहा लफ्जों की जादूगरी इसे...

डेटोना का चैंपियन

1922 में आज के ही दिन प्रख्यात अमेरिकी रेसिंग कार चालक मार्शल टीग का जन्म हुआ था, जिन्हें 'नेशनल एसोसिएशन फॉर स्टॉक कार ऑटो रेसिंग' यानी नैस्कर के शुरुआती इतिहास का सबसे प्रभावशाली व्यक्तित्व माना जाता है। उनका जन्म फ्लोरिडा के डेटोना बीच में हुआ था। उन्हें उनकी अद्वितीय प्रतिभा के कारण 'किंग ऑफ द बीच' के नाम से जाना जाता था। टीग को विशेष रूप से उनकी कार 'फैबुलस हडसन हॉर्नेट' के लिए याद किया जाता है। उनके कौशल का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि उन्होंने 23 नैस्कर रेसों में से 7 में जीत हासिल की थी। कार रेस की संस्कृति में उनका प्रभाव आज भी जीवित है। पिक्सर की प्रसिद्ध एनिमेटेड फिल्म 'कार्स' का मुख्य पात्र डॉक हडसन मार्शल टीग और उनकी ऐतिहासिक कार से ही प्रेरित है। टीग ने नैस्कर के अलावा 'अमेरिकन ऑटोमोबाइल एसोसिएशन' और 'यूनाइटेड स्टेट्स ऑटो क्लब' के लिए भी कमाल की सफलता पाई। 11 फरवरी, 1959 को डेटोना इंटरनेशनल स्पीडवे पर एक विश्व गति रिकॉर्ड बनाने के प्रयास के दौरान एक भीषण दुर्घटना में उनका निधन हो गया। वे इस ट्रैक पर जान गंवाने वाले पहले चालक थे।

झरोखा
22 फरवरी

■ आलोक झा, गुरुग्राम

हंसी की जबरदस्त खुराक

1982 में गुलजार के निर्देशन में बनी फिल्म 'अंगूर' के एक दृश्य में अभिनेता देवेन वर्मा, संजीव कुमार और अभिनेत्री मौसमी चटर्जी। यह फिल्म शेक्सपियर के नाटक 'द कॉमेडी ऑफ एरर्स' पर आधारित थी।

■ मनीष सक्सेना, सिरमौर

छायानट

पान की दुकान पर मिला फिल्म का ऑफर

प्राण हिंदी सिनेमा के मशहूर खलनायक थे, जिन्होंने अपनी दमदार अदाकारी से फिल्मों को यादगार बना दिया। परदे पर डरावने किरदार निभाने वाले प्राण असल जिंदगी में बेहद नेक और दरियादिल इन्सान थे। वे फोटोग्राफर बनना चाहते थे। इसके लिए दिल्ली की 'ए दास एंड कंपनी' में अप्रेंटिस भी रहे, लेकिन 1940 में लेखक मोहम्मद वली ने उन्हें पंजाबी फिल्म 'यमला जट' में मौका दिया, जिससे उनका अभिनय सफर शुरू हुआ।

विभाजन से पहले वे लाहौर में 22 फिल्मों में निगेटिव भूमिकाएं कर चुके थे। मुंबई आने के बाद 'जिद्दी' से पहचान मिली। 'आजाद', 'देवदास', 'राम और श्याम' और 'मधुमती' जैसी फिल्मों में उनके किरदार चर्चित रहे। जंजीर के लिए उन्होंने अमिताभ बच्चन का नाम सुझाया और शेर खान बनकर यादगार छाप छोड़ी। करीब 350 फिल्मों में काम करने वाले प्राण को तीन फिल्मफेयर पुरस्कार, पद्म भूषण और दादा साहेब फाल्के सम्मान मिला।

■ रमेश मिश्र, जम्मू

आज देश के हर हिस्से में नाबालिग बच्चे बेखौफ होकर तेज रफ्तार से गाड़ियां दौड़ाते हैं। नाबालिगों द्वारा वाहन चलाना कानूनन अपराध की श्रेणी में आता है, इसके बावजूद समाज बच्चों को इस अपराध की ओर धकेल रहा है।

अनदेखी पड़ रही है भारी

रफ्तार लील रही जिंदगियां

भारत में नाबालिग बच्चों द्वारा वाहन चलाने से होने वाली दुर्घटनाओं का ग्राफ लगातार बढ़ता जा रहा है। इन हादसों में लगभग 50 प्रतिशत मौतें स्वयं नाबालिगों की होती हैं, जो शासन-प्रशासन और अभिभावकों के लिए गंभीर चिंता का विषय है। यह समस्या किसी एक राज्य तक सीमित नहीं, बल्कि पूरे देश में फैल चुकी है। राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली ही नहीं, बल्कि महानगरों, नगरों, कस्बों, गांवों और गलियों तक इसके दुष्परिणाम दिखाई दे रहे हैं।

चिट्ठी 1

आज देश के अधिकांश हिस्सों में नाबालिग बच्चे महंगी बाइक और बड़ी कारें तेज रफ्तार में चलाते नजर आते हैं। कानून के अनुसार यह अपराध है, फिर भी समाज स्वयं बच्चों को इस ओर धकेल रहा है। जिम्मेदार अधिकारी भी कई बार कठोर कार्रवाई से बचते हैं, जिससे दुर्घटनाओं की संख्या बढ़ती जा रही है।

मोटर वाहन अधिनियम की धारा 199 ए के तहत नाबालिग द्वारा वाहन चलाना दंडनीय अपराध है, जिसमें वाहन मालिक या अभिभावक को तीन वर्ष तक की सजा का प्रावधान है, परंतु वास्तव में कितने अभिभावकों को सजा मिली, यह प्रश्न बना हुआ है। यदि 25 प्रतिशत मामलों में भी सजा हुई हो, तो बड़ी बात होगी। लगातार बढ़ती इस समस्या के समाधान हेतु केंद्र, राज्य और जिला प्रशासन को सख्त कदम उठाने होंगे। दोषी अभिभावकों पर कठोर आर्थिक दंड, वेतन वृद्धि रोकना या सरकारी लाभ अस्थायी रूप से बंद करना जैसे उपाय आवश्यक हैं। कानून का भय, सामाजिक जागरूकता और अभिभावकों की जिम्मेदारी ही इस संकट का स्थायी समाधान दे सकती है।

■ अरविंद रावल, झाबुआ

एआई का उपयोग सावधानी से

जो भी देश एआई या अन्य किसी भी तकनीक का दुरुपयोग करते हैं, उसके लिए सभी देशों को एकजुट होना चाहिए, क्योंकि तकनीक का दुरुपयोग किसी एक देश पर नहीं, बल्कि सभी देशों पर भारी पड़ सकता है। एआई की हमारे देश के लिए सबसे बड़ी चुनौती तो गरीबी है, इसकी पढ़ाई महंगी होने के कारण देश का बहुत बड़ा वर्ग इसकी पढ़ाई वैसे ही नहीं कर पाएगा, जैसे कंप्यूटर की नई तकनीक की पढ़ाई नहीं कर पाया है, जबकि कंप्यूटर को आए बहुत लंबा समय बीत गया है।

चिट्ठी 2

आज भी बहुत से गरीब लोग अपने बच्चों को कंप्यूटर के अच्छे कोर्स गरीबी कारण नहीं करवा पाते हैं, इसी तरह हमारे देश में बहुत से कुटीर, लघु और मध्यम वर्ग के उद्योग धंधे ऐसे हैं, जो अपने यहां एआई तकनीक का इस्तेमाल नहीं कर पाएंगे, क्योंकि इस तकनीक की लागत बहुत ज्यादा है और इन उद्योगों की कमाई इतनी नहीं कि वे इसका खर्चा उठा पाएं। भारत में कृषि से इतर एआई तकनीक हमारे युवाओं के लिए क्रांतिकारी साबित हो सकती है। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के एक अध्ययन के अनुसार, एआई के कारण अकेले अमेरिका में अगले दो दशकों में डेढ़ लाख रोजगार खत्म हो जाएंगे। कहीं इस तकनीक की आड़ में विदेशी कंपनियां हमारे देश के छोटे और कुटीर उद्योगों को बर्बाद न कर दे, सरकार को इन चीजों का भी ख्याल रखना चाहिए।

■ राजेश कुमार चौहान, जालंधर

लोगों की सेहत से खिलवाड़ पर सख्ती जरूरी

देश में होली या पर्व-त्योहार आने से पहले ही मिष्ठान्न दुकानों एवं खोआ मंडी में जगह-जगह खाद्य विभाग की टीमें छापेमारी की कार्रवाई आरंभ कर देती है। प्रश्न उठता है कि आखिर क्या इस विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों को त्योहारों पर ही छापेमारी की सुध आती है? आजकल देश के बाजारों में मिलावटी सामान इतने बिक रहे हैं कि यह पता करना मुश्किल हो जाता है कि कौन सी मिठाई एवं होली पर बिकने वाली कौन-सी गुझिया शुद्ध है और कौन सा अशुद्ध। लोग इन मिलावटी वस्तुओं को खाकर तरह-तरह की बीमारियों से ग्रसित हो, इलाज में अपनी मेहनत से कमाई पूंजी खर्च करते हैं। देश के खाद्य विभाग एवं औषधि प्रशासन के जिम्मेदार अधिकारी, एवं प्रशासन को केवल पर्व-त्योहार के मौके पर ही मिलावटी वस्तुएं बेचने वालों पर कार्यवाही की याद आती है। देश में धड़ल्ले से बिकने वाले मिलावटी मावे पर अनवरत छापेमारी की कार्रवाई क्यों नहीं चलाई जाती है? सरकार को चाहिए कि जहां पर भी मिलावटी मिठाई एवं मावा बिकता या मिलता है, उस इलाके के जिम्मेदार खाद्य विभाग पर कठोर कार्रवाई कर ऐसे अधिकारियों-कर्मचारियों को भी दंडित करने का कानून बनाएं,ताकि आम नागरिकों के जीवन से खिलवाड़ बंद हो सके।

चिट्ठी 3

■ राजेश कुमार चौहान, जालंधर

■ शैलेंद्र कुमार चतुर्वेदी, फिरोजाबाद

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

दिल्ली से विजय किशोर तिवारी, मेरठ से अहमद खान, बरेली से सीमा गुप्ता, अंबाला से अभिनव गुप्त, अमरोहा से अमृतलाल मारू 'रवि', मोहाली से अभिलाषा गुप्ता, आगरा से जय वर्मा स्वर्णकार, भदोही से स्वतंत्र रावत, गौतम बुद्ध नगर से रत्नेश सिंह, रुड़की से ललित शंकर, उज्जैन से हेमा हरि उपाध्याय, बड़वाह से योगेश जोशी, सूरत से कांतिलाल मांडोत।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

कुछ अलग

टोंक में रंगमंच का राजकुमार

टोंक में आधुनिक हिंदी रंगमंच की कोशिशों के पीछे युवा रंगकर्मी राजकुमार रजक हैं, जिन्होंने अपने अभिनय से सबको मुग्ध कर दिया।

टोंक को राजस्थान का लखनऊ कहा गया है। नवाबों के दौर की स्मृतियां आज भी टोंक में खूब दिखती हैं। दिवंगत फिल्म अभिनेता इरफान खान साक्षात्कारों में अक्सर टोंक में अपनी नानी के घर को याद किया करते थे। यहां उनका बचपन बीता था और सुकून की तलाश में वह यहां आया करते थे। राजस्थान के इस पुराने इलाके में जहां आज भी रेलवे स्टेशन नहीं है, हिंदी रंगमंच जिस आधुनिक रंगबोध, प्रयोगों और विश्व के श्रेष्ठ साहित्य के सान्निध्य में परवान चढ़ रहा है, वह अचरज में डालता है।

टोंक में इन कोशिशों के पीछे प्रतिभाशाली युवा रंगकर्मी राजकुमार रजक हैं, एक गरीब परिवार और जातिभेद के संकटों के बीच जिन्हें प्रयागराज में रंगमंच से जुड़ने का अवसर मिला। अजीत बहादुर एवं रंगोली अग्रवाल से संस्कार लेते हुए उन्होंने इसे कोलकाता में विकसित किया। एक परियोजना में टोंक आकर यहीं बसने का फैसला तो किया ही, आधुनिक हिंदी रंगमंच से अपरिचित इस नगर में अपनी गतिविधियों से सबको मुग्ध कर दिया। राजकुमार रजक ने एक ओर जहां भारंगम और जयरंगम जैसे बड़े महोत्सवों में 'हवालात', 'टेढ़ा दर्पण', 'सूरज का सातवां घोड़ा', 'दी डेथ ऑफ गैलीलियो' और 'निरंतर एकलव्य' के मंचन से राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा पाई है, वहीं निजी प्रयासों से टोंक में एक्सपेरिमेंटल स्टूडियो का निर्माण कर नगर को रंगमंच की आदत भी डाली है। इसी स्टूडियो की दर्शक दीर्घा 7-9 फरवरी के नाट्य समारोह में छोटी पड़ती दिखी, जिसमें उनके नए नाटक 'भुखवासी भांड' का पहला प्रदर्शन हुआ, जो काफ्का और प्रफुल्ल राय की कहानियों पर आधारित था। नाटक बदलते दौर में पारंपरिक कलाओं पर संकट और कलाकारों के संघर्ष को दर्शाता है। हरमेंद्र सरताज के निर्देशन में 'नदी प्यासी थी' और 'कांट पे, वांट पे' तथा चितरंजन नामा के निर्देशन में 'डाकघर' ने भी अपनी प्रस्तुतियों में प्रभावित किया।

■ आलोक पराड़कर

बुद्धिजीवियों के लिए 10 सबक

वरिष्ठ विद्वान आंद्रे बेते और माधव गाडगिल के विचारों से मैं बहुत प्रभावित रहा हूं। उन पर चिंतन करते हुए मुझे उनके उन 10 विशेषताओं की याद आती है, जिन्होंने उनकी बौद्धिक दृष्टि और शोध प्रक्रिया को एक सूत्र में बांधा।

धार्मिक या आध्यात्मिक शिक्षा की तलाश में रहने वालों को गुरु की आवश्यकता पड़ सकती है- ऐसा गुरु, जो उन्हें उस मार्ग पर चलने की शिक्षा दे, जिसे वे सही मानते हैं। शिष्य से उम्मीद की जाती है कि वह गुरु की बात का आंख मूंदकर विश्वास करे, लेकिन जो लोग विद्वान बनना चाहते हैं, उन्हें किसी गुरु की तलाश करने की आवश्यकता नहीं है। आलोचनात्मक चिंतन और मौलिक शोध करने के लिए मन का स्वतंत्र होना जरूरी है। सिद्धांतों और पद्धतियों का अनुसरण करना है या नहीं, यह व्यक्ति को खुद तय करना चाहिए, न कि किसी और को।

दुर्भाग्य से भारत में आध्यात्मिक साधना और बौद्धिक खोज के इस महत्वपूर्ण फर्क को नजरअंदाज कर दिया जाता है। हमारे देश की अकादमिक संस्कृति गहराई तक सामंती प्रवृत्तियों से प्रभावित है, जहां उम्र और पद में वरिष्ठ लोग खुद को गुरु की भूमिका में देखने लगते हैं और बदले में अनुसरण तथा श्रद्धा की उम्मीद करते हैं। यह बौद्धिक सामंतवाद विज्ञान और मानविकी दोनों जगहों पर दिखाई पड़ता है। मार्क्सवाद सामाजिक पदानुक्रम का विरोध करता है, पर व्यवहार में कोलकाता के मार्क्सवादी प्रोफेसर अपने जूनियर से पदानुक्रम ढोने की उतनी ही उम्मीद करते हैं, जितने वाराणसी के रूढ़िवादी हिंदू विचारधारा वाले प्रोफेसर।

मेरा मानना है कि युवा शोधकर्ताओं को किसी एक गुरु की तलाश नहीं करनी चाहिए। उन्हें वरिष्ठ विद्वानों के साथ संवाद करना चाहिए। विद्वानों के अनुभव से शोधकर्ताओं को दिशा, संकेत और आलोचनात्मक प्रतिक्रिया मिल सकती है, जिससे शोध बेहतर होगा। वे मार्गदर्शक, सलाहकार और कुछ समय के लिए मेंटर हो सकते हैं, लेकिन गुरु नहीं। वरिष्ठों की बात ध्यान से सुनते हुए भी अंतिम निर्णय स्वयं शोधकर्ता को ही लेना होता है कि वह किस विषय पर और किस पद्धति से काम करेगा।

मेरे ये विचार उन दो वरिष्ठ विद्वानों के हाल में हुए निधन से प्रेरित हैं, जिन्होंने मेरी युवावस्था में मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। ये दो व्यक्ति हैं- पर्यावरणविद माधव गाडगिल (जिनका 7 जनवरी को पुणे में 83 वर्ष की आयु में निधन हुआ) और समाजशास्त्री आंद्रे बेते। बेते का 3 फरवरी को दिल्ली में 91 वर्ष की आयु में निधन हुआ। मैं गाडगिल से पहली बार 1982 में मिला, जब मेरी उम्र 24 वर्ष थी और वह चालीस के थे। बेते से मेरी पहली मुलाकात 1988 में हुई, जब मैं 30 वर्ष का हुआ ही था और वह 50 के मध्य दशक में थे। हमारी आयु में काफी अंतर होने के बावजूद दोनों से मेरी दोस्ती जल्दी हो गई। हमारी अधिकांश बातचीत समाज, राजनीति, संस्कृति, इतिहास, पर्यावरण, भारत और विश्व से जुड़े प्रश्नों पर केंद्रित रहती थी। पारिवारिक बातें कभी-कभार किया करते थे।

पहली नजर में माधव गाडगिल और आंद्रे बेते के बीच बहुत अंतर दिखाई देता है। गाडगिल वैज्ञानिक थे, जबकि बेते नहीं। गाडगिल का पालन-पोषण पुणे में हुआ और उन्होंने अंग्रेजी सीखने से बहुत पहले मराठी बोलना शुरू कर दिया था। बेते के पिता फ्रांसीसी थे, लेकिन वह अपनी मां के बंगाली परिवार से अधिक जुड़ाव महसूस करते थे। उनका बचपन चंदन नगर में बीता और शिक्षा कोलकाता में हुई। स्कूल और कॉलेज में वह अंग्रेजी बोलते थे, जबकि मित्रों के साथ सड़क पर बंगाली। आंद्रे बेते ने अपनी

रामचंद्र गुहा
जाने-माने इतिहासकार

डॉक्टरेट की उपाधि भारत से प्राप्त की, जबकि गाडगिल ने अमेरिका से। गाडगिल का अधिकांश पेशेवर जीवन बंगलूरू में बीता, जबकि बेते का दिल्ली में। गाडगिल और बेते कभी आपस में नहीं मिले। मेरे माध्यम से वे एक-दूसरे को जानते थे। उनके संपूर्ण जीवन और काम पर नजर डालें तो कई उल्लेखनीय समानताएं दिखाई देती हैं। आगे मैं उन 10 विशेषताओं का उल्लेख करूंगा, जिन्होंने उनकी बौद्धिक दृष्टि और शोध प्रक्रिया को एक सूत्र में बांधा।

पहली, दोनों की विद्वत्ता बहुमुखी थी। बेते समाजशास्त्री होते हुए इतिहासकारों, अर्थशास्त्रियों और विधि विशेषज्ञों से संवाद करते थे। गाडगिल पर्यावरण वैज्ञानिक होते हुए विज्ञान और मानविकी की सीमाओं को पार कर मानवशास्त्रियों और इतिहासकारों के साथ मिलकर शोध करते थे।

दूसरी, दोनों ने अपने कार्य में सिद्धांत और अनुभव को अनुसंधान के साथ रखा। रोचक तथ्य यह है कि आंद्रे बेते ने शुरुआत नृवंशविज्ञानी के रूप में की, पर बाद में तुलनात्मक समाजशास्त्र की ओर मुड़े, वहीं गाडगिल ने पारिस्थितिकी के अधिक सैद्धांतिक अध्ययन से शुरुआत की और बाद में प्रकृति के साथ मनुष्य के विविध संबंधों पर क्षेत्रीय अध्ययन किए।

तीसरी, दोनों में शिक्षण और संस्थान निर्माण के प्रति गहरी प्रतिबद्धता थी। दोनों ने एक ही संस्थान में 30 से अधिक वर्ष बिताए- आंद्रे बेते का विशेष लगाव दिल्ली विश्वविद्यालय (विशेषकर समाजशास्त्र विभाग) से था, जबकि गाडगिल का भारतीय विज्ञान संस्थान (विशेषकर पारिस्थितिकी विज्ञान केंद्र) से।

चौथी, दोनों अकादमिक जगत से बाहर व्यापक समाज से भी सक्रिय रूप से जुड़े रहे। उन्होंने ऐसी अकादमिक पुस्तकें और शोध पत्र लिखे, जिन्होंने बौद्धिक प्रवृत्तियों को दिशा दी, साथ ही अखबारों में भी नियमित रूप से लेख लिखकर अपने शोध के निष्कर्ष आम नागरिकों तक पहुंचाए।

पांचवीं, दोनों की बौद्धिक दृष्टि अपने मूल प्रांत से बाहर जाकर काम करने के कारण और व्यापक हुई, क्योंकि आंद्रे बेते ने कोलकाता के बजाय दिल्ली में काम किया, जबकि गाडगिल ने पुणे के बजाय बंगलूरू में। इसलिए उनकी दृष्टि उन भारतीय बुद्धिजीवियों से अधिक विशाल थी, जो जीवन भर अपने ही राज्य तक सीमित रहते हैं। आंद्रे बेते का सबसे गहन क्षेत्रीय अध्ययन तमिलनाडु में हुआ, जबकि गाडगिल का कर्नाटक और केरल में, अर्थात अपने-अपने मूल राज्यों से बाहर। फिर भी दोनों ने अपनी जन्मभूमि से संबंध कभी नहीं तोड़ा।

छठी, दोनों भारत के बाहर की दुनिया के प्रति भी जिज्ञासु थे। वे विभिन्न देशों के विद्वानों से संवाद करने और उनके कार्य को गंभीरता से पढ़ने के इच्छुक रहते थे।

सातवीं, मानसिक रूप से संकीर्णता से पूरी तरह मुक्त होने के बावजूद दोनों ने भारत में रहकर ही काम करना और बौद्धिक जीवन में योगदान देना चुना। गाडगिल ने हॉर्वर्ड यूनिवर्सिटी की नौकरी छोड़कर स्वदेश लौटने का निर्णय लिया, जबकि आंद्रे बेते ने यूनिवर्सिटी ऑफ कैंब्रिज और यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में प्रोफेसर पद के प्रस्ताव अस्वीकार कर दिल्ली में ही बने रहना उचित समझा।

आठवीं, दोनों देशभक्त थे, पर उन्होंने कभी भी अपने भारत प्रेम का प्रदर्शन नहीं किया।

नौवीं, उनकी देशभक्ति अंधभक्ति नहीं थी। वे आयरिश विद्वान बेनेडिक्ट एंडरसन के इस कथन से सहमत होते कि 'कोई भी व्यक्ति सच्चा राष्ट्रवादी नहीं हो सकता, यदि वह राज्य या सरकार द्वारा किए गए अपराधों, यहां तक कि अपने ही नागरिकों के विरुद्ध अपराधों पर लज्जा महसूस करने में असमर्थ हो।'

दसवीं, अनेक समकालीन प्रोफेसरों के विपरीत न तो आंद्रे बेते और न ही गाडगिल गुरु बनना चाहते थे। वे समझते थे कि जहां वरिष्ठ विद्वान अपने अनुभव और ज्ञान का लाभ दे सकते हैं, वहीं युवा विद्वानों के उत्साह और बौद्धिक जोखिम उठाने की प्रवृत्ति से वे स्वयं भी सीख सकते हैं। यह उनके उदार दृष्टिकोण का हिस्सा था- राजनीतिक और बौद्धिक दोनों ही स्तरों पर वे कठोर नहीं थे, किसी एक विचारधारा से बंधे नहीं थे, बल्कि भारत और विश्व को समझने के लिए खुले मन से प्रयासरत थे।

देशभक्ति, कूटनीति और क्रिकेट का कारोबार

अजय कुमार बियानी

खुला आकाश

देश का शीर्ष नेतृत्व राष्ट्रीय सुरक्षा पर भले ही दृढ़ रुख दिखाता हो, लेकिन खेल कूटनीति का अपना व्याकरण है। हाथ न मिलाने की तस्वीर असहमति दर्शा सकती है, जबकि मैच खेलना संवाद के कुछ रास्ते खुले होने का संकेत देता है।

दक्षिण एशिया में क्रिकेट केवल खेल नहीं, भावना और राजनीति का विस्तार है। जब पाकिस्तान भारत आने से इनकार करता है और भारत श्रीलंका में खेलने का संकेत देता है, तो यह महज कार्यक्रम बदलाव नहीं, बल्कि उस जटिल रिश्ते का प्रतीक है, जिसमें खेल, कूटनीति, राष्ट्रवाद और बाजार साथ चलते हैं। 14 फरवरी की पुलवामा बरसी याद दिलाती है कि भारत-पाक संबंध सिर्फ मैदान तक सीमित नहीं। ऐसे में अगले दिन मैच की संभावना नैतिक संतुलन का सवाल खड़ा करती है-एक ओर शहीदों की स्मृति, दूसरी ओर खेल का उत्साह।

राजनीतिक नेतृत्व राष्ट्रीय सुरक्षा पर दृढ़ रुख दिखाते हैं, जो जनभावनाओं को स्वर देता है, लेकिन खेल कूटनीति का अपना व्याकरण है। हाथ न मिलाने की तस्वीर असहमति दर्शा सकती है, जबकि मैच खेलना संवाद के कुछ रास्ते खुले होने का संकेत देता है। यही विरोधाभास बहस को जन्म देता है।

व्यावसायिक आयाम भी कम महत्वपूर्ण नहीं। भारत-पाक मुकाबला विश्व क्रिकेट का सबसे बड़ा प्रसारण आकर्षण माना जाता है। करोड़ों दर्शक, विज्ञापन राजस्व और डिजिटल व्यूअरशिप इससे जुड़ी होती है। स्ट्रीमिंग मंच डिज्नी प्लस हॉटस्टार और उद्योग जगत के नाम जैसे मुकेश अंबानी इस इकोसिस्टम का हिस्सा हैं। आधुनिक खेल सिर्फ खेल न होकर बहु-अरब डॉलर उद्योग है, जिसमें बोर्ड, खिलाड़ी, प्रसारक और प्रायोजक सभी की हिस्सेदारी होती है। इसलिए किसी मैच को केवल भावनात्मक या केवल कारोबारी नजरिए से देखना अधूरा होगा।

असल प्रश्न 'हो या न हो' से अधिक 'कैसे' का है। यदि मैच हो, तो क्या शहीदों को श्रद्धांजलि दी जाएगी? क्या स्पष्ट होगा कि खेल संवाद का माध्यम है, स्मृति का विकल्प नहीं? परिपक्व लोकतंत्र वही है, जो भावनाओं और नीतियों में संतुलन साध सके।

खेल को राजनीति से पूरी तरह अलग करना संभव नहीं, पर उसे पूरी तरह उपकरण बना देना भी खतरनाक है। यदि मैच श्रीलंका में होता है, तो वह केवल रन-विकेट का मुकाबला नहीं, बल्कि क्षेत्रीय कूटनीति, राष्ट्रीय भावना और वैश्विक खेल उद्योग का सम्मिलित दृश्य होगा। संतुलन ही इस समय की असली परीक्षा है-मैदान पर भी और उसके बाहर भी। अंततः यह तय करेगा कि हम भावनाओं को विवेक से कैसे दिशा देते हैं और संवाद की संभावनाओं को कितना जीवित रखते हैं।

चिंतन

एसआईआरः कोई भी योग्य छूटे नहीं और अयोग्य शामिल न हो

पश्चिम बंगाल में विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर पैदा हुआ टकराव अब केवल प्रशासनिक मतभेद नहीं रहा, यह लोकतंत्र की विश्वसनीयता की सीधी परीक्षा बन चुका है। ऐसे समय में सुप्रीम कोर्ट का अभूतपूर्व हस्तक्षेप बताता है कि हालात साधारण नहीं हैं। अदालत ने स्पष्ट कहा है कि मतदाता सूची से कोई योग्य नागरिक छूटे नहीं और अयोग्य उसमें शामिल न हो। यह निर्देश भर नहीं, लोकतांत्रिक मर्यादा की अंतिम रेखा है। मतदाता सूची में शुचिता और पारदर्शिता के लिए शीर्ष अदालत ने एसआईआर की निगरानी के लिए सेवारत और पूर्व न्यायिक अधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी है। शीर्ष अदालत ने राज्य की निर्वाचित सरकार और चुनाव आयोग के बीच भरोसे की कमी पर जो टिप्पणी की, वह सबसे ज्यादा चिंताजनक है। जब चुनाव कराने वाली संवैधानिक संस्था और राज्य सरकार आमने-सामने खड़ी दिखें, तो नुकसान किसी एक पक्ष का नहीं, पूरे लोकतंत्र का होता है। अदालत को सेवारत और पूर्व न्यायिक अधिकारियों की निगरानी में प्रक्रिया चलाने का आदेश देना पड़ा। यह असाधारण व्यवस्था है, जो बताती है कि संस्थागत संवाद की डोर कितनी कमजोर हो चुकी है। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और उनकी पीठ ने साफ किया कि न्यायिक अधिकारियों के आदेश अदालत के आदेश माने जाएंगे और कलेक्टर-एसपी उन्हें लागू कराएंगे। सवाल यह है कि क्या चुनावी प्रक्रिया इतनी अविश्वसनीय हो गई है कि उसे पटरी पर लाने के लिए न्यायपालिका को प्रत्यक्ष भूमिका निभानी पड़े? यदि हां, तो यह लोकतंत्र के लिए खतरे की घंटी है। अदालत ने 28 फरवरी को अंतिम मतदाता सूची प्रकाशित करने की अनुमति दी है और जरूरत पड़ने पर सप्लीमेंट्री सूची की छूट भी दी। यह संतुलन का प्रयास है कि समयबद्धता भी रहे और त्रुटि-सुधार का रास्ता भी खुला रहे, लेकिन असली सवाल यह है कि दावे और आपत्तियां तार्किक निष्कर्ष तक क्यों नहीं पहुंच पा रहीं? क्यों आरोप-प्रत्यारोप का दौर प्रक्रिया पर हावी है? मुख्य न्यायाधीश की टिप्पणी कि हमें राज्य सरकार से सहयोग की उम्मीद थी, सिर्फ नाराजगी नहीं, निराशा का संकेत है। अदालत ने यह भी कहा कि वह सूक्ष्म पर्यवेक्षक नहीं है। यानी रोजमर्रा के प्रशासनिक काम में दखल देना न्यायपालिका का काम नहीं। पर जब जवाब देने में देरी हो, तथ्यों की स्पष्टता न हो और गतिरोध बना रहे, तब अदालत को आगे आना पड़ता है। न्यायिक अधिकारियों की तैनाती अस्थायी समाधान हो सकती है, स्थायी इलाज नहीं। इससे लंबित अदालती मामलों पर असर पड़ेगा, अंतरिम राहत के मामलों को अन्य अदालतों में स्थानांतरित करना पड़ेगा। मतदाता सूची की शुचिता सुनिश्चित करने के लिए केवल न्यायिक आदेश काफी नहीं। बूथ स्तर पर सत्यापन की पारदर्शी प्रक्रिया, दावों-आपत्तियों की खुली सुनवाई, आदेशों का सार्वजनिक प्रकाशन और तकनीक का प्रभावी उपयोग, ये सब मिलकर ही भरोसा बहाल कर सकते हैं। राजनीतिक इच्छाशक्ति के बिना कोई भी व्यवस्था अधूरी है। यह भी याद रखना होगा कि अदालत का हस्तक्षेप किसी एक पक्ष की जीत या हार नहीं है। यह लोकतंत्र को पटरी पर रखने की कोशिश है। शीर्ष कोर्ट ने जो कहा, वह मूलभूत सिद्धांत है। अब समय की मांग है कि सियासत से ऊपर उठकर पारदर्शिता, जवाबदेही और सहयोग को प्राथमिकता दी जाए। लोकतंत्र की असली ताकत मतदाता की आस्था है; उसे टूटने नहीं देना ही हर संवैधानिक संस्था की सर्वोच्च जिम्मेदारी है।

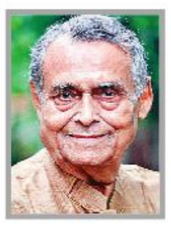

जिरहनामा
कनक तिवारी

तिरंगे की संवैधानियत

आज़ादी के तीन महीने पहले संविधान सभा में नेहरू ने तिरंगे झंडे को अपनाने का प्रस्ताव पेश करते उसकी ऐतिहासिक और भविष्यमूलक व्याख्या की थी। कहा इस झंडे के तीनों रंग किसी संप्रदाय के प्रतीक नहीं हैं। यह भारत की जनता का झंडा है। झंडे के बीच से चरखे को विशेष कारण से हटाकर अशोक चक्र को अपनाया गया है क्योंकि अशोक का काल वास्तव में भारतीय इतिहास का अंतर्राष्ट्रीय काल था। मुख्य बात नेहरू ने कही कि आज दो झंडे हैं। एक रेशम का और दूसरा खादी का।

भारत उत्सवधर्मी देश है। कैलेन्डर के हर दिन कोई राष्ट्रीय, सांप्रदायिक, क्षेत्रीय, जातीय या सांस्कृतिक उत्सव कहीं न कहीं मनाया जाता है। बड़ी संख्या में प्रतिभागिता होती है। फूड पैकेट बांटकर, नकद रुपए देकर, सरकारी बसों से मनुष्यों को ढोने के बावजूद नेताओं की सभाओं में भीड़ नहीं जुटती। जब पुरखों के तीज त्यौहार नहीं होते तो लोकतंत्र की बानगी राष्ट्रीय चखचख बाजार में बदगुमानी के भी इंडेक्स पर उछलने लगती है। अमृतकाल में सरकारी कर हुक्म हुआ कि देश में तिरंगा फहराया जाए। अफवाहें तैरती रहीं कि खादी या हाथ कताई के रेशमी कपड़े का भी नहीं पोलिएस्टर का लाखों मीटर लंबाई का कपड़ा झंडों के लिए उपयोग किया जाएगा। शायद वह सबसे बड़े भारतीय कॉरपोरेटी या पड़ोसी मुल्क की हिकमत के जरिए बनाया जाकर उन्हें ही मालामाल कर दिया जा सकता। राष्ट्रीय ध्वज तो आजादी के महान आंदोलन का सबसे बड़ा प्रतीक, प्रवक्ता और प्रस्तोता है। किसी भी मुल्क में सेनाओं की लड़ाई में राजा या मुख्य सेनापति के हाथ में अपनी आजादी और अहमियत का झंडा होता था। सेना मर, कट, खप जाए लेकिन अगर सेनानायक के हाथों झंडा सुरक्षित है, तो जीतती लगती ताकत भी फतह हासिल नहीं कर पाती थी। 62 वर्षों की सत्याग्रही मशक्कत के बाद अंगरेज भारत से रुखसत हुआ। तब लाल किले की प्राचीर पर जवाहरलाल के हाथों तिरंगा झंडा फहराया गया। उसे लेकर चखचख बाजार में विमर्श की शक्ल में अनावश्यक विवाद भी पैदा किए जाते रहे।

आज़ादी के तीन महीने पहले संविधान सभा में नेहरू ने तिरंगे झंडे को अपनाने का प्रस्ताव पेश करते उसकी ऐतिहासिक और भविष्यमूलक व्याख्या की थी। कहा इस झंडे के तीनों रंग किसी संप्रदाय के प्रतीक नहीं हैं। यह भारत की जनता का झंडा है। झंडे के बीच से चरखे को विशेष कारण से हटाकर अशोक चक्र को अपनाया गया है क्योंकि अशोक का काल वास्तव में भारतीय इतिहास का अंतर्राष्ट्रीय काल था। मुख्य बात नेहरू ने कही कि आज दो झंडे हैं। एक रेशम का और दूसरा खादी का।

संविधान सभा ने नहीं सोचा होगा कि रेशम और गांधी की खादी को बेदखल कर बहुराष्ट्रीय कंपनी में बना पोलिएस्टर कपड़ा अपनी छाती पर तिरंगा झंडा छापकर लाखों घरों में फहराया जाने कहा जा सकता है। सेठ गोविन्ददास ने बताया कि 1922 में ही जबलपुर के सार्वजनिक टाउन हाल में जो तिरंगा फहराया गया। उसका रंग लाल, सफेद और हरा था, लेकिन वह किसी भी धर्म का नहीं था। अशोक चक्र के समर्थन में कहा कि महान लेखक एच. जी. वेल्स ने संसार के इतिहास पर लिखी पुस्तक में कहा है कि राजाओं के खूनी जीवन में अशोक अकेला ऐसा है जिसने पूरी दुनिया को प्रेम के सूत्र में बांधने की कोशिश की। सेठ गोविन्ददास ने बताया 1857 के जनयुद्ध में हरे रंग का झंडा न केवल मुसलमानों का और न केवल हिन्दुओं का बल्कि हर स्वतंत्रता संग्राम सैनिक का वह रंग रहा है। चौधरी खलीकुज्जमा ने तो संस्कृत के कथन 'सर्वेत्यागा राजधर्मेषु दृष्टा' अर्थात त्याग करने के सभी रूप राजधर्म के तहत होते हैं। कहा होगा लेकिन हमारे नेता निष्पक्ष,

कर्तव्यपारायण और त्याग करने की भावना से आज़ादी के बाद ही लबरेज नहीं रह सके। फिर तो मतलबपरस्ती का ज्वार उछल उछलकर तिरंगे के आदेशों को मजाक में उड़ा देने का हौसला पाले रहा।

दार्शनिक राधाकृष्णन ने कहा कि झंडे में हरा रंग भारत की वनस्पतियों से संबंधित है जिन पर हर मनुष्य का जीवन निर्भर है। मौलवी सैयद मोहम्मद सादुल्ला ने कहा केसरिया रंग केवल हिन्दुओं में नहीं मुसलमानों के इतिहास में भी है। साधु, सन्यासी, पीर और पंडित इसी रंग के सहारे धार्मिकता का प्रचार कर पाते रहे हैं। उन्होंने कांग्रेस को सफेद टोपी मुकर्रर करने की बधाई दी।

यह भी बाद में दिलचस्प हुआ कि लाल, हरी, नारंगी बल्कि काली टोपियों ने भी काफी राजनीतिक धमाचौकड़ी मचाई। सच यही है कि इन सभी रंगों ने स्वतंत्रता की उमंग की नुमाइन्दगी की है। मौलवी साहब ने बताया तेरहवीं शताब्दी के भी पहले अरब के बड़े पैगंबर के समय से मुसलमानों के झंडे का तयशुदा रंग रहा है। उन्होंने तल्खी में कह दिया कि चरखे को हटाया जाना जायज लगता है क्योंकि गांधी के आदर्शों और प्रेरणा को अहिंसा खत्म कर हिंसावादी बनकर नेताओं ने चरका तो दिया है। अकिंचन जातियों के प्रतिनिधि खांडेकर ने कड़यिल बात कही कि भगवा झंडे तले लाखों दलितों ने कुर्बानियां की हैं। सिद्धनाथ महार का कोरेगांव में लौह स्तंभ उसी जमाने की याद दिलाता है। गोविन्द मालवीय ने अपनी तकरीर में हरा रंग मुसलमानों, सफेद रंग ईसाइयों और केसरिया रंग को सिक्खों के साथ साथ सभी रंग हिन्दुओं के भी बताए। सबसे बेहतरीन वक्ता सरोजिनी नायडू ने भावुक भाषण में संवेदनाओं को झकझोरते कहा क्या इस्लाम भारत में बिरादराना भाव नहीं लाया है? क्या पारसी अग्नि देवालय से ईरान से दहकते लट्ठे लेकर अपना दृढ़ साहस नहीं लाए? क्या ईसाइयों ने गरीबों की सेवा करने का सबक हमें नहीं पढ़ाया? क्या सनातन हिन्दू धर्म ने इंसान को पूरी तौर पर प्रेम करना नहीं सिखाया? इसीलिए यह झंडा इतिहास, संस्कृति, धर्म और इंसानियत की सेवा का जज्बा अपने में समेटे हुए है।

यक्ष प्रश्न है कि राष्ट्रीयता की भावना सरकार की ओर से इंजेक्शन या बूस्टर डोज़ की तरह क्यों इंजेक्ट की जाए? क्या जनता में आजादी और गणतंत्र के पर्व को लेकर वैसी भावनात्मक उथलपुथल है जो धार्मिक त्यौहारों को लेकर अपने आप उफनती रहती है। लोग बुलाए जाने पर भी राष्ट्रीय पर्वों के जश्न में इकट्ठा नहीं होते बल्कि घर पर बैठकर टेलीविजन के कार्यक्रम देख लेते और छुट्टियां मना लेते हैं। उससे कहीं ज्यादा लोग 'इस्लाम खतरे में है' या 'हनुमान चालीसा' का जुलूस में पाठ करना है' या 'कांवड़ यात्रा निकालनी है' के उद्दाम में इकट्ठा हो जाते हैं। सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के बरक्स राजनीतिक राष्ट्रीयता अब भी भारत के लिए एक सपना है।

लाखों तिरंगे झंडे लग भी जाएं। तब भी आसमान में चीख चीखकर लोगों से यही पूछते रहेंगे कि क्या हमारा नसीब केवल हवा में उड़ते रहने से है? हमारे संदेश को धरती पर उतारकर मनुष्यों के आचरण में ढालने की कोई जरूरत महसूस होती भी है। हम केवल कपड़े या कागज का या अब पोलिएस्टर का टुकड़ा नहीं हैं। हमें रंगाई कारखाने का पात्र भी नहीं समझा जाए। हम भी अन्य मुल्कों के परचमों की तरह भारतीय कौम की विजय का इतिहास हैं। हिन्दुस्तानियों का हौसला हैं। गरीब भारतीय अवाम के जीवन का अब भी अधूरा सपना हैं। हम सरहदों पर सैनिकों की चुनौतियों का अहसास हैं। हम बेरोजगार नौजवानों की निराशाओं का मर्सिया भी गाते हैं। हमें सियासत के लोग सत्ता की कुर्सी पर काबिज रहने के लिए तिजारत की वस्तु और लाशों का कफन भी बनाते हैं। याद रहे जब तक हम देशवासियों की मजबूत मुट्ठियों में हम सम्मान के साथ रहेंगे। तब तक ही हमें इंसानियत का परचम समझा जाता रहेगा।

जन्म दिवस विशेष
छगन लाल लोन्हारे

साय ने राज्य में गढ़ा विकास का नया आयाम

छत्तीसगढ़ की खूबसूरत वादियों में स्थित जशपुर जिला के ग्राम बगिया में 21 फरवरी को जन्म लेने वाले मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय सज्जनता और सहृदयता की एक मिसाल है। दो वर्ष के अपने मुख्यमंत्रित्व काल में छत्तीसगढ़ राज्य में विकास का एक नया आयाम गढ़ने वाले तथा प्रदेश के नागरिकों के दिलों में राज करने वाले मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आज अपनी लोकप्रियता के शिखर पर विद्यमान है। विष्णुदेव साय जनता के बीच के एक ऐसे लोकप्रिय मुख्यमंत्री हैं जिनकी सदाशयता और दूरगामी योजनाओं से प्रदेश में विकास और प्रगति का राह आसान हुआ है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय आदिवासी पृष्ठभूमि से आते हैं। केबिनेट बैठक में राज्य में समर्थन मूल्य पर धान बेचने वाले किसानों को 3100 रूपए प्रति क्विंटल के मान से अंतर की राशि होली पर्व से पहले एकमुश्त भुगतान किए जाने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया है। खरीफ विपणन वर्ष 2025-26 में 25 लाख 24 हजार 339 किसानों से 141.04 लाख मीट्रिक टन धान की खरीदी की गई है। छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा कृषक उन्नति योजना के तहत धान के मूल्य के अंतर की राशि के रूप में लगभग 10 हजार करोड़ रुपए का भुगतान होली त्यौहार से पहले एकमुश्त किया जाएगा। मुख्यमंत्री स्वयं एक किसान पुत्र हैं वे किसानों की पीड़ा को भलीभांति जानते हैं।

छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा कृषक उन्नति योजना के तहत राज्य के किसानों से प्रति एकड़ 21 क्विंटल धान की खरीदी 3100 रुपए प्रति क्विंटल के मान से की की गई है, जो देश में सर्वाधिक है। बीते दो वर्षों में कृषक उन्नति योजना के तहत राज्य के किसानों को धान के मूल्य के अंतर के रूप में 25 हजार करोड़ रुपए से अधिक का

भुगतान किया जा चुका है। इस साल होली से पूर्व किसानों को 10 हजार करोड़ रुपए का भुगतान होने से यह राशि बढ़कर 35 हजार करोड़ रूपए हो जाएगी। किसान हितैशी सरकार के इस निर्णय से बाजार भी गुलजार होंगे, जिससे शहरी अर्थव्यवस्था पर सीधा असर दिखाई देगा, ट्रैक्टर आदि की बिक्री में वृद्धि होगी। प्रदेश की नवीन औद्योगिक नीति से राज्य में अब तक 7 लाख 83 हजार करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव प्राप्त हो चुके हैं। मुख्यमंत्री ने अपने दो साल के कार्यकाल में छत्तीसगढ़ को पूरे देश में एक नई ऊंचाई पर पहुंचाया है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रदेश की जनता के बीच जाकर जनता का न केवल विश्वास जीता है बल्कि उनके हित को ध्यान में रखकर उन्होंने ऐसी योजनाओं का क्रियान्वयन किया है जिससे छत्तीसगढ़ का समग्र विकास सम्भव हो पाया है। यह केवल और केवल विष्णुदेव साय जैसे एक संवेदनशील, कर्मठ तथा ऊर्जावान मुख्यमंत्री ही संभव कर सकते हैं। मुख्य मंत्री विष्णु देव की सुशासन में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है। वर्ष 2026 को महतारी गौरव वर्ष घोषित किया गया है। राज्य सरकार ने मातृशक्ति का सम्मान करते हुए 70 लाख महिलाओं को महतारी वंदन योजना के अंतर्गत प्रतिमाह 1000 रुपए की सहायता राशि प्रदान की जा रही है। प्रदेश के 42 हजार 878 महिला स्व- सहायता समूहों को आसान ऋण से अब तक 129.46 करोड़ रुपए का लाभ दिया गया है। प्रधानमंत्री मातृवंदना योजना के अंतर्गत 4.81 लाख महिलाओं को 237 करोड़ रुपए की सहायता राशि दी गई है। राज्य की 19 लाख से अधिक महिलाओं को पूरक पोषण आहार सुनिश्चित की गई है। महिला सुरक्षा के लिए सखी वन स्टॉप सेंटर और महिला हेल्पलाइन 181 की स्थापना की गई है। महिलाओं को रोजगार मूलक कार्यों के जरिए स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने के लिए पंचायत स्तर पर 52.20 करोड़ की लागत से 179 महतारी सदनों का निर्माण कराया जा रहा है। महिला समूहों के उत्पादों की बिक्री हेतु 200 करोड़ की लागत से नवा रायपुर में यूनिटी मॉल का निर्माण कराया जाएगा।

राज्य सरकार द्वारा आवास और सामाजिक सुरक्षा को ध्यान में रख कर अब तक 26 लाख परिवारों को प्रधानमंत्री आवास स्वीकृति किए गए हैं। स्वच्छ पेयजल सबका अधिकार है। प्रदेश के 41 लाख से अधिक घरों तक स्वच्छ पेयजल पहुंच रहा है। गुणवत्तापूर्ण जलापूर्ति के लिए राज्य में 77 जल परीक्षण प्रयोगशालाएं स्थापित की गई है। 70 समूह जल प्रदाय योजनाओं से प्रदेश के 3208 गांव लाभान्वित हो रहे हैं। इसके अलावा राज्य के शत-प्रतिशत गांवों का विद्युतीकरण किया जा रहा है। डबल इंजन की सरकार में रावघाट-जगदलपुर रेल परियोजना के साथ रेल नेटवर्क मैप से बस्तर जुड़ रहा है। जगदलपुर-विशाखापट्नम और रायपुर-विशाखापट्नम नई सड़क परियोजनाओं से विकास की नई राहें खुल रही है। प्रदेश के 32 नगरीय निकायों में नॉलेज बेस्ड सोसाइटी हेतु लाइट हाउस निर्माण की पहल की जा रही है।

उन्होंने प्रदेश के हर वर्ग की बुनियादी सुविधाओं और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए पीएम आवास योजना, कृषक उन्नति योजना, नियद नेल्ला नार, अखरा निर्माण योजना जैसी योजनाओं का शुभारम्भ किया है और जनता के बीच अपनी एक अलग छवि निर्मित की है। उन्होंने अपने जीवन का बहुमूल्य समय पदेश की जनता को समर्पित कर यह सिद्ध कर दिया है कि उनका जीवन केवल उनका नहीं है अपितु प्रदेश की जनता की निः स्वार्थ सेवा के लिए समर्पित है। वे सही मायने में एक ऐसे जननेता हैं जिनके लिए जनता ही सब कुछ हैं। ऐसे सेवाभावी और लोकप्रिय जनसेवक बहुत कम होते हैं जिनके लिए जनता का विकास और जनता का साथ ही सबसे महत्वपूर्ण होता है। मुख्यमंत्री श्री साय का अब तक का कार्यकाल इस बात का प्रमाण है कि यदि नेतृत्व ईमानदार, समर्पित और जनता की आकांक्षाओं से जुड़ा हो तो विकास की राह कठिन नहीं होगी।

-लेखक उप संचालक जनसंपर्क

हमारे विचार ही तय करते हैं जीवन की दिशा

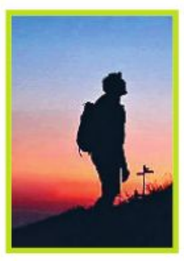

संकलित
दर्शन

मनुष्य के लिए आज का जीवन जितना सुविधाओं से भरा है, उतना ही बैचेनी, दुख और संताप से भरा हुआ है। जब परेशानियां घेर लेती हैं तब लगता है कि जीवन इतना आसान नहीं है, बहुत कठिन है और हम सभी संघर्ष कर रहे हैं। परिस्थितियां हमारे विचारों को प्रभावित करती रहती हैं। जब परिस्थितियां अपने अनुकूल नहीं होतीं, तो हर कार्य में बाधाएं उत्पन्न होने लगती हैं। ठीक इसी वक्त में हमें एक निराशा घेर लेती है। ऐसे में अगर धर्मग्रंथ गीता को सही ढंग से समझ लिया जाए, तो हर तरह की उलझनों से दूर हुआ जा सकता है। जब मन हारने लगता है तब गीता का ज्ञान आवश्यक हो जाता है। वही हमें सही मार्ग दिखाता है। जिसके माध्यम से भगवान श्री कृष्ण सद्गुरु के रूप में हमारे जीवन का मार्गदर्शन कर रहे हैं और उस जीवन दर्शन को समझने के बाद जीवन में कुछ भी समझने के लिए बाकी नहीं रह जाता है, अर्थात समस्त ज्ञान गीता में ही समाया हुआ है। गीता हमें जीवन जीने की शिक्षा देती है। जिस प्रकार से एक सिक्के के दो पहलू होते हैं, उसी प्रकार हमारे जीवन के भी दो चेहरे हैं- एक अच्छा, दूसरा बुरा। ये तो केवल समय की कश्मकश है, जो हमारी जिंदगी को एक आकार प्रदान करती है। अधिकतर लोग विश्वास करते हैं कि सुख बाहर है। हमें समझा दिया गया है कि नाम, संपन्नता और शक्ति बाहरी दुनिया में हासिल की जा सकती है। यह असत्य धारणा है, पर हमारा जीवन उसके सहारे ही चलता है। मनुष्य के जीवन में दुख-पीड़ा आना स्वाभाविक है। हमारे स्वयं के विचार ही जीवन की दिशा तय करते हैं।

समर्पित भक्त का वास वैकुन्ठ में

संकलित
प्रेरणा

एक ब्राह्मण था तथा महान भक्त था, वह मंदिर की पूजा में बहुत शानदार सेवा पेश करना चाहता था, लेकिन उसके पास धन नहीं था। एक दिन की बात है वह एक भागवत पाठ में बैठा हुआ था और उसने सुना कि नारायण मन में भी पूजे जा सकते हैं। उसने इस अवसर का लाभ उठाया क्योंकि वह एक लंबे समय से सोच रहा था कि कैसे बहुत शान से नारायण की पूजा करूं, लेकिन उसके पास धन नहीं था। जब वह यह समझ गया, कि मन के भीतर नारायण की पूजा कर सकते हैं। एक दिन वह गोदावरी नदी में स्नान करने के बाद एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ था। अपने मन के भीतर वह बहुत खूबसूरत सिंहासन का निर्माण कर रहा था, गहनों के साथ लदी और सिंहासन पर भगवान की मूर्ति को रखते हुए, वह भगवान का गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी नदी के जल के साथ अभिषेक कर रहा था। फिर बहुत ही उत्तम तरह से भगवान का श्रृंगार कर और फूल, माला के साथ पूजा करते हुए, वह मीठे चावल बहुत अच्छी तरह से भोजन के रूप में पका रहा था। वह परखना चाहता था कि भोजन भोग के लिए कहीं गरम तो नहीं हैं। तो ऐसा जानने के लिए उसने भोजन में अपनी उंगली डाली तो उसकी उँगली जल गई। तब उसका ध्यान टूटा क्योंकि वहाँ कुछ भी नहीं था। केवल अपने मन के भीतर वह सब कुछ कर रहा था। लेकिन उसने अपनी उंगली जली हुइ देखी। तो वह चकित रह गया। इस तरह, वैकुन्ठ से नारायण, मुस्कुरा रहे थे। देवी लक्ष्मीजी ने पूछा- आप क्यों मुस्कुरा रहे हैं ?

अंतर्मन

आज की पाती

रोजगार निगल जाएगी एआई तकनीक

कुछ समय पहले अमेरिका में मैकिन्से ग्लोबल इंस्टीच्यूट की एक रिपोर्ट में बताया गया है कि एआई अमेरिका में भी रोजगार पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकती है। इसमें बताया गया है कि वर्ष 2030 तक वहां बहुत से लोगों का रोजगार यह तकनीक छीन सकती है। पुरुषों से ज्यादा महिलाओं की नौकरी इस तकनीक से जा सकती है। कुछ लोग एआई (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) के अवसर में भी मौका ढूंढने के पक्ष में विचार रख रहे हैं। परिवर्तन प्रकृति का भी नियम है, लेकिन यह जरूरी नहीं कि कोई परिवर्तन हर किसी के लिए लाभदायक ही हो। यह ऐसी टैक्नोलॉजी है जो कंप्यूटर प्रोग्राम द्वारा बनाई जाती है और यह इनसान की तरह बहुत से काम भी कर सकती है। इस तकनीक का सबसे बड़ा नुकसान यह होगा कि यह रोजगार निगल जाएगी। – *प्रवीण उपाध्याय, भिलाई*

ट्रेंड

जीवंत ग्राम कार्यक्रम

पहले सीमावर्ती गांवों को न केवल उनकी भौगोलिक स्थिति बल्कि विकास में पिछड़ेपन के कारण भी अंतिम गांव कहा जाता था। लेकिन प्रधानमंत्री मोदी जी ने जीवंत ग्राम कार्यक्रम के तहत उन्हें हर सुविधा उपलब्ध कराकर उन्हें पहले गांवों में बदल दिया।
-अमित शाह, केंद्रीय गृह मंत्री

कांग्रेस ने शर्मसार किया

जब पूरा विश्व भारत के वैश्विक नेतृत्व, नवाचार और प्रौद्योगिकी दृष्टि की सराहना कर रहा है, तब राहुल गांधी और कांग्रेस एक बार फिर देश को शर्मसार करने की राजनीति में लिप्त दिखे, जिसमें सत्ता की भूख इतनी गहरी है कि राष्ट्रीय सम्मान भी दांव पर लगाने से इन्हें गुरेज नहीं है।
- धर्मेन्द्र प्रधान, केंद्रीय शिक्षा मंत्री

सिंगकॉन के निधन से दुःख

शिलांग से लोकसभा सांसद डॉ. रिकी ए.जे. सिंगकॉन के निधन से गहरा दुःख व्यक्त करते हैं। मेघालय की जनता और शिक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। उनके परिवार, मित्रों और समर्थकों के प्रति हमारी गहरी संवेदनाएं।
- मल्लिकार्जुन खरगे, अध्यक्ष, कांग्रेस

करुणापूर्ण कृत्रिम बुद्धिमत्ता

हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता की शक्ति के लिए एक बेहद प्रतिस्पर्धी दौड़ में हैं। हमें "नैतिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता" और "जिम्मेदार कृत्रिम बुद्धिमत्ता" से आगे बढ़कर "करुणापूर्ण कृत्रिम बुद्धिमत्ता" की ओर बढ़ना होगा।
-कैलाश सत्यार्थी, नोबेल शांति पुरस्कार विजेता

करंट अफेयर

पोलैंड रूस से लगती सीमा पर बिछाएगा बारूदी सुरंग

पोलैंड अपनी पूर्वी सीमा पर रूस के बढ़ते खतरे के मद्देनजर बारूदी सुरंग बिछाएगा। यह जानकारी देश के उप रक्षामंत्री पावेल जालेव्स्की ने शुक्रवार को को दी। पोलैंड विवादास्पद हथियारों के इस्तेमाल पर प्रतिबंध लगाने वाले अंतरराष्ट्रीय समझौते से आधिकारिक तौर पर अलग हो गया है। वर्ष 1997 में बारूदी सुरंग पर प्रतिबंध संबंधी संधि को मंजूरी दी गई थी, जिसे ओटावा संधि के नाम से भी जाना जाता है। यह संधि हस्ताक्षरकर्ताओं को बारूदी सुरंग रखने या बिछाने से रोकती है। कंबोडिया, अंगोला और बोस्निया और हर्जेगोविना सहित देशों के पूर्व संघर्ष क्षेत्रों में इन बारूदी सुरंगों की वजह से नागरिकों को हुई क्षति के मद्देनजर यह संधि अस्तित्व में आई। पोलैंड ने 2012 में इसकी पुष्टि की थी और 2016 में अपने सभी बारूदी सुरंग नष्ट कर दिये थे। हालांकि शुक्रवार को उसने संधि से हटने की घोषणा करते हुए कहा कि वह इन हथियारों का निर्माण फिर से शुरू करने की योजना बना रहा है। जालेव्स्की ने एसोसिएटेड प्रेस को बताया, 'ये बारूदी सुरंग नाटो (उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन) के पूर्वी हिस्से में, पोलैंड के उत्तर में रूस के साथ और पूर्व में बेलारूस के साथ लगती सीमा पर लगाई जाएंगी।

ऑफ बीट

मानव जैसे घरेलू रोबोट अब बाजार में, बदलेगा जीवन

पिछले वर्ष नॉर्वे-अमेरिका की प्रौद्योगिकी कंपनी वनएक्स ने एक अनोखे उत्पाद की घोषणा की- 'दुनिया का पहला मानवनुमा रोबोट, जो घरेलू जीवन को बदलने के लिए बनाया गया है।' कुल 168 सेंटीमीटर लंबा और 30 किलोग्राम वजनी 'नियो' नामक इस रोबोट की कीमत लगभग 20,000 अमेरिकी डॉलर है और यह कपड़े तह करने और बर्तन धोने जैसी घरेलू गतिविधियों को स्वचालित ढंग से करने का दावा करता है। नियो में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) प्रणाली अंतर्निहित है, लेकिन जटिल कार्यों के लिए कंपनी का एक कर्मचारी वर्चुअल रियलिटी हेलमेट पहनकर उसे दूरस्थ रूप से नियंत्रित करता है। इस दौरान ऑपरेटर घर के भीतर, रोबोट जो भी देखता है, उसे देख सकता है और यह प्रक्रिया भविष्य में सीखने के लिए रिकॉर्ड भी की जाती है। विशेषज्ञों का कहना है कि इस वर्ष अन्य घरेलू मानवनुमा रोबोट भी बाजार में आ सकते हैं। हालांकि, नियो उन चुनौतियों को उजागर करता है जो हालिया एआई उछाल में देखने को मिली हैं- भारी प्रचार के साथ सीमित क्षमताओं वाले उत्पाद, गोपनीयता से जुड़े छिपे जोखिम और पर्दे के पीछे काम कर रहे अदृश्य दूरस्थ कर्मचारी। मानव जैसी मशीनों की कल्पना प्राचीन मिथकों से जुड़ी रही है, लेकिन उन्हें व्यावहारिक उपभोक्ता उत्पाद के रूप में देखना अपेक्षाकृत नया विचार है।

अपने विचार

हरिभूमि कार्यालय

टिकरापारा, रायपुर में पत्र के माध्यम से या फैक्स : 0771-4242222, 23 पर या सीधे मेल से hbcgpati@gmail.com पर भेज सकते हैं।

बंगाल में आगामी चुनाव पर सियासी हलचल तेज

सत्ताधारी टीएमसी ने प्रत्याशियों को चुनने की शुरुआती प्रक्रिया शुरू की, 'कुछ बड़े' सदस्यों के चुनावी क्षेत्रों में फेरबदल होगा

एजेंसी ▶▶ कोलकाता

पश्चिम बंगाल में इस साल होने वाले विधानसभा चुनावों को लेकर सियासी हलचल तेज हो गई है। राज्य की सत्ताधारी पार्टी तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) ने उम्मीदवारों को चुनने की शुरुआती प्रक्रिया शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि पार्टी नेतृत्व इस बार कई बड़े फैसले ले सकती है। इसके तहत राज्य मंत्रिमंडल के कुछ बड़े सदस्यों और पार्टी के अनुभवी विधायकों के चुनाव क्षेत्रों में बदलाव किया जा सकता है। इस बीच सियासी रणनीतिकारों का मामना है कि मुख्यमंत्री ममता को भाजपा से कड़ी टक्कर मिल सकती है। इसी के मद्देनजर सीएम ममता राजनीतिक सर्जरी में जुट गई है।

अनुभवी चेहरों की सीटें बदलेंगी सीएम ममता

बुधवार - गुरुवार को 2 दिवसीय बैठक भी कर चुकी

विधायकों के टिकट कटने और सीट बदलने पर मंथन

सीएम ममता बेनर्जी की सांसदों के साथ बैठक

ममता के आवास पर हुई अहम बैठकें

कालीघाट स्थित सीएम ममता बनर्जी के आवास पर बुधवार और गुरुवार को दो दौर की अहम बैठकें हुईं। इसमें पार्टी के शीर्ष नेताओं ने हिस्सा लिया। आगामी चुनावों के लिए संभावित उम्मीदवारों के चयन पर प्रारंभिक चर्चा हुई।

बैठक में विचार किया गया कि मंत्रियों और अनुभवी विधायकों को इस बार नई सीटों से चुनाव लड़ाया जाए। कुछ मौजूदा विधायकों को दोबारा टिकट न देने पर भी बात हुई। ऐसे विधायकों को संगठन के काम में लगाया जाएगा। नेतृत्व का पूरा जोर इस बात पर है कि उम्मीदवारों की सूची में पुराने दिग्गजों और नए चेहरों के बीच एक सही संतुलन बनाया जाए।

राज्यसभा चुनाव की रणनीति भी तैयार

बंगाल से 16 मार्च को होने वाले 5 राज्यसभा सीटों के चुनाव के लिए उम्मीदवारों के चयन पर भी चर्चा शुरू हो गई है। टीएमसी कम से कम 4 सीटें जीतने की तैयारी में है, जबकि भाजपा को एक सीट से ही संतोष करना पड़ेगा। तीन सीटें पार्टी के नेताओं की होंगी, जबकि एक गैर-राजनीतिक चेहरा होगा।

गोखले के नाम पर संशय

फिलहाल टीएमसी के राज्यसभा सांसदों में साकेत गोखले, ऋतब्रत बेनर्जी और सुब्रत बख्शी शामिल हैं। वहीं मौसम बेनजीर नूर पहले ही इस्तीफा देकर कांग्रेस में लौट चुकी हैं, जिससे एक सीट खाली है। सूत्रों का कहना है कि इस बार चारों सीटों पर बदलाव संभव है। सबसे बड़ी चर्चा एक वरिष्ठ पत्रकार को राज्यसभा भेजे जाने को लेकर है। साकेत गोखले को दोबारा मौका मिलने की संभावना कम है।

ऋतब्रत विधानसभा में उतरेंगे

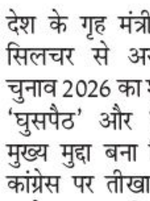

ऋतब्रत बेनर्जी को लेकर संकेत हैं कि उन्हें विधानसभा चुनाव में उम्मीदवार बनाया जा सकता है। मौसुम नूर की सीट पर किसी अल्पसंख्यक महिला को मौका दिए जाने की संभावना जताई जा रही है।

सुब्रत पर फैसला ममता करेंगी

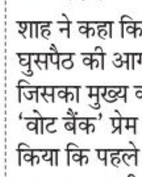

वरिष्ठ नेता सुब्रत बक्शी के भविष्य पर अंतिम फैसला ममता लेंगी। विधानसभा चुनाव से पहले यह राज्यसभा चुनाव टीएमसी के लिए संगठनात्मक पुनर्संरचना और रणनीतिक संतुलन साधने का अहम अवसर है।

खबर संक्षेप

दिल्ली-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर का उद्घाटन कल

नई दिल्ली। बहुप्रतीक्षित दिल्ली-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर का उद्घाटन जल्द होने जा रहा है।

फिलहाल कुल 82.15 किलोमीटर लंबे कॉरिडोर में से 55 किलोमीटर का हिस्सा न्यू अशोक नगर से मेरठ साउथ तक चालू है। घोषणा की है कि बाकी हिस्से का उद्घाटन 22 फरवरी को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा किया जाएगा। इससे समय की बचत होगी।

कोचिंग सेंटर में आग 90 छात्र बाल-बाल बचे

हैदराबाद। हैदराबाद में शुक्रवार सुबह एक कोचिंग सेंटर में आग लग गई। यह अमीरपेट स्थित

मैत्रीवनम नाम के एक अपार्टमेंट में आग लगी, इस दौरान कुछ छात्र अंदर फंस गए थे, लेकिन दो दमकल गाड़ियां और बचाव दल मौके पर पहुंचे और छात्रों को सुरक्षित बाहर निकाला। फिलहाल, आग पर काबू पा लिया गया।

गैंगरेप के दोषियों को सुनाई फांसी की सजा

दौसा। महिला से गैंगरेप और फिर उसकी निर्मम हत्या के बहुचर्चित मामले में अदालत ने कड़ा फैसला सुनाया है। इस मामले में दोनों दोषियों को फांसी की सजा सुनाई गई है। अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश ऋतु चौधरी ने शुक्रवार को सजा सुनाई।

पश्चिम बंगाल एसआईआर विवाद में सुप्रीम कोर्ट ने दिखाई सख्ती

हाईकोर्ट से न्यायिक अधिकारियों की तैनाती का निर्देश, साथ ही समन्वय भी सुनिश्चित किया जाए

पर्याप्त 'ए' श्रेणी के अधिकारियों की नियुक्ति नहीं की

एजेंसी ▶▶ नई दिल्ली

पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव से पहले मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर विवाद बढ़ता ही जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने राज्य में निर्वाचन आयोग की तरफ से कराए जा रहे एसआईआर)को लेकर उपजे विवाद के मामले में सुनवाई की। कोर्ट ने सख्त रुख अपनाते हुए कलकत्ता हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस को कई अहम निर्देश दिए। अदालत ने कहा कि एसआईआर के काम में लगाए गए सीजेएम को हटाकर पुराने जजों को तलाशें।

सुप्रीम कोर्ट की पीठ ने हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश से कहा कि न्यायिक अधिकारियों को राहत दें और बंगाल में एसआईआर के काम में सहायता के लिए पूर्व न्यायाधीशों को नियुक्त करने की दिशा में काम करें। सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने बंगाल सरकार द्वारा मतदाता सूची के विशेष गहन संशोधन के लिए पर्याप्त 'ए' श्रेणी के अधिकारियों की नियुक्ति न करने का भी संज्ञान लिया। एसआईआर में न्यायिक अधिकारियों को शामिल किया जाएगा। कोर्ट ने राज्य सरकार और चुनाव आयोग के बीच जारी गतिरोध को देखते हुए यह फैसला सुनाया। कोर्ट ने समन्वय कर आवश्यक सहयोग सुनिश्चित करने और अनुकूल कार्य वातावरण बनाने का निर्देश दिया।

प्रक्रिया पर गतिरोध दूर किया जाए

एसआईआर में लगाए गए सीजेएम को हटाकर पुराने जजों को तलाशें

नियमित सुनवाई पर असर की आशंका

कोर्ट ने कहा कि बंगाल में असाधारण हालात के मद्देनजर यह कदम उठाया गया है। इस निर्देश से नियमित अदालतों में मामलों की सुनवाई प्रभावित हो सकती है, समय एसआईआर प्रक्रिया में लगेगा।

याचिका पर सुनवाई और पक्षकारों की दलीलें

सीएम ममता बेनर्जी की ओर से दाखिल याचिका पर मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस विपुल एम. पंचोली की पीठ ने सुनवाई की। राज्य की ओर से कपिल सिब्बल ने पैरवी की।

राज्य सरकार के रवैए पर नाराजगी

सुप्रीम कोर्ट ने राज्य सरकार के रुख पर नाराजगी जताते हुए कहा कि वह ईआरओ-एईआरओ के लिए योग्य अधिकारियों की व्यवस्था करने में विफल रही है।

भड़काऊ बयानों पर सख्त टिप्पणी

कोर्ट ने भड़काऊ और धमकी भरे भाषणों के मामलों पर भी कड़ी टिप्पणी की। मुख्य न्यायाधीश ने कहा कि दुर्भाग्य से ऐसे बयान अक्सर चुनाव के दौरान दिए जाते हैं और आरोप-प्रत्यारोप का माहौल दो संवैधानिक संस्थाओं- चुनाव आयोग और राज्य सरकार- के बीच भरोसे की कमी दर्शाता है। डीजीपी से हलफना मामांगा। अगली सुनवाई मार्च में होगी।

कोर्ट ने ये निर्देश दिए

- दावे और आपत्तियों का फैसला अब सेवारत और पूर्व न्यायिक अधिकारी करेंगे।
- सीजेएम को हटाकर अन्य उपयुक्त न्यायिक अधिकारियों/पूर्व जजों को लगाया जाए।
- बंगाल सरकार द्वारा पर्याप्त 'ए' श्रेणी के अधिकारियों को तैनात न करने पर गंभीर नाराजगी जताई।
- चुनाव आयोग को 28 फरवरी को बंगाल की ड्राफ्ट मतदाता सूची प्रकाशित करने की अनुमति दी है।
- जरूरत पड़ने पर बाद में पूरक (सप्लीमेंट्री) सूची भी जारी की जा सकती है।
- प्रशासन एसआईआर प्रक्रिया में लगे न्यायिक अधिकारियों को लॉजिस्टिक सहायता और सुरक्षा प्रदान करे।
- न्यायिक अधिकारियों की मदद के लिए माइक्रो ऑब्जर्वर और राज्य सरकार के अधिकारी भी तैनात रहेंगे।
- मुख्य न्यायाधीश अधिकारियों के साथ एक बैठक करें, ताकि पूरी प्रक्रिया सुचारु रूप से चल सके।
- अदालत का आदेश माना जाए और जिला प्रशासन व पुलिस को उनका पालन करना होगा।

दुबई में बेटे की मौत और मां की गुहार

प्रवासी मजदूर की मौत पर केंद्र से जवाब तलब

दुबई में मजदूरी करने गए बेटे की मौत के बाद उसकी पार्थिव देह भारत लाने की मांग को लेकर एक मां ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार समेत अन्य पक्षों से जवाब मांगा है। अदालत ने नोटिस जारी किया और अगली तारीख 16 मार्च तय की है। मां ने अपने बेटे के अंतिम संस्कार के लिए उसकी देह भारत लाने की अनुमति मांगी है।

बाबरी नाम पर मस्जिद निर्माण रोकने की मांग ठुकराई, दलील भी खारिज

सुप्रीम कोर्ट ने बाबर के नाम पर किसी भी मस्जिद के बनने या उसका नाम रखने पर रोक लगाने की मांग वाली याचिका को खारिज कर दिया। कोर्ट ने इस दलील को भी खारिज कर दिया कि ऐसी संरचनाएं एक 'क्रूर हमलावर' का सम्मान करती हैं। सुप्रीम कोर्ट के जस्टिस विक्रम नाथ और संदीप मेहता की बेंच ने शुक्रवार को एक थोड़ी देर सुनवाई के बाद याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया।

सिलचर में गृहमंत्री शाह की हुंकार

तीसरी बार सरकार बनाइए, हम एक-एक घुसपैठिए को निकालेंगे

सिलचर से असम विधानसभा चुनाव का शंखनाद किया

सीएम हिमंता सरमा ने गृह मंत्री अमित शाह किया स्वागत

एजेंसी ▶▶ सिलचर

देश के गृह मंत्री अमित शाह ने सिलचर से असम विधानसभा चुनाव 2026 का शंखनाद करते हुए 'घुसपैठ' और 'अतिक्रमण' को मुख्य मुद्दा बना दिया है। शाह ने कांग्रेस पर तीखा प्रहार करते हुए आरोप लगाया कि पिछली सरकारों की ढुलमुल नीतियों के कारण सीमाएं सुरक्षित नहीं थीं, जिससे घुसपैठियों ने असम के युवाओं के रोजगार और गरीबों के राशन पर डाका डाला।उन्होंने मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा के कार्यकाल में हुई कार्रवाई की सराहना करते हुए स्पष्ट किया कि भाजपा का 'तीसरा कार्यकाल' भी होगा।

घुसपैठ की आग कांग्रेस ने फैलाई, इन्हें वोट बैंक बनाया

शाह ने कहा कि असम दशकों तक घुसपैठ की आग में झुलसा है, जिसका मुख्य कारण कांग्रेस का 'वोट बैंक' प्रेम था। उन्होंने दावा किया कि पहले की सरकारों ने जानबूझकर सीमाएं खुली छोड़ीं, जिससे अवैध प्रवासियों ने राज्य की जनसांख्यिकी को बदल दिया। शाह ने भरोसा दिलाया कि मोदी सरकार ने पिछले दस वर्षों में सीमाओं पर निगरानी को अभेद्य बनाया है। यदि जनता तीसरी बार आशीर्वाद देती है, तो तकनीक और सख्त कानून के जरिए हर एक घुसपैठिए को वापस भेजा जाएगा।

सरमा सरकार को सराहा

लाखों एकड़ भूमि को अतिक्रमण से मुक्त कराया

शाह ने मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा की 'एक्शन मोड' वाली कार्यशैली की तारीफ करते हुए कहा कि सरकार ने लाखों एकड़ सरकारी और वन भूमि को अवैध कब्जे से मुक्त कराया है। उन्होंने आरोप लगाया कि यह जमीन घुसपैठियों के कब्जे में थी, जिसे अब असम के वास्तविक हकदारों को लौटाया जा रहा है। शाह ने दो टूक शब्दों में कहा कि असम की पवित्र भूमि पर किसी भी अवैध कब्जे को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। कछार जिले में शाह ने यह भी आरोप लगाया कि कांग्रेस ने राज्य में अपने शासनकाल के दौरान कोई विकास कार्यक्रम शुरू नहीं किया। अब प्रतिदिन 14 किलोमीटर सड़क का निर्माण हो रहा है, जो देश में सबसे अधिक है।

राज्य में ध्रुवीकरण की राजनीति छोड़ रिपोर्ट कार्ड पेश करें असम के मुख्यमंत्री सरमा: प्रियंका गांधी

हरिभूमि ब्यूरो ▶▶ नई दिल्ली

कांग्रेस महासचिव और वायनाड से सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने असम सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए आरोप लगाया कि राज्य की संपत्ति को लूटा जा रहा है और इसे बड़े उद्योगपतियों तथा 'एक विशेष परिवार' को सौंपा जा रहा है। उन्होंने कहा कि असम के मुख्यमंत्री जनता को बांटने और ध्रुवीकरण की राजनीति में लगे हैं, जबकि उन्हें पिछले पांच वर्षों का अपना रिपोर्ट कार्ड पेश करना चाहिए।

दो दिवसीय असम दौरे के समापन पर पत्रकारों से बातचीत में प्रियंका वाड्रा ने कहा कि मुख्यमंत्री को यह बताना चाहिए कि उन्होंने अपने कार्यकाल में राज्य के लिए क्या किया और आगे क्या करने जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सकारात्मक और रचनात्मक राजनीति के लिए प्रतिबद्ध है, जिसका उद्देश्य असम की संस्कृति, पहचान और परंपराओं की रक्षा करना है। इसके विपरीत, अन्य दल नफरत, ध्रुवीकरण और व्यक्तिगत हमलों की राजनीति कर रहे हैं।

लोकप्रिय असमिया गायक जुबीन गर्ग के निधन पर पूछे गए प्रश्न के उत्तर में उन्होंने कहा कि यह एक भावनात्मक मुद्दा है और इसका राजनीतिकरण नहीं किया जाना चाहिए। प्रियंका गांधी ने जूबीन गर्ग को 'असम की आत्मा की आवाज' बताते हुए कहा कि उन्होंने प्रेम, सद्भाव, संस्कृति और पहचान के लिए गाया और वे राजनीति से ऊपर थे। उन्होंने कहा कि उन्हें श्रद्धांजलि देना उनके लिए भी भावुक क्षण था।

कांग्रेस महासचिव ने आरोप लगाया कि असम में रोजाना 'हिंसक और आक्रामक बयानबाजी' हो रही है, जो राज्य की संस्कृति और परंपराओं के खिलाफ है। उन्होंने कहा, 'यह हमारी संस्कृति नहीं है। जूबीन एकता और सद्भाव के प्रतीक थे।'

उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि राज्य के कुछ नेता ओछी राजनीति कर रहे हैं और कांग्रेस नेता गौरव गोगोई तथा उनके परिवार को बेबुनियाद आरोपों के जरिए निशाना बनाया जा रहा है। प्रियंका वाड्रा ने दावा किया कि उनके राजनीतिक विरोधी उनसे डरते हैं, इसलिए उन पर हमला किया जा रहा है।

उत्तर प्रदेश में राहुल गांधी के एक अदालती मामले में पेशी को लेकर पूछे गए सवाल पर उन्होंने कहा कि प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और आयकर विभाग जैसी एजेंसियों की कार्रवाई लंबे समय से हो रही है। 'हमारे लिए ईडी और आईटी के मामले सम्मान का बैज जैसे हैं,' उन्होंने टिप्पणी की।

प्रियंका वाड्रा ने कहा कि असम के युवा रोजगार और विकास चाहते हैं। उन्होंने विश्वास जताया कि जनता प्रचार के झांसे में नहीं आएगी और रचनात्मक तथा सकारात्मक राजनीति को चुनेगी। उन्होंने मुख्यमंत्री से अपील की कि वे विभाजनकारी राजनीति छोड़कर राज्य के विकास पर ध्यान केंद्रित करें और जनता के सामने अपना स्पष्ट रिपोर्ट कार्ड रखें।

कुंद्रा को बिटकॉइन मामले में जमानत

नई दिल्ली। बिजनेसमैन से एक्टर बने राज कुंद्रा को शुक्रवार को 150 करोड़ रुपए के बिटकॉइन स्कैम मामले में जमानत मिल गई है। पीएमएलए के तहत विशेष न्यायालय ने राज कुंद्रा को शुक्रवार को जमानत दे दी है।

बॉलीवुड डायरेक्टर भट्ट को जमानत

उदयपुर। 30 करोड़ से अधिक की धोखाधड़ी के मामले में

फिल्म निर्देशक विक्रम भट्ट और उनकी पत्नी श्वेतांबरी को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। विक्रम भट्ट और उनकी पत्नी श्वेताम्बरी भट्ट को कोर्ट ने नियमित जमानत दे दी है और साथ ही दोनों पक्षों को मध्यस्थता के जरिए मामले को सुलझाने की सलाह दी है।

हरियाणा सरकार — **निविदा सूचना**

क्र. सं.	बोर्ड/निगम/प्राधि. का नाम	कार्य सूचना निविदा का नाम	खुलने की तिथि बंद होने की तिथि (समय)	राशि/ईएमडी (लगभग) रु.में	बोर्ड/निगम/प्राधि. की वेबसाइट	नोडल अधिकारी / सम्पर्क विवरण/ ई-मेल
1	नगर निगम रोहतक	एम.सी. रोहतक में दिल्ली बाईपास, शीला बाईपास, पावर हाउस, आई.सी. कॉलेज, डी-पार्क, मेडिकल मोड़ और जीन्द बाईपास चौक पर रेन शेल्टर का निर्माण (पुनः आमंत्रण) + 1 कार्य।	19.02.2026 26.02.2026	रु. 76.08 लाख	https://etenders.hry.nic.in	9467717422 xenmcrohtak@gmail.com
2	नगर निगम रोहतक	एम.सी. रोहतक की सीमाओं में वार्ड-12 में सेक्टर-1 में सीसी गली का निर्माण।	19.02.2026 02.03.2026	रु. 70.88 लाख	https://etenders.hry.nic.in	9467717422 xenmcrohtak@gmail.com
3	नगर निगम रोहतक	आर्य नगर में गुरूकिरपा फोटोस्टेट के मकान और मिगलानी के मकान 692/25 के निकट धनवंतरी स्कूल के सामने सीसी गली सुषमा बंसल के मकान, तरूण गर्ग के मकान, विरेन्द्र अरोड़ा, नीलम बेरी के मकान के निकट गली, आर्य नगर वार्ड 17 एम.सी.आर. में खुराना के मकान 1043/19 के निकट सुनील सचदेवा के मकान 1008/19 के निकट गली, शिव मंदिर के निकट, रामफूल में पंडित लोकेश शर्मा के मकान के निकट गली, महताब बिल्डिंग में गली, वैश्य गर्ल्ज कॉलेज गली, अरविन्द पाहवा के मकान, गली नं. 3 में दिनेश हुरिया के मकान के निकट गली का निर्माण।	19.02.2026 26.02.2026	रु. 69.23 लाख	https://etenders.hry.nic.in	9467717422 xenmcrohtak@gmail.com

अधिक जानकारी हेतु कृपया पधारें : www.haryanaeprocurement.gov.in or www.etenders.hry.nic.in
संवाद-13/2026/80/43204/1/88/7 दि. 20.02.26

अभियुक्त व्यक्तियों की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

धारा 84 भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त (1) **अतुल** पुत्र राजेश निवासी ग्राम कुलासी, हरियाणा, (2) **नीरज उर्फ निरज कुमार** पुत्र स्वर्गीय श्री राजेश निवासी ग्राम कुलासी, हरियाणा, (3) **लक्ष्य डांगी** पुत्र स्वर्गीय श्री संदीप निवासी मकान नंबर-229, छोटा स्टैंड के पास, कंझावला चौक, दिल्ली ने **प्रथम सूचना रिपोर्ट सं. 04/2026 धारा 308(4)/125 भारतीय न्याय संहिता एवं 25/27 शस्त्र अधिनियम थाना बेगमपुर, दिल्ली** के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उन्होंने किया है) और उन पर जारी किए गए गिरफ्तारी वारण्ट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि (1) **अतुल** (2) **नीरज उर्फ निरज कुमार** (3) **लक्ष्य डांगी** मिल नहीं रहे हैं, और मुझे समाधान प्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि (1) **अतुल** (2) **नीरज उर्फ निरज कुमार** (3) **लक्ष्य डांगी** फरार हो गए हैं (या उक्त वारण्ट की तामील से बचने के लिए अपने आपको छिपा रहे हैं)। इनके खिलाफ माननीय अदालत द्वारा धारा **84 भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता** की कार्यवाही जारी हो चुकी है। इसलिए इसके द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि **प्रथम सूचना रिपोर्ट सं. 04/2026 धारा 308(4)/125 भारतीय न्याय संहिता एवं 25/27 शस्त्र अधिनियम थाना बेगमपुर, दिल्ली** के उक्त **अभियुक्तों** (1) **अतुल** (2) **नीरज उर्फ निरज कुमार** (3) **लक्ष्य डांगी** से अपेक्षा की जाती है कि वे इस न्यायालय के समक्ष उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए **28.03.2026** को हाजिर हों।

आदेशानुसार: सुश्री अनुराधा जिंदल,
अतिरिक्त मुख्य न्यायिक न्यायाधीश,
उत्तर-पश्चिम न्यायालय संख्या-101, प्रथम तल,
रोहिणी कोर्ट, दिल्ली।

DP/2219/RD/2026

अभियुक्त व्यक्ति की हाजिरी की अपेक्षा करने वाली उद्घोषणा

धारा 82 Cr.P.C. देखिए

मेरे समक्ष परिवाद किया गया है कि अभियुक्त **सचिन आहूजा** पुत्र जोगिंदर आहूजा निवासी डी-3/89, टैगोर गार्डन, दिल्ली ने प्रथम सूचना रिपोर्ट सं. 1592/2014 धारा 420/34 भा.द.स., थाना राजौरी गार्डन, नई दिल्ली के अधीन दण्डनीय अपराध किया है (या संदेह है कि उसने किया है) और उस पर जारी किए गए गिरफ्तारी वारण्ट को यह लिख कर लौटा दिया गया है कि उक्त **सचिन आहूजा** मिल नहीं रहा है, और मुझे समाधान प्रद रूप में दर्शित कर दिया गया है कि उक्त **सचिन आहूजा** फरार हो गया है (या उक्त वारण्ट की तामील से बचने के लिए अपने आपको छिपा रहा है)। इसके खिलाफ माननीय अदालत द्वारा धारा 82 Cr.P.C. की कार्यवाही जारी हो चुकी है। इसलिए इसके द्वारा उदघोषणा की जाती है कि प्रथम सूचना रिपोर्ट सं. 1592/2014 धारा 420/34 भा.द.स., थाना राजौरी गार्डन, नई दिल्ली के उक्त अभियुक्त **सचिन आहूजा** से अपेक्षा की जाती है कि वह इस न्यायालय के समक्ष उक्त परिवाद का उत्तर देने के लिए **27.04.2026** को हाजिर हो।

आदेशानुसार: श्री शशांक नन्दन भट्ट,
न्यायिक दण्डाधिकारी प्रथम श्रेणी-02 (पश्चिम)
कमरा नं. 356, तीसरा तल,
तीस हजारी कोर्ट, दिल्ली

DP/2187/WD/2026

अभियोजित व्यक्ति की उपस्थिति के लिए
आवश्यक उद्घोषणा
(धारा 82 सीआर.पीसी देखें)

न्यायालय में : श्री मयंक गोयल, माननीय एसीजेएम-02-कम एसीजे, राउज एवेन्यू कोर्ट कॉम्प्लेक्स, कोर्ट रूम सं. 205

आरसी नं. : RC-0482022S0013
शाखा : सीबीआई/एससी-1
धारा : 170, 471, 419 आर/डब्ल्यू 511 आईपीसी के तहत
केस टाइटल : सीबीआई बनाम वंदना चौधरी

चूंकि मेरे समक्ष शिकायत की गई है कि आरोपी वंदना चौधरी, पुत्री पंचमणि चौधरी, निवासी एल3ए, गली नं. 7, विजय विहार, रोहिणी सेक्टर-4, नई दिल्ली और 16/25, गली नं. 13 देव नगर, करोल बाग, नई दिल्ली ने धारा 170, 471, 419 आरडब्ल्यू, 511 आईपीसी के तहत दंडनीय अपराध किया है (या करने का संदेह है) और इसके परिणामस्वरूप जारी गिरफ्तारी वारंट को इस आधार पर वापस कर दिया गया है कि उक्त आरोपी वंदना चौधरी नहीं मिल सकीं और चूंकि मेरी संतुष्टि के लिए यह दिखाया गया है कि उक्त आरोपी वंदना चौधरी फरार हो गई हैं (या उक्त वारंट की तामील से बचने के लिए स्वयं को छिपा रही है)।

एतद द्वारा उद्घोषणा की जाती है कि उक्त आरोपी वंदना चौधरी को 23.03.2026 तक उक्त शिकायत का उत्तर देने के लिए इस न्यायालय के समक्ष उपस्थित होना आवश्यक है।

CBC 32205/11/0116/2526